सम्पादक :—

श्री० रामरखसिंह सहगल

'भविष्य' का चन्दा

वार्षिक चन्दा ...	... ६) रु०
छः माही चन्दा	... ५) रु०
तिमाही चन्दा ...	... ३) रु०
एक प्रति का मूल्य	... ≡)

Annas Three Per Copy

भविष्य

सचित्र राष्ट्रीय साप्ताहिक

आध्यात्मिक स्वराज्य हमारा ध्येय, सत्य हमारा साधन और प्रेम हमारी प्रणाली है। जब तक इस पावन अनुष्ठान में हम अविचल हैं, तब तक हमें इसका भय नहीं, कि हमारे विरोधियों की संख्या और शक्ति कितनी है।

तार का पता :—

'भविष्य' इलाहाबाद

एक प्रार्थना

वार्षिक चन्दे अथवा फ़ी कॉपी के मूल्य में कुछ भी नुक़ताचीनी करने में पहिले मित्रों को 'भविष्य' में प्रकाशित अलभ्य सामग्री और उसके प्राप्त करने के असाधारण व्यय पर भी दृष्टिपात करना चाहिए !

वर्ष १, खण्ड २ | इलाहाबाद—वृहस्पतिवार ; २९ जनवरी, १९३१ | संख्या ६, पूर्ण संख्या १८

शोलापुर-काण्ड में फाँसी पाने वाले चार अभागे नवयुवक

सारे देश के विरोध करने पर भी जिन्हें यरवदा जेल में लटका दिया गया

नवयुवक-सङ्घ (Youth League) के नेता—श्री० जगन्नाथ शिन्धे
(आयु २३ वर्ष)

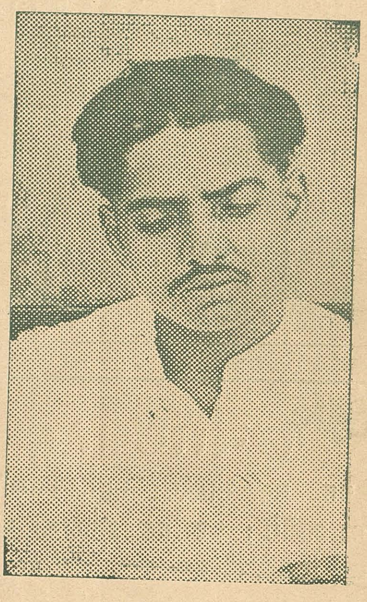

मज़दूर-दल के नवयुवक नेता—श्री० क़ुर्बान हुसेन
(आयु २२ वर्ष)

इस ग़ुलामी में हमें तो न ख़ुशी आई नज़र,
ख़ुश रहो अहले-वतन हम तो सफ़र करते हैं।

ये चार अभागे युवक शोलापुर मार्शल लॉ के दिनों में पुलिस कर्मचारियों की हत्या करने के सम्बन्ध में गिरफ़्तार किए गए थे। इनका मुक़दमा साधारण अदालतों में नहीं, वरन् फ़ौजी अदालत में चलाया गया था, जहाँ इनको फाँसी की सज़ा दी गई। हाई-कोर्ट में अपील करने पर दो में से एक जज ने इनमें से तीन को निर्दोषी ठहराया। मामला तीसरे जज के पास निरीक्षणार्थ भेजा गया था, पर उन्होंने फाँसी की सज़ा बहाल रक्खी।

बम्बई के गवर्नर तथा वायसराय के पास भारतवर्ष की सभी जातियों, सभी दलों की ओर से इन अभागों को प्राणदान देने की याचना की गई; पर फल वही हुआ, जिसकी आशा थी ! १२ जनवरी को यरवदा-मन्दिर में ये चारों अभागे नवयुवक लटका ही दिए गए !

फाँसी का समाचार देश के कोने-कोने में बिजली की भाँति फैल गया। अपमानित जनता ने उन्हें "शोलापुर के शहीदों" के नाम से पुकारा। जुलूस निकले, हड़तालें हुईं। पुलिस ने भी अपनी पाशविक शक्ति का पूर्ण परिचय दिया। इस कशमकश में कहा नहीं जाता कौन जीता, कौन हारा ? परन्तु इसके फल-स्वरूप चारों अमर अवश्य हो गए।

अपने देशवासियों के लिए इनका अन्तिम सन्देश यह था—"हम अज्ञात व्यक्ति थे, अन्धकार में छिपे हुए थे, किन्तु इस अनीतिपूर्ण प्राणदण्ड से हमें अमर-पद प्राप्त होगा। हमारे देश-भाइयों से कहना कि हम प्रसन्नता और निर्भयतापूर्वक मृत्यु को गले लगावेंगे। हम निर्दोष हैं, हमें इस बात का शोक नहीं है, कि हमें मरना पड़ रहा है। इस मृत्यु को हम बीस वर्ष तक जेल के सीकचों के अन्दर अपराधी-जीवन व्यतीत करने से श्रेयस्कर समझते हैं। यह परमात्मा की इच्छा है, कि हम काल के गाल में जायँ। और यदि हमारी मौतें सरकार के प्रति राष्ट्र के निश्चय को कुछ भी दृढ़ बनाएँगी, जिससे कि हमारे सदृश अनीतिपूर्ण मामलों का होना असम्भव हो जाय, तो हमारी मृत्यु व्यर्थ नहीं होगी।"

मारवाड़ी नेता—श्री० किशनलाल शारदा
(आयु २८ वर्ष)

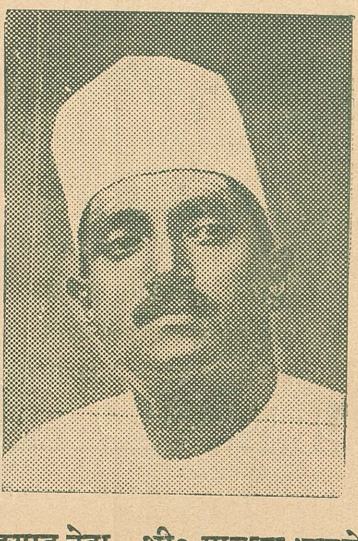

लिङ्गयात-नेता—श्री० माल्प्पा धानशेटी
(आयु २८ वर्ष)

छप गई ! प्रकाशित हो गई !!

व्यङ्ग-चित्रावली

इकरङ्गे, दुरङ्गे, और तिरङ्गे चित्रों की संख्या लगभग २०० है। छपाई-सफ़ाई दर्शनीय, फिर भी मूल्य

?

लागत मात्र केवल ४); स्थायी तथा 'चाँद' के ग्राहकों से ३) अब अधिक सोच-विचार न करके आज ही आँख मींचकर ऑर्डर दे डालिए !!

यह चित्रावली भारतीय समाज में प्रचलित वर्तमान कुरीतियों का जनाज़ा है। इसके प्रत्येक चित्र दिल पर चोट करने वाले हैं। चित्रों को देखते ही पश्चात्ताप एवं वेदना से हृदय तड़पने लगेगा; मनुष्यता की याद आने लगेगी; परम्परा से चली आई रूढ़ियों, पाखण्डों और अन्ध-विश्वासों को देख कर हृदय में क्रान्ति के विचार प्रबल हो उठेंगे; घण्टों तक विचार-सागर में आप डूब जायँगे। पछता-पछता कर आप सामाजिकसुधार करने को बाध्य होंगे !

प्रत्येक चित्रों के नीचे बहुत ही सुन्दर एवं मनोहर पद्यमय पंक्तियों में उनका भाव तथा परिचय अङ्कित किया गया है। इसके प्रकाशित होते ही समाज में हलचल मच गई। प्रशंसा-पत्रों एवं सम्मतियों का ढेर लग गया। अधिक प्रशंसा न कर हम केवल इतना ही कहना चाहते हैं कि ऐसी चित्रावली आज तक कहीं से प्रकाशित नहीं हुई। शीघ्रता कीजिए, नहीं तो पछताना पड़ेगा।

मालिका

यह वह मालिका नहीं, जिसके फूल मुरझा जायँगे; यह वह मालिका नहीं, जो दो-एक दिन में सूख जायगी; यह वह मालिका है, जिसकी ताज़गी सदैव बनी रहेगी। इसके फूलों की एक-एक पङ्खुरी में सौन्दर्य है, सौरभ है, मधु है, मदिरा है। आपकी आँखें तृप्त हो जायँगी, दिमाग़ ताज़ा हो जायगा, हृदय की प्यास बुझ जायगी, आप मस्ती में झूमने लगेंगे। इस संग्रह की प्रत्येक कहानी करुण-रस की उमड़ती हुई धारा है, तड़पते हुए दिल की जीती-जागती तसवीर है।

इन कहानियों में आप देखेंगे मनुष्यता का महत्व, प्रेम की महिमा, करुणा का प्रभाव, त्याग का सौन्दर्य तथा वासना का नृत्य, मनुष्य के नाना प्रकार के पाप, उसकी घृणा, क्रोध, द्वेष आदि भावनाओं का सजीव चित्रण ! पुस्तक की भाषा अत्यन्त सरल,मधुर, तथा मुहावरेदार है। शीघ्रता कीजिए, अन्यथा दूसरे संस्करण की राह देखनी होगी। सजिल्द, तिरङ्गे प्रोटेक्टिङ्ग कवर से सुशोभित; मूल्य केवल ४) स्थायी ग्राहकों से ३)

पाक-चन्द्रिका

इस पुस्तक में प्रत्येक प्रकार के अन्न तथा मसालों के गुण-अवगुण बतलाने के अलावा पाक-सम्बन्धी शायद ही कोई चीज़ ऐसी रह गई हो, जिसका सविस्तार वर्णन इस बृहत् पुस्तक में न दिया गया हो। प्रत्येक चीज़ के बनाने की विधि इतनी सविस्तार और सरल भाषा में दी गई है कि थोड़ी पढ़ी-लिखी कन्याएँ भी इनसे भरपूर लाभ उठा सकती हैं। चाहे जो पदार्थ बनाना हो, पुस्तक सामने रख कर आसानी से तैयार किया जा सकता है। प्रत्येक तरह के मसालों का अन्दाज़ साफ़ तौर से लिखा गया है। ८३६ प्रकार की खाद्य चीज़ों का बनाना सिखाने की यह अनोखी पुस्तक है। दाल, चावल, रोटी, पुलाव, मीठे और नमकीन चावल, पुलाव, भाँति-भाँति की स्वादिष्ट सब्ज़ियाँ, सब प्रकार की मिठाइयाँ, नमकीन, बङ्गला मिठाई, पकवान, सैकड़ों तरह की चटनी, अचार, रायते और मुरब्बे आदि बनाने की विधि इस पुस्तक में विस्तृत रूप से वर्णन की गई है। मूल्य ४) रु० स्थायी ग्राहकों से ३) रु० मात्र ! चौथा संस्करण प्रेस में है।

समाज की चिनगारियाँ

एक अनन्त अतीत-काल से समाज के मूल में अन्ध-परम्पराएँ, अन्धविश्वास, अविश्रान्त अत्याचार और कुप्रथाएँ, भीषण अग्निज्वालाएँ प्रज्वलित कर रही हैं और उनमें यह अभागा देश अपनी सद्भिलाषाओं, अपनी सत्कामनाओं, अपनी शक्तियों, अपने धर्म और अपनी सभ्यता की आहुतियाँ दे रहा है ! 'समाज की चिनगारियाँ' आपके समक्ष उसी दुर्दान्त दृश्य का एक धुँधला चित्र उपस्थित करने का प्रयास करती है। परन्तु यह धुँधला चित्र भी ऐसा दुखदायी है कि इसे देख कर आपके नेत्र आठ-आठ आँसू बहाए बिना न रहेंगे।

पुस्तक बिलकुल मौलिक है और उसका एक-एक शब्द सत्य को साक्षी करके लिखा गया है। भाषा इसकी ऐसी सरल, बामुहाविरा, सुललित तथा करुणा की रागिनी से परिपूर्ण है कि पढ़ते ही बनती है। कहने की आवश्यकता नहीं कि पुस्तक की छपाई-सफ़ाई नेत्र-रञ्जक एवं समस्त कपड़े की जिल्द दर्शनीय हुई है; फिर भी मूल्य केवल ३) रक्खा गया है। 'चाँद' तथा स्थायी ग्राहकों से २।) रु० !

व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

इस संस्था के प्रत्येक शुभचिन्तक और दूरदर्शी पाठक-पाठिकाओं से आशा की जाती है कि यथाशक्ति 'भविष्य' तथा 'चाँद' (हिन्दी अथवा उर्दू-संस्करण) का प्रचार कर, वे संस्था की और भी अधिक सेवा करने का अवसर प्रदान करेंगे !!

भविष्य

पाठकों को सदैव स्मरण रखना चाहिए कि इस संस्था के प्रकाशन विभाग द्वारा जो भी पुस्तकें प्रकाशित होती हैं, वे एक मात्र भारतीय परिवारों एवं व्यक्तिगत मङ्गल-कामना को दृष्टि में रख कर प्रकाशित की जाती हैं !!

वर्ष १, खण्ड २ | इलाहाबाद—बृहस्पतिवार—२९ जनवरी, १९३१ | संख्या ६, पूर्ण संख्या १८

कुन्दनपूर (लाहौर) में गश्ती पुलिस-कॉन्सटेबिल की हत्या

बिहार के १०,००० लोगों ने सशस्त्र पुलिस पर हमला किया !

मजिस्ट्रेट, दो दारोग़ा और ३२ सिपाही घायल :: जनता पर गोलियों की वर्षा

श्री० सुभाषचन्द्र बोस पर लाठी प्रहार :: वे फिर पकड़ लिए गए !!

श्री० हरिकृष्ण को फाँसी :: बम्बई में फिर लाठी चली

(२९ वीं जनवरी के प्रातःकाल तक आए हुए 'भविष्य' के ख़ास तार)

—कुन्दनपुर (लाहौर) ग्राम में, जबकि रामभरोस नामक एक पुलिस-कान्स्टेबिल अपनी वर्दी पहने हुए गश्त लगा रहा था, किसी अज्ञात व्यक्ति द्वारा मार डाला गया। हत्याकारी का अभी तक पता नहीं लग सका है।

—२६ जनवरी को अजमेर, कटनी, झरिया, शाहपुर, वर्धा, मालकपुर इत्यादि स्थानों में बड़ी धूम-धाम से स्वतन्त्रता-दिवस मनाया गया। सब जगह राष्ट्रीय झण्डाभिवादन हुआ। शाम को राष्ट्रीय झण्डों से सुसज्जित जुलूस निकाला गया और सभा की गई। सभा में लाहौर कॉङ्ग्रेस का "पूर्ण स्वाधीनता" वाला प्रस्ताव पढ़ा गया।

—बम्बई की २८वीं जनवरी की ख़बर है कि श्री० एस० के० पटेल तथा प्रोफ़ेसर जी० आर० घरपुरे १२४ वीं धारा के अनुसार आज सवेरे गिरफ़्तार किए गए। श्री० पटेल ११वीं जनवरी को मद्यमशुमारी बहिष्कार के सम्बन्ध में एक व्याख्यान देने के अभियोग में, तथा श्री० घरपुरे १ली जनवरी के अपने भाषण के सम्बन्ध में गिरफ़्तार किए गए हैं। दोनों २९वीं जनवरी तक हिरासत में रक्खे जायँगे।

—२८ जनवरी को नागपुर के बङ्गाल नागपूर-रेलवे में काम करने वाले मज़दूरों ने श्रीयुत गिरी अध्यक्षता में एक सभा की, जिसमें उन्होंने अब्दुल्लाभाई द्वारा असेम्बली में रक्खे हुए मज़दूरों के वेतन घटाने के प्रस्ताव का घोर विरोध किया और भारतीय सरकार को चेतावनी दी, कि वे इसे स्वीकार न करें ! इसी सभा में उन्होंने भारतीय सरकार से मेरठ-षड्यन्त्र के अभियुक्तों को रिहा करने के लिए अनुरोध किया और मौलाना मोहम्मद अली की मृत्यु पर शोक प्रकट किया गया।

—२८ तारीख़ को मद्रास में शिव स्वामी ऐय्यर की अध्यक्षता में सरवेन्ट्स ऑफ़ इण्डिया सोसाइटी का अधिवेशन हुआ। इसमें व्याख्यान देते हुए श्री० सी० पी० रमास्वामी ऐय्यर ने, जो कि गोलमेज़ परिषद के सदस्य थे, कहा कि कॉङ्ग्रेस को चाहिए कि वह गोलमेज़ परिषद को सफल बनाने की चेष्टा करे। गोलमेज़ परिषद ने बहुत कुछ दिखाया है; उसे चाहिए कि वह उसके शेष कार्य को पूर्ण करे और औपनिवेशि स्वराज्य प्राप्त करने के लिए आन्दोलन उठावे। उन्होंने कहा, कि मेरे मत में भारत को पूर्ण स्वतन्त्रता कभी भी प्राप्त नहीं हो सकती। इसलिए कॉङ्ग्रेस के नेताओं को चाहिए वे सब एक होकर औपनिवेशिक स्वराज्य के लिए लड़ें। इस समय एकता बहुत ज़रूरी है।

श्री० सुभाषचन्द्र बोस घायल और गिरफ़्तार

कलकत्ते का २६वीं जनवरी का समाचार है कि बङ्गाल प्रान्तीय कॉङ्ग्रेस कमिटी के अध्यक्ष तथा कलकत्ता कॉर्पोरेसन के मेयर श्री० सुभाषचन्द्र बोस, स्वतन्त्रता-दिवस के अवसर पर जुलूस के साथ जाते समय गिरफ़्तार कर लिए गए। कलकत्ते के कलेक्टर ने स्वतन्त्रता-दिवस के सम्बन्ध में किसी भी कार्यवाही में भाग न लेने के लिए आप पर नोटिस जारी किया था किन्तु उस आज्ञा की अवहेलना कर आप जुलूस में

कलकत्ता कॉरपोरेशन के मेयर—श्री० सुभाषचन्द्र बोस

शामिल हुए थे। पुलिस के घुड़सवार-दल ने जुलूस पर लाठियों का प्रहार किया। श्रीयुत बोस को तथा कुछ अन्य नेताओं को भी लाठी की चोट आई। श्रीयुत बोस को शिर में चोट आई है। यदि कुछ स्वयंसेवकों ने उनके ऊपर किए गए लाठी के प्रहार को अपने ऊपर न ले लिया होता तो, उन्हें गहरी चोट आती। कहा जाता है कि ५० से अधिक मनुष्य घायल हुए हैं। क़रीब ५० महिलाएँ तथा कुछ पुरुष स्वयंसेवक गिरफ़्तार किए गए। महिलाएँ पीछे छोड़ दी गईं।

—मसुली पट्टम के दो व्यक्तियों को जो कि स्वतन्त्रता-दिवस मनाने के अपराध में गिरफ़्तार किए गए थे २८ जनवरी को ३ मास का कठिन कारावास का दण्ड सुना दिया गया।

—बिहार-सरकार की एक सूचना से पता चलता है कि उत्तर मुङ्गेर में बेगूसराय नामक स्थान में २६वीं जनवरी को एक भीषण दङ्गा हो गया। कहा जाता है, कि स्वतन्त्रता-दिवस के जुलूस से कुछ नेताओं को गिरफ़्तार कर पुलिस लिए जा रही, इसी समय क़रीब दस हज़ार लोगों ने पुलिस पर आक्रमण किया। सब-डिविज़नल अफ़सर, दो सब-इन्स्पेक्टर, तथा ६ कॉन्स्टेबिलों को सिर में गहरी चोटें आईं, २६ अन्य पुलिस अफ़सरों को भी चोटें आईं। पुलिस ने फ़ायरें शुरू कीं, जिसके फल-स्वरूप ५ मनुष्य मरे तथा एक को ख़तरनाक चोट आई है। ७ अन्य मनुष्यों को हलकी चोटें आई है। वे अस्पताल में हैं। इसके अतिरिक्त भी कुछ लोगों को साधारण चोटें आई हैं।

—कराची का समाचार है कि गत सोमवार की रात को कॉङ्ग्रेस की कार्य-कारिणी समिति के सदस्य श्री० जयरामदास दौलतराम छोड़ दिए गए। फ़्री प्रेस के प्रतिनिधि से उन्होंने कहा है कि प्रधान मन्त्री के भाषण के सम्बन्ध में अपने विचार प्रकट करने से वे अभी असमर्थ हैं। किन्तु यदि भारत को आर्थिक और राजनैतिक स्वतन्त्रता न दी गई तो युद्ध जारी रहेगा, जब तक कि उद्देश्य सिद्ध न जाय।

—बम्बई का समाचार है वहाँ पिकेटिङ्ग जारी है। मेमन मुहल्ले में पिकेटिङ्ग के कारण फिर सनसनी फैल रही है। वहाँ क़रीब ६ पिकेटिङ्ग के विरोधियों ने, पिकेटिङ्ग करने वाले ८ स्वयंसेवकों को पीटा, जिसके फलस्वरूप एक को सख़्त चोट आई है औरों को हल्की चोट आई है। किन्तु तो भी पिकेटिङ्ग जारी रखी गई। पुलिस ने घटनास्थल पर पहुँच कर मनोरमा शिन्दे को गिरफ़्तार किया। इस विषय में सनसनी फैली हुई है।

—बम्बई का एक समाचार है कि, एक यहूदी व्यापारी ने पुलिस इन्सपेक्टर के पास यह शिकायत किया कि प्रिन्सेज़ स्ट्रीट पर कुछ स्वयंसेवक, उसे अपनी मोटर लॉरी पर विदेशी वस्त्र की गाँठों को नहीं रखने देते हैं। इस पर इन्सपेक्टर १० पुलिस के साथ घटनास्थल पर पहुँचे और लॉरी पर विदेशी वस्त्र लाद कर ले जाने में व्यापारी को उन्होंने सहायता पहुँचाई। स्वयंसेवकों ने माल लादने में बाधा पहुँचाई, और अन्त में वे लॉरी के सामने लेट गए। पुलिस ने स्वयंसेवकों को ऊपर उठा लिया। किन्तु फिर भी अन्य स्वयंसेवक लॉरी के सामने जा लेटे। इसी समय घटनास्थल पर भीड़ इकट्ठी हो गई। भीड़ पर लाठी का हल्का प्रहार किया गया। स्वयंसेवकों के कुछ चोटें आईं। वे गिरफ़्तार नहीं किए गए।

भविष्य

[वर्ष १, खण्ड २, संख्या ६

"शोलापुर-दिवस" की वेदी पर

श्रीयुत रामभागवत को, जिन्हें कि बम्बई के "शोलापुर-दिवस" के रोज़ पुलिस की ११ गोलियाँ लगी थीं, २१ जनवरी को स्वर्गवास हो गया !

—कानपूर ज़िले के अम्बापूर ग्राम के नेता श्रीयुत बाबूलाल को चार महीने की सख़्त सज़ा दी गई है। आपके १७ और साथियों को १ मास से ३ मास तक की सज़ा दी गई है।

—तारीख़ २१ जनवरी को कानपूर में श्रीयुत ज्ञानसिंह, हृदयनारायन तथा होरीलाल फूलबाग़ झण्डा-सत्याग्रह के अपराध में गिरफ़्तार किए गए।

—प्रसिद्ध नेपाली युवक खड्गबहादुरसिंह को दिल्ली में ९ मास की कड़ी सज़ा तथा २००) जुर्माना देने का हुक्म सुनाया गया है। जुर्माना न देने पर आपको डेढ़ मास की कड़ी सज़ा और भुगतनी पड़ेगी।

—लखनऊ के पण्डित जैदयाल की धर्मपत्नी श्रीमती कान्ति अवस्थी को २० जनवरी को ६ माह की सादी सज़ा तथा २००) रुपए का जुर्माना देने का हुक्म सुनाया गया है। जुर्माना न देने पर आपको १ मास की सज़ा और भुगतनी पड़ेगी। आप "बी" दर्जे में रक्खी गई हैं।

—कलकत्ते में २० जनवरी को बलवीरसिंह और सरदारसिंह को २०) रुपए का जुर्माना और जुर्माना न देने पर एक सप्ताह की सादी सज़ा का हुक्म सुनाया गया। ये महिला सत्याग्रहियों की गिरफ़्तारी के समय में राष्ट्रीय गान गाने तथा रास्ता रोकने के अपराध में गिरफ़्तार किए गए थे।

—दिल्ली के ११ कॉङ्ग्रेस स्वयंसेवक एक मोटर वाले की दूकान पर धरना तेने के अपराध में गिरफ़्तार किए गए। कहा जाता है कि यह दूकानदार एक शराब की दूकान का भी मालिक है।

—१९ जनवरी को बम्बई के छात्र-सङ्घ के दफ़्तर की पुलिस ने तलाशी ली और छात्र-सङ्घ के मन्त्री श्रीयुत यूसुफ़ को गिरफ़्तार किया।

—सीतापूर से ख़बर आई है कि १९ जनवरी को श्रीयुत अम्बिकाप्रसाद, श्रीयुत भगवानदीन, मल्लार, माधोसिंह तथा हेमसिंह को एक वर्ष की सादी सज़ा दी गई है।

श्रीयुत रामनाथ तथा श्रीयुत मूलचन्द को ६ महीने की सादी सज़ा दी गई है।

श्रीमती निरञ्जनी देवी नमक बनाने के अपराध में गिरफ़्तार की गई हैं।

—इलाहाबाद ज़िले के फूलपुर थाने के अन्तर्गत विरोली ग्राम में पण्डित केशवदेव मालवीय गिरफ़्तार किए गए। आप हाल ही में जेल से छूट कर आए थे।

—श्रीयुत पोचला, नागपुर सत्याग्रही सेना के सहायक सेनापति तथा श्रीयुत अभिमन्यु तथा ३ और स्वयंसेवक २० जनवरी को गिरफ़्तार किए गए। कहा जाता है, कि इन्होंने पुलिस के कुछ अधिकारियों को मारा है।

—आगरे से ख़बर आई है, कि २० जनवरी को कलकत्ते की कुमारी हन्तिदास को चार महीने की सादी सज़ा दी गई। आप "ए" दर्जे में रक्खी गई हैं।

आगरे की फ़तेहाबाद तहसील में लगानबन्दी के सम्बन्ध में १६ तारीख़ को ९ सत्याग्रही, १७ को १०, तारीख़ १८ को ५ और १९ को भी ५ सत्याग्रही गिरफ़्तार किए गए हैं।

—मर्दुमशुमारी का बहिष्कार करने के सम्बन्ध में अहमदाबाद की गुजरात नाई-सभा के मन्त्री श्रीयुत शिवराम शर्मा २२ जनवरी को गिरफ़्तार कर लिए गए।

—२१ जनवरी को सागर के प्रमुख कार्यकर्ता श्रीयुत प्रभाशङ्कर शास्त्री गिरफ़्तार किए गए

—रायबरेली से ख़बर आई है कि लगानबन्दी के आन्दोलन के सम्बन्ध में रायबरेली ज़िले में १५ दिन के अन्दर ५३ गिरफ़्तारियाँ हो चुकी हैं।

—बड़ा बाज़ार में धरना देने के सम्बन्ध में २२ जनवरी को कलकत्ते के सात स्वयंसेवक गिरफ़्तार किए गए हैं।

—नागपुर से ख़बर आई है, कि २२ जनवरी को श्रीयुत पन्धारी पाँडे प्रेज़िडेण्ट सी० पी० युद्ध-समिति, श्रीयुत गुप्ता मन्त्री तथा श्रीयुत सखाराम बामन जोशी सम्पादक 'कॉङ्ग्रेस बुलेटीन' गिरफ़्तार कर लिए गए हैं। श्रीयुत सखाराम वामन जोशी को ६ मास की कड़ी सज़ा तथा २००) रुपए जुर्माना देने का हुक्म सुनाया गया है।

—अलीगढ़ की कॉङ्ग्रेस कमिटी के मन्त्री श्रीयुत डॉक्टर जगदम्बाप्रसाद को १ साल की कड़ी सज़ा दी गई है। इसके अतिरिक्त श्रीयुत गोविन्दप्रसाद, मोहम्मद-अली, पन्नालाल तथा बचान को ६ मास की कड़ी सज़ा दी गई है। ५ और स्वयंसेवकों को ६ मास की कड़ी सज़ा का हुक्म सुनाया गया है

—२२ जनवरी को बम्बई की पुलिस ने बाज़ार गेट स्थित कॉङ्ग्रेस के दफ़्तर की तलाशी ली और १३ मनुष्यों को गिरफ़्तार किया।

—बम्बई युद्ध-समिति के मन्त्री श्रीयुत आबिद अली तथा स्वयंसेवकों के कप्तान श्रीयुत नारायन ऐय्यर को २२ जनवरी को ६ मास की कड़ी सज़ा तथा १५०) रुपए जुर्माना देने का हुक्म सुनाया गया है। जुर्माना न देने पर इनको ६ हफ़्ते की सज़ा और भुगतनी पड़ेगी।

—बम्बई की डेलिस्ली रोड की शराब की दूकानों पर धरना देने के अपराध में २२ जनवरी को ५ स्वयंसेवक गिरफ़्तार किए गए हैं।

—बङ्गाल युवक-सङ्घ के मन्त्री श्रीयुत शैलेन्द्रनाथ राय २३ जनवरी को कलकत्ते में गिरफ़्तार किए गए।

—बम्बई के प्रसिद्ध कॉङ्ग्रेस नेता श्री० जमनादास द्वारकादास २२ जनवरी को राजविद्रोह के अपराध में गिरफ़्तार किए गए। २३ जनवरी को आपका मुक़दमा हुआ, जिसमें आपको ९ माह की कड़ी सज़ा दी गई।

—इलाहाबाद के प्रसिद्ध कार्यकर्त्ता श्रीयुत वेङ्कटेशनारायण तिवारी को लगानबन्दी तथा कई अन्य अपराधों के सम्बन्ध में २३ जनवरी को एक साल की कड़ी सज़ा दी गई। सज़ा के साथ ही साथ आपको १००) जुर्माना देना पड़ेगा। जुर्माना न देने पर आपको दो महीने की कड़ी सज़ा और भुगतनी पड़ेगी।

—कलकत्ते से ख़बर आई है, कि २३ जनवरी को श्रीयुत कृष्णदास के मकान की तलाशी ली गई। आप महात्मा गाँधी के सेक्रेटरी रह चुके हैं। तलाशी के बाद रामसुन्दर सिंह नामक एक व्यक्ति गिरफ़्तार किए गए।

—अहमदाबाद से ख़बर आई है, कि २३ जनवरी को कैरा ज़िले के बोरसद ताल्लुक़ा ने "स्त्री-दिवस" मनाया। इस सम्बन्ध में बोरसद में कई गाँवों की महिलाएँ इकट्ठी हुईं। परन्तु पुलिस ने उन्हें सभा से हटा दिया और कैरा की डिक्टेटर श्रीमती भक्तिलक्ष्मी गोपालदास देसाई को गिरफ़्तार कर लिया।

—दिल्ली ज़िले के १०वें डिक्टेटर लाला रामकुमार को, २२ जनवरी को ६ महीने की कड़ी सज़ा दी गई।

—कराची के प्रसिद्ध कार्यकर्ता आचार्य पविन्नम् को ग़ैर-क़ानूनी जुलूस निकालने के अपराध में २३ जनवरी को १ साल की सादी सज़ा का हुक्म सुनाया गया है।

एक और कार्यकर्ता जगजीवन, जोकि कराची छात्र-सङ्घ के डिक्टेटर थे, २३ जनवरी को गिरफ़्तार किए गए।

—पेशावर से ख़बर आई है कि चारसद्दा के ३१ स्वयंसेवकों को, जो कि धरना देने के अपराध में गिरफ़्तार किए गए थे, २४ जनवरी को ३-३ मास की कड़ी सज़ा दी गई।

—मैनपुरी के प्रसिद्ध कार्यकर्ता श्रीयुत वंशीधर, ठाकुर लोचनसिंह, कुँवर गयासिंह तथा सेठ गोविन्दराम २० जनवरी को गिरफ़्तार किए गए।

—सहारनपुर से ख़बर आई है कि चौधरी मङ्गतसिंह के भतीजे श्रीयुत पृथ्वीसिंह लगानबन्दी के आन्दोलन के सम्बन्ध में गिरफ़्तार किए गए हैं। चौधरी साहब स्वतः इसी अपराध के लिए जेल भुगत रहे हैं।

—कानपूर से ख़बर आई है कि नवाबगञ्ज कॉङ्ग्रेस कमिटी के मन्त्री श्रीयुत गोकरन तथा रामऔतार लगानबन्दी के आन्दोलन के सम्बन्ध में गिरफ़्तार किए गए। एक और कार्यकर्ता उमाशङ्कर वाजपेयी भी २१ जनवरी को गिरफ़्तार किए गए हैं।

—मर्दुमशुमारी वहिष्कार सम्बन्धी नोटिस छापने के सम्बन्ध में कलकत्ते के बैजनाथ शुक्ल को चार महीने की सख़्त क़ैद का हुक्म सुनाया गया है।

—२२ जनवरी को दिल्ली में श्रीयुत मुन्शीसिंह का मुक़दमा हुआ। आपको दण्ड-विधान की १७ वीं धारा के अनुसार छः महीने की कड़ी सज़ा दी गई।

—सीमा-प्रान्त कॉङ्ग्रेस कमिटी के उप-सभापति सरदार अमरसिंह दण्ड-विधान की १७वीं धारा के अनुसार २२ जनवरी को पेशावर में गिरफ़्तार किए गए।

—उज्जैन के प्रमुख कार्यकर्ता श्रीयुत सरदारसिंह, उनकी धर्मपत्नी, श्रीमती सजनकुमारी तथा भतीजी श्रीमती बाई कलकत्ते में विदेशी वस्त्रों की दूकान पर धरना देने के अपराध में गिरफ़्तार किए गए।

—मुरादाबाद से ख़बर आई है कि संयुक्त प्रान्तीय कॉङ्ग्रेस कमिटी के मन्त्री श्रीयुत श्रीराम को, जो कि काशी-विद्यापीठ के आचार्य भी थे, २० जनवरी को छः महीने की कड़ी सज़ा दी गई।

—२० जनवरी को अमृतसर में श्रीयुत किशोरचन्द को जलियाँवाले बाग़ में एक राष्ट्रीय गान गाने के अपराध में दो मास की कड़ी सज़ा दी गई।

—२० जनवरी को मद्रास के ५ स्वयंसेवक तथा २ महिला स्वयंसेविकाओं को धरना देने के अपराध में ६ मास की सज़ा का हुक्म सुनाया गया। महिलाओं को सादी सज़ा दी गई है और शेष स्वयंसेवकों को सख़्त क़ैद भुगतनी पड़ेगी।

—इलाहाबाद ज़िले की सोराम तहसील के डिक्टेटर श्रीयुत शिवशङ्कर भार्गव, २० जनवरी को शिवगढ़ में गिरफ़्तार किए गए।

—दिनाजपूर (बङ्गाल) के पलीटोला कॉङ्ग्रेस-कमिटी के मन्त्री श्रीयुत विनयभूषण सरकार, २० जनवरी को गिरफ़्तार किए गए।

—अमृतसर में २० जनवरी को वहाँ के प्रमुख कार्यकर्ता श्रीयुत स्वामी गनेश्वरानन्द तथा श्रीयुत फ़िरोज़दीन मन्सूर दण्ड-विधान की १७वीं धारा के अनुसार गिरफ़्तार किए गए।

—कालीकट से ख़बर आई है कि वहाँ रोज़ धड़ाधड़ गिरफ़्तारियाँ होने पर भी विदेशी कपड़ों की दूकानों पर बड़े उत्साह से धरना दिया जा रहा है। स्वयंसेवक गिरफ़्तारी होने के समय तक दूकानों के सामने अनशन २३ जनवरी को भी ५ गिरफ़्तारियाँ हुई हैं।

—२१ जनवरी को कलकत्ते में श्रीयुत जनानन्द नियोगी तथा अन्य दो स्वयंसेवक राजविद्रोहात्मक पर्चे बाँटने के अपराध में गिरफ़्तार किए गए।

—दिल्ली की 'वीनस' बीमा कम्पनी के डाइरेक्टर श्रीयुत नारीशाम २३ जनवरी को काँङ्ग्रेस को सहायता देने के अपराध में गिरफ़्तार किए गए।

—२२ जनवरी को अमृतसर की एक प्रमुख महिला श्रीमती जमना देवी को, जो कि लगानबन्दी के सम्बन्ध में एक कविता पढ़ने के अपराध में गिरफ़्तार की गई थीं, दो महीने की सज़ा दी गई। एक और काँङ्ग्रेस के उत्साहपूर्ण कार्यकर्ता श्रीयुत गुज्जरमल को राजविद्रोह के अपराध में १ महीने की कड़ी सज़ा दी गई।

—अजमेर में मर्दुमशुमारी-बहिष्कार के सम्बन्ध में २२ जनवरी को ५ स्वयंसेवक तथा दो महिलाएँ गिरफ़्तार की गईं। इन दोनों महिलाओं के पति भी जेल ही में हैं। इनमें से एक के दो बच्चे भी हैं।

—२२ जनवरी को झाँसी के प्रमुख कार्यकर्ता पण्डित भागवतनारायन भार्गव, श्रीयुत कुञ्जबिहारी लाल शिवानी, श्रीयुत रुस्तमजो तथा पण्डित कृष्णचन्द्र शर्मा का मुक़द्दमा हुआ। सबको ६ मास की कड़ी सज़ा का हुक्म हुआ। इसके अतिरिक्त प्रथम दो सज्जनों को ३००) रुपए जुर्माना का और शेष दो सज्जनों को ५०) रुपए जुर्माने का दण्ड दिया गया।

—नागपूर से ख़बर आई है कि २६ जनवरी को उपरेड तहसील के २१ स्वयंसेवक २५ ताड़ी के पेड़ काटने के अपराध में गिरफ़्तार किए गए।

—२४ जनवरी को विरमगाँव (अहमदाबाद) में नमक-दिवस मनाया गया। सत्याग्रही नमक बेचने के लिए एक दूकान खोली गई। क़रीब दस बजे दिन को काठियावाड़ से कुछ स्वयंसेवक नमक लेकर आए। पुलिस ने उनसे ज़बर्दस्ती नमक छुड़ा लिया और ७ स्वयंसेवकों को गिरफ़्तार कर लिया।

—बम्बई में स्वतन्त्रता-दिवस बड़े ज़ोर-शोर से मनाया गया, एक ही समय, ८ वार्डों में झण्डा फहराया गया। अनेक स्थानों पर पुलिस वाले मौजूद नहीं थे, किन्तु परेल में क़रीब ६०-६५ पुलिसवाले, जिनमें कुछ हथियारबन्द भी थे, उपस्थित थे। उन लोगों ने झण्डा-समारोह में भाग लेने वालों को वहाँ से हटा दिया। परेल के 'डिक्टेटर' १२ अन्य स्वयंसेवकों के साथ गिरफ़्तार हो जाने पर, लोगों ने दूसरी जगह झण्डा फहराया।

—पटने में स्वतन्त्रता-दिवस के अवसर पर अनेक गिरफ़्तारियाँ हुई हैं। बाबू राजेन्द्रप्रसाद ने स्वयं राष्ट्रीय झण्डा फहराया।

कहा जाता है कि पुलिस ने स्वतन्त्रता-दिवस की सूचना देने वाले एक ढोलिए और एक इक्के वाले को गिरफ़्तार किया है। पुलिस ने काँङ्ग्रेस ऑफ़िस की तलाशी ली, वह वहाँ और उसने वहाँ की चल-सम्पत्ति उठा ले गई और कई लोगों को गिरफ़्तार किया।

—मुङ्गेर का २६ वीं जनवरी का समाचार है, कि स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर वहाँ २८ गिरफ़्तारियाँ हुईं। स्वतन्त्रता-दिवस की सूचना देने वाला स्वयंसेवक और इक्कावाला भी गिरफ़्तार किया गया। किन्तु इक्का वाला पीछे छोड़ दिया गया।

वहाँ तीन जुलूस निकाले गए। तिलक मैदान में स्वतन्त्रता का प्रस्ताव पढ़ा गया।

—गुन्टूर का २६वीं जनवरी का समाचार है, कि वहाँ स्वतन्त्रता-दिवस के अवसर पर तीन गिरफ़्तारियाँ हुईं।

* * *

वायसराय की घोषणा

दिल्ली का २५वीं जनवरी का समाचार है, कि लॉर्ड इर्विन ने महात्मा गाँधी की रिहाई के सम्बन्ध में आदेश देते हुए, निम्न-लिखित घोषणा की है :—

"प्रान्तीय सरकारों से सलाह लेकर, भारत-सरकार ने, अखिल भारतीय काँङ्ग्रेस कमिटी की कार्यकारिणी समिति के सदस्यों को छोड़ देने का विचार किया है, ताकि वे, प्रधान-मन्त्री की घोषणा पर अपने विचार प्रकट कर सकें। इसी निर्णय के अनुसार, तथा इस विचार से, कि उन्हें इस सम्बन्ध में सभाएँ करने में किसी प्रकार का रोक-टोक न हो। वह क़ानून, जिसके द्वारा काँङ्ग्रेस कमिटियों को ग़ैर-क़ानूनी क़रार दिया गया था, सभी प्रान्तीय सरकारों द्वारा हटा लिया जायगा। महात्मा गाँधी को तथा उन लोगों को, जो काँङ्ग्रेस की कार्यकारिणी समिति के सदस्य हैं, अथवा १ली जनवरी १९३० से जिन लोगों ने इस हैसियत से कार्य किया है, वे छोड़ दिए जायँगे। इन लोगों की रिहाई के सम्बन्ध में किसी प्रकार की शर्त का बन्धन नहीं रक्खा जायगा, क्योंकि सरकार का यह विश्वास है, कि पूर्ण शान्ति-स्थापन के लिए उन्हें बिना किसी शर्त के रिहा कर दिया जाय।"

काँङ्ग्रेस की कार्यकारिणी समिति के सदस्यों के नाम नीचे दिए जाते हैं, जो भिन्न-भिन्न जेलों से बिना किसी शर्त के छोड़ दिए गए हैं :—

पं० जवाहरलाल नेहरू, सेठ जमनालाल बजाज, श्री० शिवप्रसाद गुप्त, महात्मा गाँधी, मौलाना अब्दुल कलाम आज़ाद, श्री० जयरामदास दौलतराम, सरदार शार्दूलसिंह कवीश्वर, श्री० सी० राजगोपालाचारी, सरदार बल्लभभाई पटेल, श्री० जे० एम० सेन गुप्ता, डॉ० पट्टाभी सीतारामय्या, डॉ० सत्यपाल, श्री० श्रीप्रकाश, डॉ० सय्यद महमूद, पं० मोतीलाल नेहरू।

वायसराय की घोषणा के पहले अन्तिम तीन को छोड़ कर, सभी जेलों में थे।

नीचे उन सदस्यों का नाम दिया जाता है जो, भिन्न-भिन्न समयों पर काँङ्ग्रेस की कार्य-कारिणी समिति के सदस्य निर्वाचित किए गए हैं :—

डॉ० एम० ए० अनसारी, श्री० मथुरादास त्रिकम जी, मुफ़्ती किफ़ायतुल्ला, सय्यद अब्दुल्ला ब्रेल्वी, पं० गोविन्द मालवीय, श्री० महादेव देसाई, श्री० कृष्णराव चौधरी, अफ़ज़लहक़, श्री० सुन्दरलाल, श्री० कमला नेहरू, डॉ० एन० एस० हार्डिकर, सरदार मङ्गलसिंह, लाला दुनीचन्द, श्री० मोहनलाल सक्सेना (ये लोग वायसराय की घोषणा के समय जेलों में थे), चौधरी ख़लीक़ुज़्ज़माँ, बाबू राजेन्द्रप्रसाद श्री० वेलजी लाखमसी नप्पू, श्री० हंसा मेहता श्री० अब्बास तय्यब जी श्री० दीपनारायणसिंह, श्री० के० वी० आर० स्वामी, श्री० टी० ए० के० शेरवानी, श्री० मुहम्मद अब्दुल्लाहिल बक़ा। श्री० इस्माइल ग़ज़नवी, श्री० के० एम० मुन्शी, बाबू भगवानदास, बाबू पुरुषोत्तमदास टण्डन, सरदार विट्ठलभाई पटेल, श्री० हरकरननाथ मिश्र, पं० मदनमोहन मालवीय, श्री० एस० बी० कौजालगी, डॉ० बी० सी० राय, श्री० सरतचन्द्र बोस, श्री० के० एफ़० नॉरिमन, श्री० आसफ़अली, श्री० अब्दुल क़ादिर कसूरी, श्री० अब्दुलबारी, श्रीमती पेरीन कैप्टेन, श्री० गङ्गाधर राव देश पाण्डे, श्री० रफ़ी अहमद किदवई और श्री० नागेश्वर राव।

महात्मा गाँधी के विचार

बम्बई के लिए रवाने होते समय, चिनचवाड स्टेशन पर महात्मा जी ने, एसोशिएटेड प्रेस के प्रतिनिधि से कहा—"मेरे विचार उदार हैं, मुझे किसी से शत्रुता नहीं है। मैं प्रत्येक विचार-विन्दु से परिस्थिति का पूर्णतया अध्ययन करना चाहता हूँ। सर तेजबहादुर सप्रू तथा गोलमेज़ परिषद के अन्य सदस्यों के लौटने पर मैं प्रधान-मन्त्री की घोषणा के सम्बन्ध में उन लोगों के साथ विचार करूँगा। लन्दन से कुछ सदस्यों के तार भेजने पर मैं अपना यह वक्तव्य देता हूँ।" यह पूछे जाने पर कि प्रधान-मन्त्री के भाषण के सम्बन्ध में उन्हें क्या कहना है, महात्मा जी ने कहा कि, उन्होंने प्रधान-मन्त्री के भाषण को विचारपूर्वक पढ़ा है, किन्तु विशेषकर श्री० सप्रू के कहने से वे अभी उस पर अपना विचार प्रकट करने के लिए तैयार नहीं हैं।

इसके बाद, यह पूछे जाने पर, कि निकट-भविष्य में वे अब क्या करना चाहते हैं, उन्होंने कहा कि "इस विषय में कोई योजना मेरे पास नहीं है। मैं अपने कुछ मित्रों से मिलने बम्बई जा रहा हूँ। मैं नहीं कह सकता कि बम्बई से कहाँ जाऊँगा।

रायबरेली के किसानों ने लगान देना बन्द कर दिया

रायबरेली ज़िले के अनचहार, कन्दरवान, कैचवाल, कटरा बहादुरगञ्ज, मत्राई, बिकाई, गञ्जहरा, गङ्गोली, कुटियाचत्र, रोहिनिया, धुरहेरा, उमरेना और ऊमरान गाँवों ने लगान देना बन्द कर दिया है, इसलिए सपरिषद गवर्नर ने यह सूचना युक्तप्रान्तीय गज़ट में प्रकाशित की है :—

"चूँकि रायबरेली ज़िले के सालोन परगने के अन्तर्गत (उक्त) गाँवों ने लगान देने से इन्कार कर दिया है, इसलिए सन्, १८८६ के 'अवध-रेण्ट एक्ट' की १२-ए धारा के अनुसार दिए गए अधिकारों के मुताबिक़, सपरिषद गवर्नर यह सूचित करते हैं कि ऐसे लगान भूमि-कर की तरह वसूल किए जा सकते हैं।"

धरना देने वालों पर लाठी-प्रहार

मद्रास का २१वीं जनवरी का समाचार है, कि ५ स्वयंसेवकों ने गोडाउन स्ट्रीट पर धरना जारी कर दिया है। कहा जाता है, कि घटनास्थल पर एक भीड़ इकट्ठी हो गई, और पुलिस वालों ने स्वयंसेवकों से, वहाँ से हट जाने के लिए कहा। स्वयंसेवकों के वहाँ से हटने से इन्कार करने पर, पुलिस ने लाठी-प्रहार किया, जिसके फल-स्वरूप दो स्वयंसेवक घायल हुए हैं।

—युक्तप्रान्तीय गज़ट के अनुसार, सपरिषद गवर्नर ने, कानपुर म्युनिसिपैलिटी और छावनी के मनुष्यों का, १९२४ के हथियार-क़ानून के अनुसार दिए गए अधिकार

के मुताबिक़, तलवार, बर्छा, बल्लम, कुल्हाड़ी, छुरा और करौली—इन हथियारों के रखने का अधिकार रद्द कर दिया है।

१०१ मनुष्य पुलिस की गोलियों से मरे :: ४२७ घायल !

असेम्बली में श्री० सन्तसिंह के एक प्रश्न का उत्तर देते हुए, जेम्स क्रेरा ने कहा है, कि दिसम्बर १९३० तक लगानबन्दी के सम्बन्ध में ५४,०४९ मनुष्य गिरफ़्तार किए गए हैं। दिसम्बर के अन्तिम सप्ताह तक २३,५०२ मनुष्य इस सम्बन्ध में क़ैद काट रहे थे। इस सम्बन्ध में भिन्न-भिन्न प्रान्तों में गिरफ़्तारियों की संख्या क्रम से इस प्रकार है :—

प्रान्त	अब तक पकड़े हुए	दिसम्बर के अन्त तक पकड़े हुए
मद्रास	३,९९८	२,११०
बम्बई	९,७३२	३,८०३
बङ्गाल	११,४६३	२,९७३
यू० पी०	७,६०६	४,५५५
पञ्जाब	३,५६१	१,३४९
बिहार-उड़ीसा	१०,८९९	४,९८०
सी० पी०	३,८६१	२,१३९
आसाम	१,०८९	२६१
सीमा-प्रान्त	७६१	३३७
कूर्ग	६	४
दिल्ली	१,०७३	९५३

अप्रैल, मई, जून और जुलाई, इन चार महीनों में १०१ मनुष्य पुलिस की गोलियों से मरे तथा ४२७ घायल हुए।

प्रधान-मन्त्री के पास देशी राज्यों की प्रजा का तार

बम्बई का समाचार है कि देशी राज्य-प्रजा-परिषद्, राजपूताना प्रजा कॉन्फ्रेन्स, पञ्जाब स्टेट कॉन्फ्रेन्स, हैदराबाद स्टेट कॉन्फ्रेन्स, मध्यभारत स्टेट कॉन्फ्रेन्स तथा भरतपुर स्टेट कॉन्फ्रेन्स के प्रतिनिधियों ने, प्रधान-मन्त्री दीवानबहादुर एम० रामचन्द्र राव और श्रीनिवास शास्त्री के नाम एक तार भेजा है। तार में कहा गया है कि, "जामनगर, पटियाला, अलवर, बीकानेर आदि ४८ रियासतों की प्रजा ने हमें यह निवेदन करने का अधिकार दिया है कि किसी भी अखिल भारतीय फ़ेडरेशन विधान में यदि देशी राज्यों की प्रजा के हक़ों की उपेक्षा की जायगी तो उन्हें वह विधान पूर्णतया अस्वीकार होगा। जिस तरह अन्य फ़ेडरेल प्रान्तों में चुनाव और शासन का विधान रहे उसी तरह देशी राज्यों में भी रहना चाहिए, नहीं तो फ़ेडरेशन एक धोखा मात्र होगा देशी राज्यों की प्रजा अब अपने अधिकारों के लिए जाग्रत हो गई, और उन्हें प्राप्त करने के लिए वह बराबर लड़ेगी। जनसत्तात्मक प्रणाली के अनुसार अखिल भारतीय फ़ेडरेशन की बुनियाद ऐसी होनी चाहिए कि नागरिकों के अधिकारों की घोषणा हो जाय; और इन नागरिकों में देशी राज्यों की प्रजा भी है।"

—नई दिल्ली २७ जनवरी—असेम्बली के नेशनलिस्ट पार्टी की ओर से श्री० रङ्गाचारियर ने निम्न-लिखित आशय का तार पं० जवाहरलाल के पास भेजा है :—

"मेरे दल की कार्यकारिणी समिति ने बड़े दुःख के साथ, आपके माननीय पिता जी की चिन्ताजनक अवस्था के विषय में सुना है। सबों को इस विषय में प्रगाढ़ चिन्ता है, और सभी उनके शीघ्र अच्छे हो जाने के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं।"

"कॉङ्ग्रेस-राज्य" स्थापित करने की व्यापक आयोजना

अभियुक्तों पर हिंसात्मक-क्रान्ति के लिए षड्यन्त्र रचने का अभियोग

बम्बई में "कॉङ्ग्रेस वादियों" का ज़बर्दस्त सङ्गठन :: गाँव वालों को हथियार बाँटने का निश्चय

बम्बई २० जनवरी—आज प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट के सामने श्री० मूलराज कुर्सनदास, श्री० मेहरअली, श्री० के० के० मेनन तथा २१ अन्य कॉङ्ग्रेस कार्यकर्ताओं के विरुद्ध, 'क्रिमिनल लॉ एमेण्डमेण्ड एक्ट' की १७ (१), १७ (२) धारा के अनुसार अभियोग उपस्थित किया गया। प्रॉसिक्यूटर ने इन अभियुक्तों के विरुद्ध, आश्चर्यजनक अभियोग उपस्थित किया है।

कहा जाता है कि अभियुक्तों ने, गवर्नमेण्ट हाउस के समीप एक मकान में, एक षड्यन्त्र रचा था। बम्बई में कॉङ्ग्रेस तथा उससे सम्बन्ध रखने वाली अन्य संस्थाओं के ग़ैर-क़ानूनी क़रार दिए जाने के बाद से ये अभियुक्त गुप्त-रूप से कार्य करते रहे थे। वास्तव में शहर में आन्दोलन के प्राण ये ही लोग थे। युद्ध-समिति के सदस्य इनके हाथों के पुतले थे।

सरकारी वकील ने कहा, कि अभियुक्त अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए शहर के भिन्न-भिन्न भागों में, गुप्त-रूप से सभाएँ करते थे, गवर्नमेण्ट हाउस के समीप कृष्ण-भवन में भी ये मिलते थे। इन लोगों का सङ्गठन बहुत ज़बर्दस्त था। कमेटियाँ, सब-कमिटियाँ तथा ५-६ अन्य दफ़्तर इन लोगों ने क़ायम कर रक्खे थे। इन सबों के सिवा ११ अन्य विभाग भी इनके नियन्त्रण में थे। भिन्न-भिन्न विभागों के हाथ में भिन्न-भिन्न प्रकार का कार्य था। इनमें कुछ का नाम 'प्रचार-विभाग', 'सभा-सङ्गठन-विभाग', 'मज़दूर-सङ्गठन-विभाग', 'समाचार-विभाग' आदि रक्खा गया था। प्रॉसिक्यूटर ने कहा कि 'समाचार-विभाग' एक प्रकार से कॉङ्ग्रेस का ख़ुफ़िया-विभाग है।

अभियुक्तों के कार्य के विषय में सरकारी वकील ने कहा, कि इन लोगों ने यह कार्यक्रम बनाया था, कि लोगों से सरकारी हुण्डी ख़रीदने के लिए कहा जाय, और वे किसी ऐन मौक़े पर हुण्डी का रुपया सरकार से माँगें। इसके बाद फिर हुण्डी नहीं ख़रीदी जाय। इस प्रकार ये लोग सरकार को आर्थिक कठिनाइयों में डालना चाहते थे। इन लोगों की गिरफ़्तारी के समय पुलिस को जो काग़ज़-पत्र मिले थे, उनमें से एक में ग्राम्य-आयोजन के विषय में कुछ बातें थीं। इससे पता चलता है, कि इसका उद्देश्य था साधारण क्रान्ति करना। इस आयोजन में यह बताया गया है, कि प्रत्येक गाँव में दो स्वयंसेवकों का एक दल भेजा जाय और प्रत्येक दल भिन्न-भिन्न समयों पर बारह बार गाँवों में भ्रमण करे। उनके भ्रमण का उद्देश्य है सब से पहले स्वदेशी का प्रचार करना और तब गाँवों के उन लोगों को भर्ती करना, जो अपने गाँवों में ही कार्य करें। इनके सिवा अन्य भ्रमणों का उद्देश्य रक्खा गया था, गुप्त सभाओं के लिए स्थानों को चुनना, गाँव वालों को हथियार देना, तथा उन्हें उन हथियारों का प्रयोग सिखाना। इसका उद्देश्य था साधारण क्रान्ति करना, जिसमें तारों का काटना तथा पुलिस वालों को मारना भी शामिल था। सरकारी वकील ने कहा, कि इस आयोजन के सम्बन्ध का काग़ज़-पत्र श्री० के० के० मेनन के पास पाया गया था। इसी सम्बन्ध के ५०० अन्य काग़ज़-पत्र भी पुलिस के हाथ में हैं, जिसे पुलिस ने अभियुक्तों के मकानों तथा सभा-स्थानों में उनकी गिरफ़्तारी के समय पाया है।

इसके बाद सबूत पक्ष के गवाहों के बयान लिए गए। मामला चल रहा है।

—मद्रास का २६वीं जनवरी का समाचार है कि वहाँ स्वतन्त्रता दिवस बड़े धूमधाम से मनाया गया। ४ बजे सन्ध्या समय अनेक स्थानों पर सभाएँ की गईं और झण्डे फहराए गए। ट्रिप्लिकेन में श्रीमती माधवराव की अध्यक्षता में एक विशाल सभा की गई, जिसमें स्वतन्त्रता का प्रस्ताव पढ़ा गया।

शहर में पूर्ण हड़ताल मनाई थी। पुलिस लाठियों के साथ गश्त लगा रही थी। पचइअप्पा कॉलेज के समीप पुलिस ने लाठियाँ भी चलाईं जिससे दो व्यक्ति घायल हुए। नेताओं ने घटना स्थल पर पहुँच कर भीड़ हटा कर मामला शान्त किया।

शहर में अनेक जुलूस भी निकाले गए थे।

—नई दिल्ली का २६वीं जनवरी का समाचार है है श्री० जे० एम० सेनगुप्त दिल्ली जेल से छोड़ दिए गए। वे इलाहाबाद होते हुए कलकत्ता जाएँगे।

—ख़बर है कि श्री० आर० एस० पण्डित को इलाहाबाद के कमिश्नर ने अपनी जवाबदेही पर छोड़ दिया है।

—ख़बर है कि पण्डित मोतीलाल नेहरू ने, अभी वायसराय की घोषणा पर अपनी सम्मति प्रकट करना अस्वीकार किया है। कहा जाता है कि महात्मा जी, तथा श्री० जवाहरलाल नेहरू से मिल कर वे अपनी सम्मति प्रकट करेंगे।

इस समय इनकी अवस्था चिन्ताजनक है। डॉ० विधानचन्द्र राय तथा अन्य दो डॉक्टरों की देख-भाल में आए हैं। डॉ० बनर्जी का कहना है कि पण्डित जी दिन-बदिन कमज़ोर हुए जा रहे हैं। खाँसी और साँस लेने में तकलीफ़ की वजह से, आपको रात में नींद नहीं आती है। उनका चेहरा कुछ सूज भी गया है।

इन सब पीड़ाओं के होते हुए भी, पण्डित जी प्रसन्न-वदन मालूम पड़ते हैं। २७वीं जनवरी की बुलेटिन में डाक्टरों का कहना है कि गत रात्रि को पण्डित जी कुछ अच्छे थे। यद्यपि उनकी दशा चिन्ताजनक है, तो भी उनमें काफ़ी शक्ति है।

डॉ० जीवराज मेहता पण्डित जी को देखने के लिए आने वाले हैं। डॉ० अनसारी भी गुजरात जेल से छूट कर पण्डित जी को देखने आए हैं।

हिंसात्मक क्रान्ति की लहर

मराठों में षड्यन्त्र का बीज बोने का प्रयत्न किया गया !

गुप्त सभाएँ :: पुलिस अफ़सरों की हत्याओं का भयंकर आयोजन

यूनिवर्सिटी षड्यन्त्र केस के 'अभियुक्त' का सनसनीपूर्ण बयान !

चाँदपूर षड्यन्त्र का फ़ैसला :: एक को फाँसी दूसरे को कालापानी

चटगाँव में क्रान्तिकारियों का आतङ्क :: हथियार नष्ट कर दिए गए !

बम्बई का षड्यन्त्र केस :: हरिकृष्ण को फाँसी की सज़ा :: अमृतसर का षड्यन्त्र केस

यूनीवर्सिटी हॉल षड्यन्त्र केस

लाहौर में २२वीं जनवरी को पञ्जाब-गवर्नर पर गोली चलाने वाले अभियुक्त हरिकिशन का केस फिर से प्रारम्भ हुआ। प्रथम श्रेणी के मैजिस्ट्रेट मि० एच० एम० महमूद की गवाही प्रारम्भ होते ही अभियुक्त के वकील मि० आसफ़अली ने उसका विरोध किया। मैजिस्ट्रेट से अदालत छोड़ देने के लिए कहा गया। मि० आसफ़-अली ने कहा कि उन्होंने बयान पढ़े थे और वे यह सबूत कर सकते हैं कि ये बिलकुल ग़लत हैं। अभियुक्त ने अपराध भले ही स्वीकार कर लिया हो, परन्तु वह स्वीकृति इस अदालत में उस समय तक पेश नहीं की जा सकती, जब तक वह अदालत-जाँच में पेश न की जा चुकी हो।

वादी की कार्यवाही से यह स्पष्ट मालूम होता है कि अपराध की स्वीकृति १ली जनवरी को दर्ज की गई है और चार्ज लगाने की कार्यवाही ३री जनवरी को हुई है। ऐसी स्थिति में वह स्वीकृति जाँच-मैजिस्ट्रेट के सम्मुख पेश क्यों नहीं की गई। और यदि वह वहाँ पेश नहीं की गई, तो वह इस अदालत की फ़ाइल में नहीं रक्खी जा सकती। वह पुलिस के पास से प्राप्त की गई है। क्या सरकारी वकील इस बात की शपथ खाने के लिए तैयार हैं, कि वह स्वीकृति मि० महमूद मैजिस्ट्रेट के पास से प्राप्त की गई है? यदि वह उनके पास से प्राप्त नहीं की गई तो मि० महमूद कर्त्तव्यच्युत हुए हैं। ख़ाँ साहब कलन्दरअली ख़ाँ ने कहा, कि बयान १६४वीं धारा के अनुसार एक योग्य मैजिस्ट्रेट के द्वारा लिए गए थे और उनके ऊपर कोई विरोध नहीं उठाया जा सकता। अदालत ने कहा कि अपराधी की स्वीकृति जायज़ है, इसके बाद गवाहियाँ प्रारम्भ हुईं।

मैजिस्ट्रेट का बयान

मि० महमूद ने बयान में कहा कि अभियुक्त ने १ली जनवरी को अपना अपराध स्वीकार किया था। अभियुक्त ने इस प्रकार का कोई बयान नहीं दिया, कि पुलिस ने उससे ज़बर्दस्ती अपराध स्वीकृत करवाया है। बयान देते समय अभियुक्त का स्वास्थ्य अच्छा था और ऐसे कोई चिन्ह नहीं दिखाई देते थे, जिससे यह मालूम हो कि उसे कष्ट देकर अपराध स्वीकृत कराया गया हो? जाँच में मैजिस्ट्रेट ने कहा कि उन्होंने उन लोगों के शरीरों की कभी जाँच नहीं की, जो उनके सामने अपराध स्वीकार कराने के लाए जाते थे। उन्होंने अभियुक्त से यह नहीं पूछा कि बयान देने के लिए उससे ज़बर्दस्ती की गई है या नहीं। अभियुक्त से यह भी नहीं पूछा गया कि उसने कोई क़ानूनी सहायता या कुटुम्बियों की सलाह ली है। उन्हें इस बात का ज्ञान नहीं, कि अभियुक्त कब तक पुलिस की हवालात में रहा और न इसका ही पता है कि वह जुडीशियल हवालात से लाया गया है या पुलिस की हवालात से?

अभियुक्त का वक्तव्य

मैजिस्ट्रेट की गवाही के उपरान्त अभियुक्त की स्वीकृति का वक्तव्य पढ़ा गया। उसमें लिखा था कि उसके गाँव का साथी चमनलाल नौजवान भारत-सभा का सदस्य था। उसके विचार क्रान्तिकारी थे। अभियुक्त का उससे सम्बन्ध था और वह पत्रों में लाहौर षड्यन्त्र केस की कार्यवाही पढ़ा करता था। जिससे भगतसिंह और उसकी पार्टी के लिए उसके हृदय में स्नेह का अङ्कुर उत्पन्न हो गया। उसका भाई भगतराम कॉङ्ग्रेस आन्दोलन में गिरफ़्तार कर लिया गया, और इससे वह बहुत ग़ुस्सा हो गया था। उसकी सम्मति से अहिंसात्मक आन्दोलन को सफलता मिलना असम्भव था। चमनलाल लाहौर कॉङ्ग्रेस में आया था, और लौटते समय उसने कहा था, कि उसने अपना सम्बन्ध पञ्जाब के क्रान्तिकारी-दल के साथ स्थापित कर लिया है। इसके १५-१६ दिन बाद अभियुक्त ने शाह मुहम्मद से ६५) रुपया में एक रिवॉल्वर ख़रीदी और उसने वह चमनलाल को दिखलाई। चमनलाल ने कहा कि कोई कार्य करने के पहले क्रान्तिकारी-दल की सम्मति ले लेना उचित है। चमनलाल एक बार फिर लाहौर आया, और उसने अभियुक्त से कहा कि पञ्जाब में दमन का दौरा तेज़ हो रहा है, और इसके लिए गवर्नर उत्तरदायी है। और इसलिए पार्टी ने यह निश्चय किया कि गवर्नर पर उपाधि-वितरण उत्सव के समय आक्रमण करना चाहिए।

यूनीवर्सिटी हॉल काण्ड के कुछ दिन पहले चमनलाल और अभियुक्त रणवीरसिंह से मिलने 'मिलाप' ऑफ़िस गए थे। और वहाँ अभियुक्त की चमनलाल ने रणवीरसिंह से मुलाक़ात करवाई थी। रणवीरसिंह की सलाह से घटना के दिन तक अभियुक्त वासवन्ध राम के मकान पर रक्खा गया था। २२वीं दिसम्बर को रणवीरसिंह अभियुक्त को म्यूज़ियम के सामने ले गए और वहीं से उन्होंने उसे यूनीवर्सिटी हॉल दिखला दिया। उन्होंने यह भी कहा कि यूनीवर्सिटी हॉल के अन्दर प्रवेश करने के लिए उसे टिकिट दिया जायगा। वासवन्ध राम टिकिट लेकर उसे दे गया। २३वीं दिसम्बर को अभियुक्त एक ताँगा में यूनीवर्सिटी हॉल गया और टिकिट के सहारे आसानी से अन्दर चला गया। 'स्वीकृति-पत्र' के अन्त में गवर्नर को गोली मारने का बयान था।

डॉक्टर का वक्तव्य

डॉक्टर गौशनलाल ने अपने बयानों में कहा कि उन्होंने चननसिंह की जाँच की थी। उसके शरीर में दो गोलियाँ निकली थीं। उन्होंने इन्स्पेक्टर वधावन की जाँच की था। इसके बाद मेयो अस्पताल के हाउस-सर्जन डॉ० मुहम्मद यूसुफ़, पुलिस के असिस्टेण्ट सुपरिण्टेण्डेण्ट मि० आर० एफ़० नील और सब-इन्स्पेक्टर दीवानचन्द की जो यूनिवर्सिटी हॉल में उपस्थित थे, गवाहियाँ ली गईं।

२३ वीं जनवरी को फिर कार्यवाही प्रारम्भ हुई। अभियुक्त का वक्तव्य उसे पढ़ कर सुनाया गया। उसने उसे स्वीकार कर लिया।

प्रश्न—क्या तुमने गवर्नर के ऊपर गोली चलाई थी?

उत्तर—हाँ।

प्र०—क्या 'पगड़ी और कुल्ला' तुम्हारे हैं? और क्या तुम उन्हें उस समय पहने हुए थे।

उ०—हाँ।

प्र०—तुमने कितनी गोलियाँ छोड़ीं?

उ०—छः

प्र०—क्या तुम घटना के बाद ही बरण्डे में गिरफ़्तार कर लिए गए थे?

उ०—हाँ।

प्र०—क्या तुम्हारे पास रिवॉल्वर पाई गई थी?

उ०—हाँ, वह मेरे हाथ में थी।

प्र०—क्या तुम १ली जनवरी को मि० महमूद के सामने पेश किए गए थे।

उ०—नहीं।

प्र०—स्वीकृति पर दो स्थानों पर जो दस्तख़त हैं क्या वे तुम्हारे हैं?

उ०—हाँ, पुलिस ने मेरे दस्तख़त दो कोरे क़ाग़ज़ों पर इस बहाने से लिए थे, कि उनका मिलान करना है।

प्र०—तुम और कुछ कहना चाहते हो?

उ०—मैंने अपना लिखित वक्तव्य पेश कर दिया है।

प्र०—क्या तुम अपनी रक्षा करना चाहते हो?

उ०—नहीं?

बम्बई षड्यन्त्र केस

'मरहठों को भड़काने का प्रयत्न'

बम्बई का २६ वीं जनवरी का समाचार है कि गत वर्ष ९वीं अक्टूबर को लेमिङ्गटन पुलिस-स्टेशन में मि० टेलर की हत्या के प्रयत्न में जो सात आदमी गिरफ़्तार हुए थे, उनके मामले के प्रारम्भिक भाषण में पुलिस के वकील मि० मन्कर ने कहा, कि "लेमिङ्गटन रोड का गोली-काण्ड कोई मामूली और साधारण घटना नहीं है, वरन वह घटना उस भयङ्कर षड्यन्त्र की एक चिनगारी है, जिसकी नींव बहुत गहरी पहुँच चुकी है और जिसका उद्देश्य मरहठों के हृदयों में हिंसा के भाव भर देना है। इस प्रकार उन्हें अपने दल में सम्मिलित कर षड्यन्त्र-कारियों का उद्देश्य गवर्नमेण्ट के अफ़सरों, विशेषकर पुलिस के अफ़सरों को मार कर गवर्नमेण्ट को उखाड़ फेंकना है।" मि० मन्कर ने यह भी कहा कि वर्तमान षड्यन्त्र की आयोजना का आधार सन् १९१०-११ का नासिक-षड्यन्त्र केस है और उसका भारत के उत्तरीय क्रान्तिकारी दल से घनिष्ट सम्बन्ध है। अभियुक्तों पर दण्ड-विधान की १२० वीं, ३०७ और ११०वीं धाराओं के अनुसार गवर्नमेण्ट के सभी ऑफ़िसरों और विशेषकर पुलिस के ऑफ़िसरों की हत्या का अभियोग लगाया गया है। मुक़दमे के अभियुक्त श्री० गणेश वैशम्पायन, प्रमुख लेफ़्टनेण्ट—मुख़बिर बन गया है। मुक़दमे की कार्यवाही चीफ़ प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट की अदालत में हो रही है।

सार्जेण्ट टेलर पर किए गए आक्रमण की घटना बयान करने के उपरान्त वकील ने कहा, कि घटना के उपरान्त इन्स्पेक्टर लॉयन ने आसपास तलाशी ली और उन्हें वह दो गोलियाँ और एक कारतूसों की ख़ाली पेटी मिली। गोलियाँ चलाने के बाद दो अभियुक्त मोटर में अन्धेरी की ओर भागे थे और पुलिस को सन्तोषजनक उत्तर न देने के कारण उनमें से शङ्कर जयराम शिन्दे गिरफ़्तार कर लिया गया था। बाद में उसके मकान की तलाशी लेने पर तीन कारतूस की पेटियाँ, दो पिस्तौल और भगतसिंह और दत्त की फ़ोटो पाई गईं। श्री० शिन्दे ने जो वक्तव्य दिया था, उसके अनुसार देवीदास गिरफ़्तार किया गया था। पुलिस को मुख़बिर मोघे के घर में भी एक बर्छी और दो भाले प्राप्त हुए। बाद में वैशम्पायन, उपाध्याय और वापट गिरफ़्तार किए गए। तलाशी में अभियुक्तों के घरों से जो काग़ज़ प्राप्त हुए हैं, उनसे यह स्पष्ट मालूम होता है, कि इस आक्रमण की योजना केवल मि० टेलर तक ही परिमित नहीं थी। वह तो वृहत् षड्यन्त्र का एक अङ्ग था। इसके बाद मि० मन्कर ने उस पार्टी का 'हिन्दुस्तान रिपब्लिकन पार्टी' के साथ सम्बन्ध साबित करने का प्रयत्न किया। उन्होंने कहा, कि फ़रवरी में दो प्रस्ताव पास किए गए थे, जिनमें से एक भगतसिंह और दत्त को छुड़ाने के सम्बन्ध में था और दूसरा बङ्गाल और महाराष्ट्र का सम्बन्ध केन्द्रीय सभा के साथ स्थापित करने के सम्बन्ध में था। इस प्रस्ताव के अनुसार वैशम्पायन केन्द्रीय सभा का सदस्य चुना गया था और वह प्रचार के लिए महाराष्ट्र भेजा गया था। इसी उद्देश्य से 'स्वतन्त्रता का युद्ध' नामक एक पुस्तक छाप कर बेची गई थी और उसकी आमदनी में से दादर से दो सौ रुपया क्रान्तिकारी दल के मुखिया धन्वन्तरी के 'पोस्ट-बक्स' कृष्णदास को भेजे गए थे।

बाद में मि० मन्कर ने उनकी स्थानीय कार्यवाहियों का भी उल्लेख किया। उन्होंने कहा, कि फ़रवरी, सन् १९३० में वैशम्पायन प्रभात-फेरी में इस उद्देश्य से सम्मिलित हुए थे, कि उसे क्रान्तिकारी बना दिया जाय। इस कार्य में वापट और मोघे उसके सहायक थे। आगे अपने उद्देश्य की सिद्धि के लिए पत्र निकालने की योजना की गई और उसके लिए एक साइक्लोस्टाइल प्रेस ख़रीदा गया, परन्तु ज़ब्त कर लिया गया। नवयुवकों को क्रान्ति की शिक्षा देने के लिए गीता क्लासें भी खोली गई थीं और शस्त्र-शिक्षा के लिए दरवाज़े को 'टार्गेट' (निशाने की जगह) बनाया जाता था।

अन्त में मि० मन्कर ने कहा, कि दुर्घटना की रात्रि को अभियुक्त पुलिस-कमिश्नर की हत्या के निमित्त वैशम्पायन, वापट और सारदा मलाबार-हिल गए थे, और बर्वे, देवधर और मोघे से, जो अब मुख़बिर हो गए हैं, वहाँ बाद में पहुँचने के लिए कहा गया था। परन्तु वे अपने कार्य में असफल रहे और उपाध्याय के घर लौट आए। लौटते समय उन्होंने लेमिङ्गटन रोड पर पुलिस-ऑफ़िसरों की मोटर देख कर उस पर गोलियाँ चलाईं।

यूनिवर्सिटी हॉल षड्यन्त्र केस

हरिकिशन को फाँसी

लाहौर में २६वीं जनवरी को सेशन्स जज ने 'गवर्नर गोलीकाण्ड' के मुक़दमे का फ़ैसला सुना दिया। फ़ैसला सुनाने के पहले सेशन्स जज मि० हेण्डरसन ने जूरी के सम्मुख मुक़दमे की ज्ञातव्य बातें रक्खीं और अभियुक्तों के लिखे हुए बयानों में आवश्यक अंश पढ़े। मुख्य प्रश्न यह कि चन्ननसिंह जो गोली से मारा गया था और गवर्नर और इन्स्पेक्टर बधावनसिंह पर, जो घायल हुए थे, अभियुक्त गोली चलाया या नहीं। उसके सम्बन्ध उनके पास स्पष्ट गवाही है कि अभियुक्त अभ्यागतों की गैलरी में खड़ा था और यही गोलियाँ चला रहा था। इसके साथ ही अभियुक्त ने यह क़बूल कर लिया है कि उसने छै गोलियाँ चलाईं। यह बात कही गई है कि अभियुक्त के साथ एक और आदमी गिरफ़्तार किया गया था और शायद गोली उसीने चलाई हों। उसके सम्बन्ध में वाल्टरलॉक कम्पनी के मैनेजर मि० लुईस ने जो गवाही दी है उससे यह स्पष्ट हो जाता है कि जो गोलियाँ छोड़ी गईं थी वे उसी रिवॉल्वर से छोड़ी जा सकती थीं जो अभि- युक्त के पास प्राप्त हुई है। ऐसी कोई गवाही नहीं है जिससे यह मालूम हो कि अभियुक्त के अतिरिक्त और किसी व्यक्ति ने भी गोली चलाई होगी।

चन्ननसिंह का वक्तव्य

चन्ननसिंह ने मरते समय सूरतसिंह को जो बयान दिया है उससे मालूम होता है कि वह अभियुक्त की गोलियों से घायल हुआ है। अभियुक्त के गवाह का कहना है कि चन्ननसिंह के इस वक्तव्य का अर्थ यह भी हो सकता है कि दोनों के सम्मिलित आक्रमण से घायल हुआ है। यह बात जूरी के देखने की है कि वकील का यह वक्तव्य ठीक है या नहीं। जज ने आगे कहा कि मि० महमूद मैजिस्ट्रेट के सम्मुख अभियुक्त ने जो स्वीकृति के बयान दिए हैं उन्हें उसके साथ इन्कार कर दिया है। कहना है कि दस्तख़त उससे कोरे काग़ज़ पर लिए गए थे और पुलिस ने ही उनका मनमाना उपयोग किया है! यदि अभियुक्त का कहना सत्य है तो एक बड़ी भारी समस्या उपस्थि हो जायगी। चन्ननसिंह की मृत्यु के सम्बन्ध में डॉ० कर्नल बरूचा और डॉ० रोशन की गवाही से यह स्पष्ट हो जाता है कि उसकी मृत्यु गोली से हुई है।

क्या पुलिस ने गोली चलाई थी

इस सम्बन्ध में कि पुलिस ने गोली चलाई थी या नहीं, जज ने कहा कि इसमें सन्देह नहीं कि पुलिस ऑफ़िसरों के पास शस्त्र थे, परन्तु ऐसी कोई गवाही नहीं मिलती जिससे यह मालूम हो कि किसी पुलिस ऑफिसर ने पिस्तौल खींची हो।

इसके बाद जज ने अभियोग पढ़ा। अभियुक्त पर दण्ड-विधान की ३०२री धारा के अनुसार चन्ननसिंह की हत्या का, और ३०७वीं धारा के अनुसार गवर्नर और इन्स्पेक्टर बधावन के हत्या के प्रयत्न के अलग-अलग अभियोग लगाए गए थे। अन्त में उन्होंने जूरी से कहा कि उन्हें अभियुक्त की इच्छा और उसके कार्य के स्वाभाविक परिणाम पर ध्यान देना चाहिए।

जूरी का फ़ैसला

जूरी ने सब की सम्मिलित सम्मति के अनुसार अभियुक्त को तीनों अभियोगों में अपराधी क़रार दिया। परन्तु उन्होंने अदालत से यह सिफ़ारिश की कि नवयुवक होने के कारण उस पर दया दिखाना चाहिए।

फ़ैसला

इसके उपरान्त सेशन्स जज ने फ़ैसला सुनाया। उन्होंने जूरी की प्रार्थना अस्वीकार की और अभियुक्त पहले अपराध में फाँसी की सज़ा तथा अन्य दो अपराधों में से हर एक में आजन्म-काले पानी की सज़ा दी।

चाँदपुर-हत्याकाण्ड का फ़ैसला

एक को फाँसी, दूसरे को आजन्म कालापानी

चाँदपुर के इन्स्पेक्टर-हत्याकाण्ड का फ़ैसला स्पेशल ट्रिब्यूनल ने २४वीं जनवरी को सुना दिया। इस मुक़दमे में दो अभियुक्त थे। एक श्री० रामकृष्ण विश्वास और दूसरा श्री० कालीपद चक्रवर्ती। इनमें से पहले को फाँसी की सज़ा दी गई और दूसरे को आजन्म कालेपानी की। फ़ैसला सुनाने के लिए ट्रिब्यूनल के कमिश्नरों ने ठीक ४॥ बजे अदालत में प्रवेश किया। अदालत का कमरा मनुष्यों की भीड़ से खचाखच भरा था। और किसी अनिष्ट आशङ्का के भय से सभी चुप और उद्विग्न थे। परन्तु अभियुक्त बिलकुल बेपरवाह थे। उनके लिए जैसे कुछ हुआ ही न हो। उनके चेहरों पर भय का लेश न था। ट्रिब्यूनल के प्रेज़िडेण्ट मि० गार्लिक ने फ़ैसला सुनाया। अभियुक्तों का चित्त प्रसन्न था। उसके बाद जज ने सरकारी वकील के मार्फ़त रामकृष्ण से कहा, कि उसे सात दिन के अन्दर हाईकोर्ट में अपील करने का अधिकार है। रामकृष्ण खड़ा हुआ और उसने केवल हँस भर दिया। दरख़्वास्त देने पर कमिश्नरों ने कालीपद चक्रवर्ती को द्वितीय श्रेणी में रक्खा।

हाईकोर्ट के भूतपूर्व जज रायबहादुर एन० के० बोस, जो ट्रिब्यूनल के कमिश्नर थे, का मत अन्य जजों से विरुद्ध था। उन्होंने एक अलग फ़ैसले में लिखा, कि अभियुक्त रामकृष्ण को फाँसी की सज़ा देने में उसकी युवावस्था का विचार करना अत्यन्तावश्यक है। साथ ही गवाही से पता चलता है, कि दोनों ही अभियुक्तों ने इन्स्पेक्टर पर गोली चलाई थी, और यह पता लगाना आसान नहीं है कि किस की गोली से इन्स्पेक्टर की मृत्यु हुई। इसी अवस्था में अभियुक्तों को अलग-अलग सज़ा देना बिलकुल अनुपयुक्त प्रतीत होता है। उन्होंने रामकृष्ण विश्वास को भी आजन्म कालेपानी की सज़ा दी।

अमृतसर षड्यन्त्र केस

अमृतसर का २१वीं जनवरी का समाचार है, कि लाहौर के तीन विद्यार्थियों—श्री० देवराज, वात्सायन, और केवलकृष्ण—पर शस्त्र-विधान की २० वीं धारा के अनुसार दायमगञ्ज में कुछ रिवॉल्वर प्राप्त होने के कारण जो केस चलाया जा रहा था, उसके सम्बन्ध में प्रथम श्रेणी के मैजिस्ट्रेट पं० लछमीदत्त की अदालत में सरकारी गवाहों की जाँच हुई। ग़ुलाम मुहम्मद ने कहा कि अभियुक्त ने दायमगञ्ज में उसका मकान १२) माहवार के हिसाब से किराए पर लिया था। शस्त्र-विधान के अन्य केस के अभियुक्त ग़ुलाम मुहम्मद तुर्क ने उनके लिए

मकान किराए पर लिया था। अभियुक्त ने गवाह के साथ मस्जिद में निमाज़ पढ़ी थी। कुछ दिनों बाद पुलिस आई और उसने उन्हें गिरफ़्तार कर लिया। उनके पास तीन रिवॉल्वर और कुछ कारतूस प्राप्त हुए थे। ग़ुलाम हुसैन ने भी पहले गवाह की नाईं ही अपनी गवाही दी।

चटगाँव षड्यन्त्र केस

सब-इन्सपेक्टर का बयान

१४वीं जनवरी को स्पेशल ट्रिब्यूनल के सामने हाथाज़ारी के पुलिस सब-इन्सपेक्टर अब्दुलग़फ़ूर से ज़िरह की गई। उन्होंने विद्रोहियों का पता लगाने का तरीक़ा बताया। विद्रोही पहाड़ियों में घुस कर ग़ायब हो गए थे, वहीं पुलिस और सेना ने उन्हें घेर लिया, और वहाँ से विद्रोहियों ने खोजने वाले जत्थों पर गोलियों की वर्षा की!

गवाह ने बयान में कहा, कि समाचार मिलने पर वे २१ अप्रैल को विद्रोहियों की खोज में फ़तेहाबाद की पहाड़ियों में गए। एक पहाड़ी पर चढ़ते समय उन्हें एक मोज़ा मिला, जिस पर ख़ून के धब्बे मालूम होते थे, दो बैज भी मिले, जिनमें से एक के ऊपर कॉङ्ग्रेस का तिरङ्गा झण्डा बना था। पहाड़ी के ऊपर की घास चलने से दबी हुई जान पड़ती थी। यह पहाड़ी चटगाँव पुलिस लाइन की पहाड़ियों की क़तार में थी। पहाड़ी से नीचे आते हुए गवाह को बैज़ुद्दीन ने बतलाया, कि उसने पहाड़ी के नीचे ७० पुरुष बन्दूकों सहित देखे हैं। उस ओर देखने से उन्हें दो-तीन आदमी चलते-फिरते दिखाई दिए। फिर उन्होंने पहली ट्रेन से चटगाँव नगर पहुँच कर, पुलिस के सुपरिण्टेण्डेण्ट और डी० आई० जी० को विद्रोहियों का पता दिया।

विद्रोहियों का पीछा

अगले दिन सबेरे ही पुलिस और सेना ने कर्नल डगलस स्मिथ की अध्यक्षता में पहाड़ियों की खोज की, किन्तु कोई दिखाई नहीं दिया। उन्हें कुछ गोलियाँ बैज़ुद्दीन के दिखाए हुए स्थान पर मिलीं। तीसरे पहर सारी सेना के दो विभाग कर दिए गए, और पहाड़ियों को दो दिशाओं में खोला गया। खोजते समय गवाह वाली पार्टी ने पहाड़ियों से गोली चलने का शब्द सुना। वे एक टीले के पीछे छिप कर लेट गए। बहुत समय तक गोलियाँ चलती रहीं। हम लोगों ने उस समय बिलकुल गोली नहीं चलाई। फिर हम झरझरिया लौट आए। वहाँ उन्हें दूसरी पार्टी मिली। कुछ गाँव वालों से पहाड़ी के ऊपर जाने और वहाँ की दशा का पता लगाने के लिए कह कर गवाह ने वह स्थान छोड़ दिया।

अगले दिन सबेरे वे साथियों सहित पहाड़ी की चोटी पर गए, और उन्हें १० मनुष्य मृतक, और दो घायल पड़े हुए मिले। वहाँ कई गोलियाँ भी मिलीं। श्री० शिरीश बोस द्वारा ज़िरह किए जाने पर, गवाह ने कहा, कि उन्होंने असिस्टेण्ट सब-इन्सपेक्टर, एक चौकीदार और एक गुप्तचर को सन्दिग्ध विद्रोहियों की चाल पर दृष्टि रखने के लिए छोड़ दिया था।

ग्रामवासी गुप्तचरों के गवाह अहमद अली डिप्टी मैजिस्ट्रेट ने, जिन्होंने श्री० लालमोहन सेन नामक अभियुक्त का बयान लिखा था, कहा कि उन्होंने श्री० लालमोहन का बयान तीन दिन में लिखा था। गवाह ने बतलाया, कि उन्होंने स्वीकृति की सत्यता का निश्चय अभियुक्त के साथ नगर में कई स्थानों पर घूम कर किया था। वह अभियुक्त के साथ 'धूम' स्टेशन भी गए, जहाँ से अभियुक्त के सहचर Fish-plates और Dogspikes रेलवे लाइन से निकाल लाए थे। और जहाँ १८ अप्रैल की रात को तार काटे गए थे। फिर गवाह ने दो सन्देहजनक व्यक्तियों की शनाख़्त परेड की। ये लोग लालमोहन के कथनानुसार गिरफ़्तार किए गए थे, और लालमोहन ने दोनों को अपने साथ रेल की पटरी हटाने में शरीक बतलाया था।

१९वीं जनवरी को चिटगाँव के सब-डिविज़नल ऑफ़िसर सुरेन्द्रनाथ ने गवाही दी। वे आक्रमण वाली रात (अप्रैल १८) को कई स्थानों पर गए थे और उन्होंने चार अभियुक्तों की स्वीकृति के बयान लिखे थे। सरकारी वकील द्वारा पूछे जाने पर उन्होंने कहा, कि वे उस रात्रि को हेडक्वार्टर्स में थे। उन्हें घटना की सूचना कलेक्टर के चपरासी के द्वारा प्राप्त हुई, और वे तुरन्त एक मोटर में बैठ कर चले गए। उन्होंने मिस्टर विल्किन्सन के बारे में एक कॉन्स्टेबिल से कुछ पूछा, और बँगले के अस्पताल के भीतर गए, परन्तु वहाँ उन्हें कलेक्टर मि० विल्किन्सन नहीं मिले।

गोली चली

दो एङ्ग्लो इण्डियन लोगों से ऐसा सुन कर, और कलेक्टर के ख़तरे में होने की सूचना पाकर, वे कोतवाली गए और मिस्टर अब्दुल हक़ दोवासी के स्थान पर पहुँचे, जहाँ से उन्हें कुछ बन्दूकें और गोलियाँ प्राप्त हुईं।

गवाह फिर कुछ समाचार पाकर अस्पताल में गए और वहाँ उन्होंने एक मोटर ड्राइवर को देखा जिसका मुँह बहुत अधिक सूजा हुआ था। इस समय सबेरे के तीन बजे थे। गवाह ने उस मनुष्य का बयान लिख लिया, और अस्पताल वाली पहाड़ी से नीचे उतरते हुए उन्होंने एक कॉन्स्टेबिल को एक डोली पर पीड़ा से कराहते हुए देखा। उसे पुलिस लाइन्स में गोली मारी गई थी।

बन्दूकें भस्म

इसी सम्बन्ध में गवाह ने कहा कि यहाँ से पुलिस इन्स्पेक्टर हेराम्ब घोष सहित पुलिस लाइन्स में गए और पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट से मिले। वहाँ पर कुछ बन्दूकें अभी तक जल रही थीं। कुछ मोटरें, एक मोटर में कुछ बन्दूकें और कई छोटे-छोटे सूट केस भी दिखाई दिए। फिर वह अकेले ही वालण्टियरों के केन्द्रस्थान पर गए और वहाँ मि० विल्किन्सन से मिले, जिनके द्वारा उन्हें नुक़सान का हाल ज्ञात हुआ। कमिश्नर को सूचित करने के पश्चात वे घर लौट आए।

घायलों की सेवा

अगले दिन सबेरे वे वालण्टियरों के केन्द्रस्थान पर फिर पहुँचे और कुछ मृतक शरीरों को देखा। इनमें दो यूरोपियन थे, जिनके सम्बन्ध में गवाह ने कुछ पूछ-ताछ की।

इसके पश्चात वे अस्पताल में गए, जहाँ उन्होंने ग़ुलाम जीलानी का बयान लिखा। उसको स्वयंसेवकों के केन्द्रस्थल पर गोली मारी गई थी। उसकी छाती और पीठ के ऊपर वाले घाव गोली के घावों के समान दिखाई पड़ते थे। उन्होंने अभियुक्त फ़क़ीरचन्द्र सेन, सहाय रामदास, सुबोधचन्द्र चौधरी और अनिलबन्धु दास के बयान लिखे थे, और इन्हें लिखने से पहिले इन लोगों को साधारण चेतावनी दे दी थी, और उन्हें खुल कर वर्णन करने को कह दिया था। जिस समय गवाह स्वीकृति के बयान दे रहा था उस समय कोई उपस्थित नहीं था। गवाह ने यह भी कहा कि स्वीकृतियाँ इच्छापूर्वक दी गई थीं। गवाह ने इसके बाद वे सारे स्वीकृति पत्र पढ़े जो उसने लिखे थे। इसने हिमांशुविमल सेन का भी जो अस्पताल में घायल पड़े थे, बयान लिखा था।

१७वीं जनवरी को अहमद अली ने बयान किया कि स्वीकृतियों की जाँच करने के लिए वे सदरघाट ब्रिज, सदरघाट क्लब और मानगुप्ता के घर गए थे, क्योंकि इन स्थानों का स्वीकृति में उल्लेख था। उन्होंने सुना कि लालमोहन ने अपने बयान को वापस ले लिया है। इसके बाद मामला स्थगित कर दिया गया।

१९ वीं जनवरी को केस फिर से प्रारम्भ हुआ। लालमोहन सेन की स्वीकृति के बयानों पर सब डिपुटी-मैजिस्ट्रेट अहमदअली से फिर से ज़िरह हुई।

एस० डी० ओ० ने कहा कि वे २३ वीं अप्रैल को १०-११ बजे सबेरे जलालाबाद पहाड़ी पर गए थे। वहाँ उन्हें एक लड़का घायल मिला। उसने अपना नाम मतीलाल क़ानूनगो बतलाया था। लड़के ने उन्हें अपनी दुर्घटना का हाल लिखा दिया। इसके बाद गवाह ने जनरल अस्पताल में रात को १० बज कर २० मिनट पर अर्धेन्दु दस्तीदार के मृत्यु-शय्या पर बयान लिए। उस समय वह घाव की पीड़ा से कराह रहा था, परन्तु वह होश में था। गवाह ने उसके बयान का अङ्गरेज़ी अनुवाद पढ़ा। इसके बाद गवाह ने कॉन्स्टेबिल प्रसन्न बरुआ का बयान पढ़ा, जो उसने मरने के पहिले ६वीं मई की रात्रि को गवाह को दिया था। प्रसन्न बरुआ ने अपने बयानों में छै डाकुओं को पकड़ने का हाल बतलाया था। डाकुओं से उसका और उसके साथी कॉन्स्टेबिलों की ख़ूब हाथापाई हुई थी। इसी झगड़े में चार डाकू छूट कर भाग गए और केवल दो पकड़े जा सके। प्रसन्न बरुआ को इसीमें गोली लगी और वह ७वीं मई को मर गया।

प्रसन्न बरुआ के बयानों के बाद गवाह ने अहमद मियाँ मोटर ड्राइवर के बयान पढ़े, जो उसने जनरल अस्पताल में लिए थे। ड्राइवर ने अपने बयानों में कहा था कि एक बाबू ने उसकी टैक्सी तीन घण्टे के लिए तीन रुपए में किराए पर की थी। बाबू टैक्सी कोतवाली के पीछे एक मकान पर ले गए, वहाँ चार आदमी उस पर सवार हुए। टैक्सी उन लोगों की आज्ञा के अनुसार पहाड़तली गई और वहाँ से फ़ौजदार हाट। इस स्थान पर पेशाब करने के बहाने गाड़ी खड़ी कर दी गई और उनमें से दो व्यक्ति दोनों ओर पिस्तौलें तान कर टैक्सी छोड़ देने के लिए कहा। जब उसने उनकी आज्ञा न मानी, तब दो आदमियों ने उसे घसीट कर सड़क पर डाल दिया और रस्सी से कस दिया।

शनाख़्त परेड

इसके बाद गवाह ने मुख़बिर फ़क़ीरसेन की शनाख़्त परेड का हाल बयान किया मुख़बिर ने अपने वक्तव्य में जिन अभियुक्तों का नाम लिया था, उनकी शनाख़्त के लिए ३७ सन्देह-जनक अभियुक्त उन्हीं की उमर और ड्रेस के ६७ आदमियों में मिला दिए गए थे। फ़क़ीरचन्द्र शनाख़्त के लिए बुर्क़ा पहिना कर लाया गया था। मुख़बिर ने सुबोध चौधरी का नाम पुकारने के उपरान्त अपना बुर्क़ा फेंक दिया और चक्कर आ जाने के कारण वह गिर पड़ा और उसके बाद उसने चिल्ला कर कहा—"तुम्हारा यह डरपोक दोस्त तुम सबको फाँसी पर चढ़ाने की आयोजना कर रहा है।" इसके बाद वह एक खिड़की से टिक गया और फूट-फूट कर रोने लगा। शनाख़्त परेड के बाद जब गवाह मुख़बिर के बयान जेल में लिख रहा था, उस समय मुख़बिर ने कहा कि उसने उन्हें होश में नहीं पहचाना था। इसके बाद एक दूसरी शनाख़्त परेड हुई, जिसमें मुख़बिर ने कुछ अभियुक्तों को पहचाना था। उस दिन की कार्यवाही इसके बाद स्थगित कर दी गई।

* * *

भविष्य की नियमावली

१—'भविष्य' प्रत्येक बृहस्पति को सुबह ४ बजे प्रकाशित हो जाता है।

२—किसी ख़ास अङ्क में छपने वाले लेख, कविताएँ अथवा सूचना आदि, कम से कम एक सप्ताह पूर्व सम्पादकों के पास पहुँच जाना चाहिए। बुधवार की रात्रि के ८ बजे तक आने वाले, केवल तार द्वारा आए हुए आवश्यक, किन्तु संक्षिप्त, समाचार आगामी अङ्क में स्थान पा सकेंगे, अन्य नहीं।

३—लेखादि काग़ज़ के एक तरफ़, हाशिया छोड़ कर और साफ़ अक्षरों में भेजना चाहिए, नहीं तो उन पर ध्यान नहीं दिया जायगा।

४—हर एक पत्र का उत्तर देना सम्पादकों के लिए सम्भव नहीं है, केवल आवश्यक, किन्तु ऐसे ही पत्रों का उत्तर दिया जायगा, जिनके साथ पते का टिकट लगा हुआ लिफ़ाफ़ा अथवा कार्ड होगा, अन्यथा नहीं।

५—कोई भी लेख, कविता, समाचार अथवा सूचना बिना सम्पादकों का पूर्णतः इतमीनान हुए 'भविष्य' में कदापि न छप सकेंगे। सम्वाददाताओं का नाम, यदि वे मना कर देंगे तो, न छापा जायगा, किन्तु उनका पूरा पता हमारे यहाँ अवश्य रहना चाहिए। गुमनाम पत्रों पर ध्यान नहीं दिया जायगा।

६—लेख, पत्र अथवा समाचारादि बहुत ही संक्षिप्त रूप में लिख कर भेजना चाहिए।

७—समालोचना के लिए प्रत्येक पुस्तक की दो प्रतियाँ आनी चाहिएँ।

८—परिवर्तन में आने वाली पत्र-पत्रिकाएँ तथा पुस्तकें आदि सम्पादक "भविष्य" (किसी व्यक्ति-विशेष के नाम से नहीं) और प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र तथा चन्दा वग़ैरह मैनेजर "भविष्य" चन्द्रलोक, इलाहाबाद के पते से आना चाहिए। प्रबन्ध-विभाग सम्बन्धी पत्र सम्पादकों के पते से भेजने में उनका आदेश पालन करने में असाधारण देरी हो सकती है, जिसके लिए किसी भी हालत में संस्था ज़िम्मेदार न होगी !!

९—सम्पादकीय विभाग सम्बन्धी पत्र तथा प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र अलग-अलग आना चाहिए। यदि एक ही लिफ़ाफ़े में भेजा जाय तो अन्दर दूसरे पते का कवर भिन्न होना चाहिए।

१०—किसी व्यक्ति-विशेष के नाम भेजे हुए पत्र पर नाम के अतिरिक्त "Personal" शब्द का होना परमावश्यक है, नहीं तो उसे संस्था का कोई भी कर्मचारी साधारण स्थिति में खोल सकता है और पत्रोत्तर में असाधारण देरी हो सकती है।

—मैनेजिङ्ग डाइरेक्टर

सम्पादकीय विचार

भविष्य

२९ जनवरी, सन् १९३१

काले क़ानून के कारण—

क्या कीजिएगा हाले-दिले—
ज़ार देख कर !
मतलब निकाल लीजिए
अख़बार देख कर !!

१०००) रु० की ज़मानत

नए प्रेस-ऑर्डिनेन्स के अनुसार २३ जनवरी को १ बजे यू० पी० गवर्नमेण्ट के चीफ़ सेक्रेटरी चौबे (कुँवर) जगदीशप्रसाद द्वारा हस्ताक्षरित एक नोटिस श्री० सहगल जी को मिला, जिसमें १०००) रु० की ज़मानत २ दिन के भीतर डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट के पास दाख़िल करने की आज्ञा उन्हें प्रेस (फ़ाईन आर्ट प्रिन्टिङ्ग कॉटेज) के 'कीपर' की हैसियत से—जिसमें 'भविष्य' मुद्रित होता है—दी गई थी। पुलिस का अफ़सर वास्तव में दो नोटिस लाया था—एक मुद्रक के नाम, दूसरा प्रकाशक के नाम—दोनों में एक-एक हज़ार की ज़मानतें माँगी गई थीं, किन्तु स्थानीय ज़िला मैजिस्ट्रेट के नाम चौबे जी की यह हिदायत थी, कि यदि मुद्रक और प्रकाशक एक ही व्यक्ति हो, तो एक ही ज़मानत—केवल प्रेस की "कीपर" की हैसियत से माँगी जावे।

इस बार इसी नोटिस के साथ पूरे २½ पृष्ठों का एक ख़रीता भी सहगल जी को मिला है जिसमें वे अंश बतलाने की कृपा की गई है, जिसके प्रकाशन को आपत्तिजनक समझ कर गवर्नमेण्ट को ज़मानत माँगने की ज़रूरत पड़ी। ये सारे अंश ८वीं जनवरी के 'भविष्य' (वर्ष १, खण्ड २, संख्या १५) से लिए गए हैं; जिनका सार पाठकों के मनोरञ्जनार्थ नीचे दिया जाता है:—

१—पहिली आपत्ति उन चित्रों और कविता पर की गई है, जो इस अङ्क के कवर पर छपी थी।

२—दूसरी आपत्ति पुलिस की लाठियों द्वारा घायल व्यक्तियों के चित्र-प्रकाशन पर की गई है, जो इसी अङ्क के पृष्ठ २, ३ और ४ पर प्रकाशित हुए थे। ख़ासकर उस चित्र पर, जिसमें एक १४ वर्षीय घायल लड़का ज़ख़्मी दिखाया गया है।

३—तीसरी आपत्ति खुली अदालत में दिए गए उस बयान के प्रकाशन पर की गई है, जो इसी अङ्क के पृष्ठ १२ पर प्रकाशित हुआ है।

४—चौथी आपत्ति विलायती 'डेलीमेल' से लॉर्ड रथरमेयर के एक लेख को इसी अङ्क में उद्धृत करने पर की गई है, जो १४वें पृष्ठ पर प्रकाशित हुआ है, इस लेख में जो हेडिङ्ग दिए गए हैं, उन पर बहुत एतराज़ किया गया है। (यद्यपि ये सारे हेडिङ्ग स्वयं लॉर्ड रथरमेयर के ही शब्द हैं)

५—पाँचवीं आपत्ति लन्दन से ख़ास 'भविष्य' के लिए आई हुई, डॉक्टर धनीराम जी 'प्रेम' की "मुख़बिर" शीर्षक कहानी के अन्तिम भाग पर की गई है, जो इसी अङ्क के १७वें पृष्ठ पर प्रकाशित हुई थी; और

६—छठी और अन्तिम आपत्ति "इतिहास के कुछ पृष्ठ" शीर्षक उस धारावाही लेख पर की गई है, जिसमें ईस्ट इण्डिया कम्पनी के ज़माने में अङ्गरेज़ों द्वारा रचे गए षड्यन्त्रों की चर्चा की गई थी। यह "भारत में अङ्गरेज़ी राज्य" शीर्षक (ज़ब्त) पुस्तक का एक अध्याय बतलाया जाता है, यद्यपि यह भी स्वीकार किया गया है कि शैली, क्रम और भाषा में परिवर्तन कर दिया गया है।

'भविष्य' द्वारा होने वाली थोड़ी-बहुत सेवाओं को दृष्टि में रखते हुए उसका बलिदान करना उचित न समझ कर, सहगल जी ने २५ तारीख़ को १,०००) रु० जमा कर दिया है और जब तक चल सके 'भविष्य' को चलाने का ही निश्चय किया गया है। यह ज़मानत विरोधपूर्वक (Under protest) दाख़िल की गई है। सहगल जी इस सम्बन्ध में चीफ़ सेक्रेटरी को एक पत्र शीघ्र ही लिखने वाले हैं, जिसकी चर्चा 'भविष्य' के आगामी अङ्क में की जायगी। उनका कहना है कि जितनी बातों पर आपत्ति प्रदर्शित की गई है, उनमें एक भी बात ऐसी नहीं है, जिसमें कुछ भी सार हो और न इनमें से कोई भी प्रकाशन क़ानूनी तौर से नाजायज़ क़रार दिया जा सकता है, यदि ऐसा नहीं था तो खुली अदालत में उन पर (सहगल जी) केस क्यों नहीं चलाया गया?

* * *

भारतीय कॉङ्ग्रेस वर्किङ्ग कमिटी के कुछ प्रतिभाशाली सदस्य

राष्ट्रपति पं० जवाहरलाल नेहरू

श्री० के० एफ़० नॉरिमन

श्री० डॉक्टर सत्यपाल

श्री० अब्बास तय्यबजी

भारतीय कॉङ्ग्रेस वर्किङ्ग कमिटी के कुछ प्रतिभाशाली सदस्य

मौलाना अब्बुल कलाम आज़ाद

पं० मोतीलाल नेहरू

डॉक्टर अन्सारी

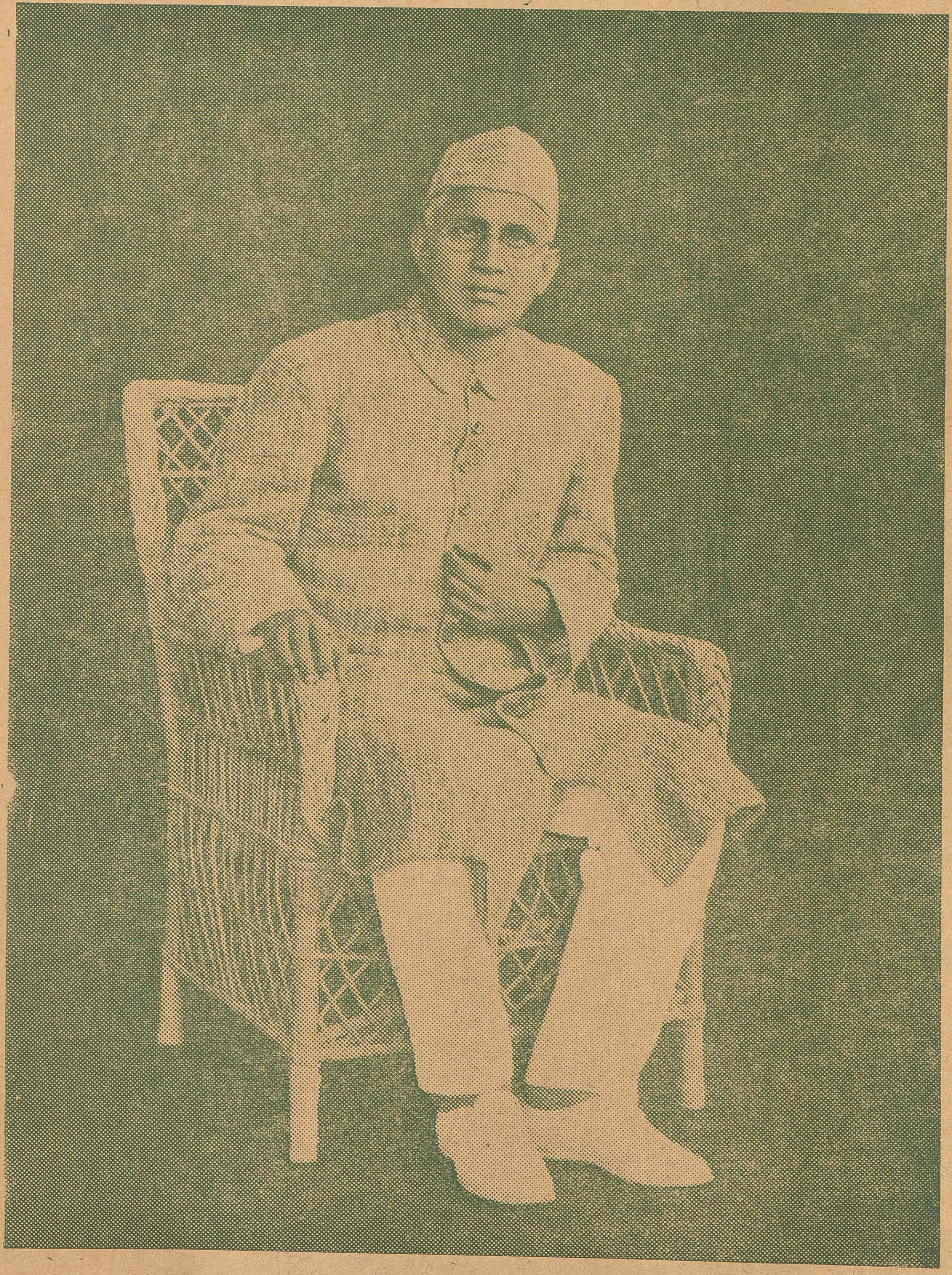

डॉक्टर सय्यद महमूद

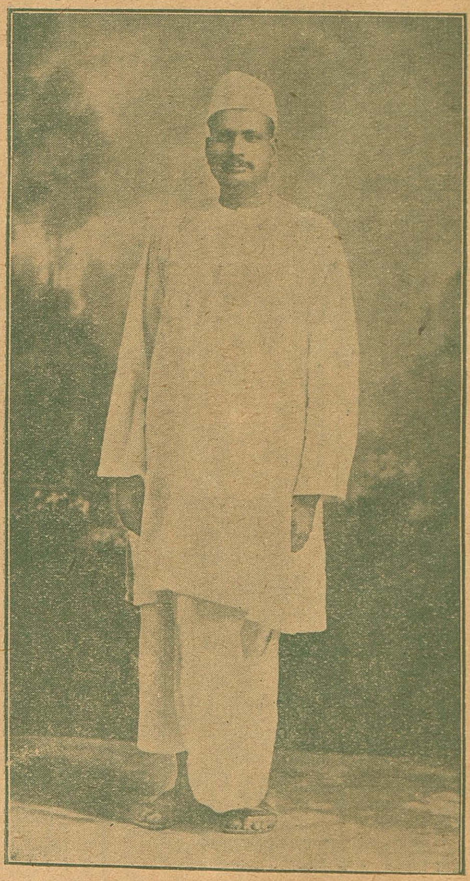

श्री० सेठ जमनालाल बजाज

भारतीय कॉङ्ग्रेस वर्किङ्ग कमिटी के कुछ प्रतिभाशाली सदस्य

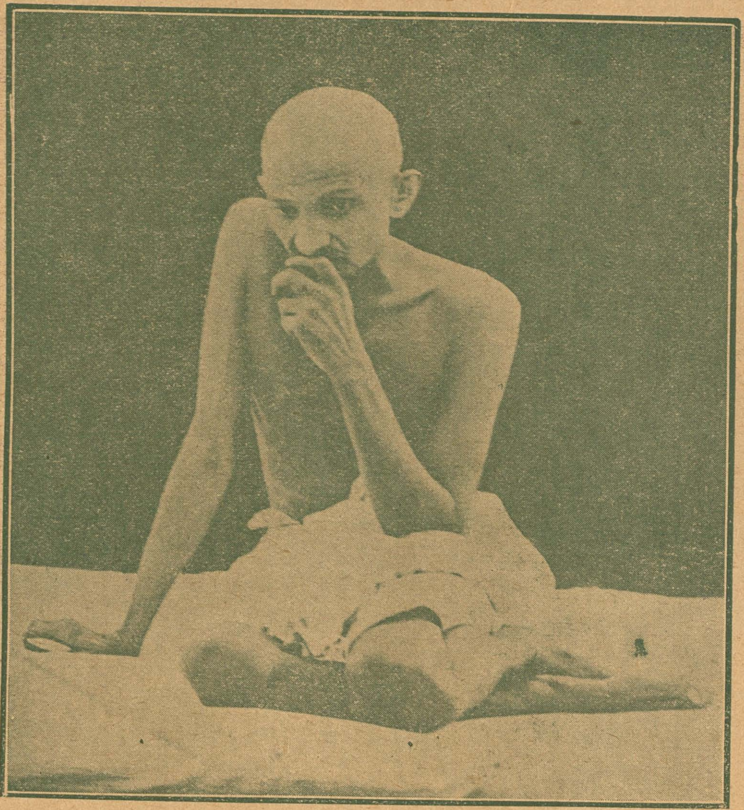

महात्मा गाँधी

सय्यद अब्दुल्ला ब्रेलवी

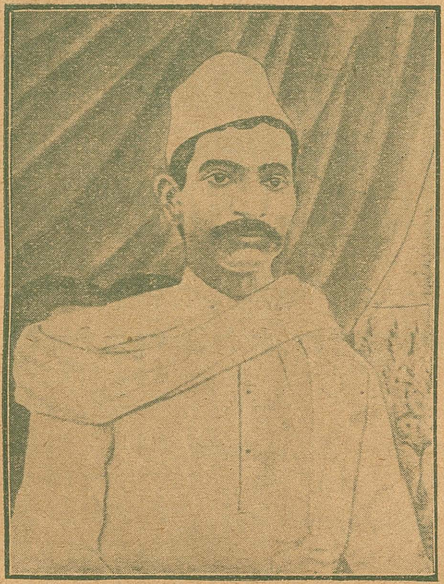

श्री० बाबू राजेन्द्रप्रसाद

श्रीमती हंसा मेहता

श्री० सरदार मङ्गलसिंह

श्रीमती देवी सरोजिनी नायडू

श्री० जे० एम० सेन गुप्ता

भारतीय कॉङ्ग्रेस वर्किङ्ग कमिटी के कुछ प्रतिभाशाली सदस्य

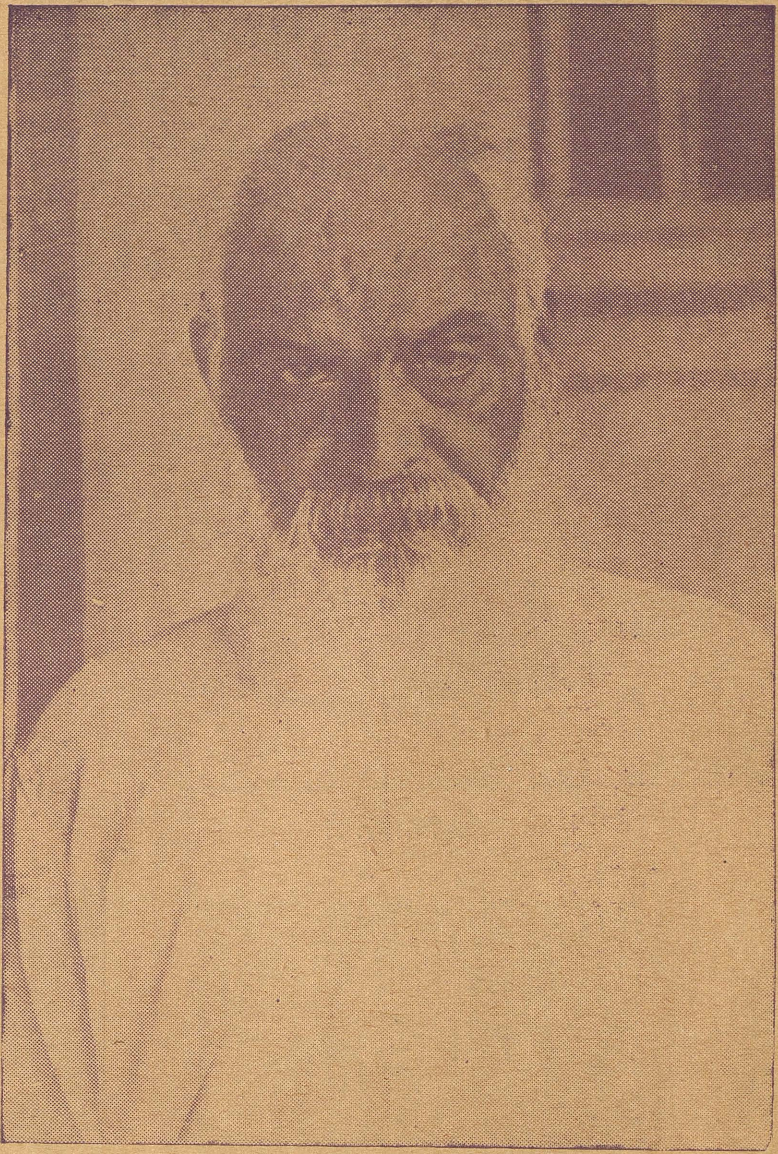

श्री० विट्ठलभाई पटेल
(यह आपका हाल ही का लिया हुआ चित्र है)

पं० मदनमोहन मालवीय

श्री० बाबू पुरुषोत्तमदास टण्डन

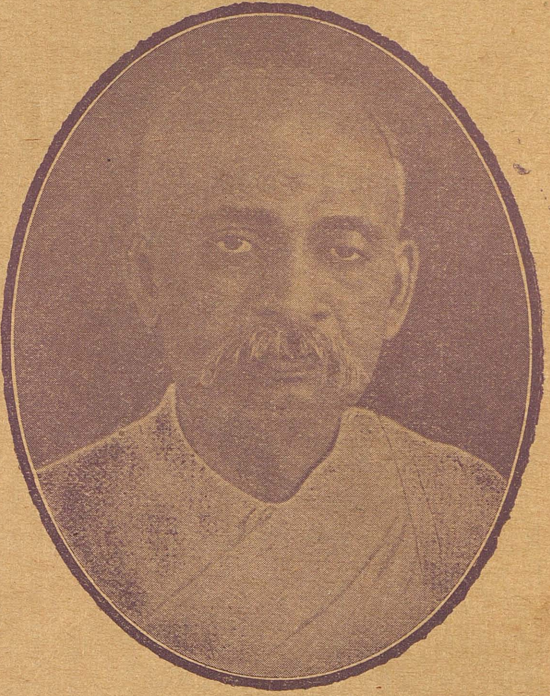

सरदार वल्लभभाई पटेल

बलिदान

[श्री० रतनचन्द जी जैन "रत्न"]

रात्रि के ग्यारह बज चुके थे। मेघमालाएँ पवन की गहरी थपकी खाकर घिरती आ रही थीं। मालूम नहीं पड़ता, एक के बाद दूसरी और कब तीसरी मिल कर घनी और विषादमय बन जातीं। किन्तु क्षणिक पवनदेव अपने आवेश को रोक कर शान्त हो ही पाए थे; इतने में समीर के लहराते हुए अञ्चल का हलका-सा झोंका मेघमालाओं को छू-सा गया, और वे बरस पड़ीं।

रात्रि इतनी अधिक गम्भीर और डरावनी थी कि रूस की प्राचीन राजधानी मास्को की प्रसिद्ध सड़कें उसके अङ्क में छिप-सी गईं।

सहसा किसी ने पुकारा—मारकुइस ! ओ ! मारकुइस !

उस अँधेरी रात्रि में किसी परिचित या अपरिचित का स्वर पहिचानना कोई कठिन बात न थी।

मारकुइस ने रूसी भाषा में कहा—ठहरो, खोलता हूँ।

क्षण भर में मारकुइस ने दरवाज़ा खोल दिया। आगन्तुक ने अन्दर प्रवेश किया। साथ ही एक लाल लिफ़ाफ़ा टेबिल पर रख दिया। और बिना कुछ कहे-सुने चला गया। लिफ़ाफ़े के अन्दर केवल एक स्लिप थी, जिसमें रूसी भाषा के इशारे मात्र अङ्कित थे। ज्योंही मारकुइस का बायाँ हाथ कमीज़ की जेब पर गया, त्यों ही दूसरा ड्रेसिङ्ग रूम के बिजली के बटन पर; क्षण भर में कमरा ज्योतिर्मय हो गया। अन्दर जाकर कपड़े पहिने, ताक से सर्चलाइट और वाटर-प्रूफ़ हाथ में लेकर तथा जूते पहिन कर वह बाहर आया। उस समय भी बूँदें टिपटिप कर रही थीं। मारकुइस ने शीघ्रता से अपने पैर बढ़ाए। परन्तु अब तक उसे दो लम्बी सड़कें और पार करनी थीं। उस समय मास्को नगर के विशाल प्रासाद अत्यन्त भयावह प्रतीत होते थे। जैसे-तैसे बेचारा मारकुइस आधे से ज़्यादा रास्ता समाप्त कर पाया था। ठण्ड इतनी ज़्यादा पड़ रही थी कि नाक और अँगुलियाँ सुन्न पड़ रही थीं। ऐसी भयानक ठण्ड की रात्रि में उस गली से होकर लोगों का आना-जाना बन्द सा हो गया था। जब कभी उस गली में एकाध मारकुइस जैसा माई का लाल अपने भाग्य का नमूना दिखाता जा रहा था। शीत अधिक होने के कारण बिलकुल सन्नाटा था। मकानों के दरवाज़े इस तौर से बन्द किए गए थे, कि उनके अन्दर पवन-देव का प्रवेश होना उतना ही मुश्किल था, जितना कि लोभी के हृदय में पुण्य का, स्वार्थी के हृदय में परमार्थ का और दुष्ट भूपति के हृदय में प्रजाहित-चिन्तन का। मारकुइस इन्हीं विचारों में मग्न, उस शून्य गली के सन्नाटे को अपने गुनगुनाने तथा बूट की ठोकरों से भङ्ग करता जा रहा था। समिति की विशाल इमारत थोड़ी ही दूर थी; लेकिन उस समय निस्तब्धता की गोद में ख़ुमारी का मज़ा लूटते हुए मॉस्को नगर की किसी भी इमारत से यह आवाज़ न आई कि ऐसी अँधेरी रात्रि में इस समय जाने वाला कौन है? भूखा है कि प्यासा, चोर है या डाकू, पागल है या सज्जन, अमीर है या ग़रीब? "हा दुर्दैव! क्या मैं ही इस काम के लिए जन्मा था?" कहते हुए वह तेज़ी से चलने लगा। सहसा किसी ने पुकारा—"कौन है?"

मारकुइस बिना किसी सङ्कोच के आगे बढ़ा। उसने कुछ उत्तर नहीं दिया। पुनः आवाज़ आई—"खड़ा रह, यदि नहीं सुनता तो देखता हूँ।" लेकिन मारकुइस और भी तेज़ी से बढ़ने लगा।

तीसरी बार आवाज़ आई—पिस्तौल दाग़ो।

इतना सुन कर मारकुइस चौंक गया और तुरन्त खड़ा हो गया। सुपरिण्टेण्डेण्ट ने नज़दीक आकर पूछा—तुम इतनी रात गए इस वक़्त कहाँ जा रहे हो?

मारकुइस ने दृढ़ता से जवाब दिया—मनुष्यता के पथ पर।

"इसके माने?"

"कुछ भी समझ लीजिए।"

"मैं जो पूछता हूँ उसका जवाब दीजिए। आप अभी जा कहाँ रहे हैं?"

"कहीं भी जा रहा होऊँ, इससे आपको कोई नुक़सान तो नहीं हुआ।"

"कैसे बोलता है?"—सुपरिण्टेण्डेण्ट ने त्योरी बदल कर कहा।

"जिस तरह आप बोलते हैं।"

"अच्छा देखता हूँ, खड़े रहो।" इतना कह कर उसने सीटी बजाई।

"खड़ा हूँ।"

फ़ौरन चार कॉन्स्टेबिल एक पुलिस-इन्सपेक्टर सहित आ धमके।

सुपरिण्टेण्डेण्ट ने हुक्म दिया—इसे पकड़ लो। राजद्रोही जान पड़ता है।

दृढ़ता से मारकुइस ने कहा—मेरे राजद्रोही होने का सुबूत?

"सुबूत-उबूत कुछ नहीं, कुछ दिन बाद तुम्हें ख़ुद पता चल जायगा।" बस, इसी नोक-झोंक पर सुपरिण्टेण्डेण्ट महोदय ने मारकुइस—अभागे मारकुइस को कठिन कारागार में ठूँस दिया।

२

उस समय ज़ारशाही के ख़ुफ़िया-विभाग के कुछ भेदियों ने मिल कर मारकुइस के घर तथा परिवार और उसके मित्रों के यहाँ पता लगाना आरम्भ कर दिया। ज़ार के भेदिए पता लगाने में एक ही थे। बस, उन्हीं के सहारे ज़ारशाही अपनी निरङ्कुशता की पराकाष्ठा तक पहुँची थी। अच्छे-अच्छे रईसों को मटियामेट कर देना उसके बाएँ हाथ का खेल था। कभी-कभी ज़ार की कोपाग्नि इतनी बढ़ जाती कि बेचारे निरपराधों को कठिन कारावास या मृत्यु-दण्ड दे दिया जाता था। यदि दुर्भाग्यवश कोई बच भी जाता तो पृथ्वी के विधाता ज़ार के सामने स्वयं उपस्थित किया जाता।

हाय! यह वही जगह है, जहाँ ज़ार की भीषण निरङ्कुशता बरस रही थी। कल यहाँ ज़ार की दुन्दुभी बजती थी, आज क्रान्ति का डङ्का बज रहा है। ज़ारशाही का भैरव-नृत्य समाप्त होने वाला है। पाप का घड़ा फूटने वाला है। लेकिन अभी बहुत देर है। क्रान्ति-चण्डी अभी और बलि चाहती है। चारों ओर हत्याकाण्ड की घटाएँ मँडरा रही हैं। क्या यह सब मिटने वाला है?

नहीं-नहीं, अनन्त सीमा के बाद। जगह-जगह लाल बादलों के टुकड़े ऐसे दीख पड़ते हैं, मानो क्रान्तिकारी सैनिकों के टुकड़े उनके ख़ून में नहला कर टाँग दिए गए हों। एक ओर घने, काले बादलों की पंक्ति सूर्य के लहू से तर बदन की ओर घूर रही थी। मानो कह रही थी कि यदि इतने पर भी ज़ारशाही अत्याचारों का अन्त न हुआ, तो जीते न बचोगे। बहुत जल चुके, लट चुके, भोली-भाली वसुन्धरा का रक्त-पान कर चुके। चारों ओर हाहाकार मचा है। कहीं-कहीं पर उस क्षुद्र आकाश में, दूर गगन में, दो-चार तारे ऐसे झिलमिल करते हैं, मानो विजयोपलक्ष में क्रान्तिकारियों ने अपनी रणचण्डी के घर में घी के दीपक जलाए हों। जब कभी कोई तारा लाल-हरा बन जाता है, तब ऐसा मालूम होता है, मानो विजय के पताके फहरा रहे हैं। सारा वायु मण्डल साँय-साँय कर रहा था, मानो ज़ार की श्मशान-भूमि हो। आकाश में पपीहे की टेंटें, गीदड़ का इधर-उधर डोलना, श्रृगाल का बोलना, सम्राट के शासन की पराकाष्ठा की सूचना दे रहे थे। रव करता हुआ पक्षी-दल अपने-अपने घोंसलों को छोड़ कर इधर-उधर भटक रहे थे मानो क्रान्ति के विपक्षी क्रान्ति से प्रेरित होकर भटकते फिरते हों। धीरे-धीरे प्रकृति शान्त हो चली थी, मानो अपना पतन जान, थक कर सो जाने की योजना कर रही हो। तो भी पन्न, तम रूस का निकट-हास्य सुनाई पड़ रहा था।

क्रूर ज़ार के हुक्म के अनुसार बेचारा मारकुइस लोहे के सीख़चों में बन्द, ज़ञ्जीरों से जकड़ा हुआ लाया गया। उसका सिर नीचा था। चेहरा गम्भीर, एक प्रकार की मुस्कराहट के साथ शान्ति विराज रही थी। आह! मारकुइस तुम हँसते हो! निस्सन्देह माता के सच्चे सपूतों को बलिवेदी पर खड़े होकर, अपनी पवित्र आहुति कर देने में तनिक देर नहीं लगती।

मारकुइस से थोड़ी दूर हट कर सम्राट ज़ार अपने मन्त्री के साथ राज-सिंहासन पर बैठा था। उसके चारों ओर ३०-४० सशस्त्र सैनिक अपनी लाल आँखें तथा नुकीली मूँछें किए जल्लादों के सदृश खड़े थे। मानो यम के दूत ग़रीब मारकुइस को कच्चा निगल जायँगे।

ज़ार ने मारकुइस से पूछा—तू राजद्रोही है?

मारकुइस—"मैं आपके सम्मुख मनुष्य के सिवा और कुछ भी नहीं हूँ।" ऐसा निठल्ला जवाब सुन कर जी-हुज़ूरों के होश उड़ गए। एक ने मारकुइस की तरफ़ घृणा और अपमान भरे कटाक्ष कर कहा—"ग़रीब-परवर! अन्नदाता! यह आदमी बड़ा ढीठ और मुँहलगा जान पड़ता है!"

इस जी-हुज़ूरी ने ज़ार की क्रोधाग्नि को और भी प्रज्वलित कर दिया। इस बार वह कड़क कर बोला—मैं सवाल करता हूँ, तुम क्रान्तिकारी हो? तुम्हारा दल कहाँ है? उसमें कितने लोग हैं? और वे कितनी वयस के हैं?

मारकुइस ने दृढ़ता से उत्तर दिया—मैं इसका उत्तर देने में उतना ही असमर्थ हूँ, जितना आप मुझे छोड़ देने में।

इतने में किसी खर-दुर्लभ स्वर ने कहा—अवश्य क्रान्तिकारी है।

"इसमें क्या शक है। छिपा रहा है।"

तीसरे ने कहा—देखने में कितना सीधा जान पड़ता है; मगर है बड़ा खोटा।

ज़ार ने कहा—कितना ही खोटा क्यों न हो, मेरे

सामने किसी की कुछ नहीं चलती। देखो अभी बतलाता है, दो-चार कोड़े पड़ने दो।

इस बार मारकुइस ने कुछ जवाब न दिया।

ज़ार ने पुनः प्रश्न किया—देखिए जनाब! यदि आप चुपचाप क्रान्तिकारी दल का पता बता देंगे, तो आप अवश्य रिहा कर दिए जायँगे। साथ-साथ पुरस्कार दिया जायगा। नहीं तो सच कहता हूँ, अभी अपने सामने तुम्हें जीते जी कुत्तों से नुचवाऊँगा। बोलो, क्या चाहते हो? सुख या दुःख, दारिद्र्य या ऐश्वर्य, जीवन या मृत्यु, प्रेम या कोप?

मारकुइस इन बातों को सुन कर तिलमिला गया। उसने तीव्र स्वर में कहा—नीच कुत्ते! तू क्या ऐश्वर्य देगा। मृत्यु से डरना कायरों का काम है। अरे! डरपोक, तू मुझे प्राण-भिक्षा देना चाहता है। नरक के कीड़े, अभी कुछ दिन और इस नरक में सड़ ले; तब जीवन-दान माँगूँगा। नर-रक्त का पिपासु पशु, प्रेम क्या जाने? तू बलपूर्वक अपहरण करने वाला है। तू रासपुटिन, प्रेटियाफ़, अनेक मिल-मालिकों, पूँजीपति, ज़मींदार, मॉर्शल, सैनिक, प्रिफ़ेक्ट इत्यादि राक्षसों से दबता है। नीच! तेरे सामने क्या बोलूँ, जो करना हो सो कर।

अन्त में क्रोधित ज़ार ने दो-चार प्रश्न और किए। लेकिन उस नौनिहाल वीर ने एक का भी उत्तर न दिया। फिर क्या था? ज़ार क्रोधान्ध होकर अपनी शक्ति पर अभिमान करने लगा। ज़ार की पशु-प्रवृत्ति प्रज्वलित हो उठी। सैनिकों को आज्ञा हुई—"इसको क्रूस पर लटका दो। लेकिन ठहरो, इसके कुटुम्बी-जन कहाँ हैं?" क्षण भर में वृद्ध माता तथा सुकुमार पत्नी और दो बच्चे हथकड़ी बेड़ी सहित ज़ार के सामने लाए गए।

मारकुइस सिर नीचा किए खड़ा था। क्रूर ज़ार के प्रश्न पर प्रश्न हो रहे थे। अन्त में उसने वही 'शब्द' फिर दुहराए—"प्राण-दण्ड चाहते हो या जीवन-दान?" इस प्रश्न के दो मिनट बाद तक शान्ति रही। लेकिन किसी ने कुछ उत्तर न दिया।

ज़ार ने पुनः प्रश्न किया—तुम अपने परिवार से कुछ पूछना चाहते हो?

मारकुइस ने गम्भीरता से जवाब दिया—'हाँ!' मारकुइस ने अपने अभिन्न-हृदय की ओर देखा। अहा! प्रकृत सुन्दर मारकुइस उस समय और भी सुन्दर हो गया था। मानो मन ही मन स्वयं मुग्ध हो रहा हो। उस समय मारकुइस ऐसा जान पड़ता था, मानो कोई देवता खड़ा हो।

उसने कहा—मेरे प्यारे कुटुम्बियो!

सब लोग हाथ जोड़ कर बोले—कहिए!

"आप लोग मृत्यु से डरते हैं?"

एक आवाज़ आई—"नहीं।"

"मेरे प्यारे कुटुम्बी जन! यह क्यों?"

"आज़ादी के लिए मरना श्रेयस्कर है। अर्थात् दूसरों के हित के लिए मरना मोक्ष-प्राप्ति का उपाय है। आत्म-बलिदान में बड़ा भारी आनन्द और पुण्य है।"

सहसा एक बड़े ज़ोर का धड़ाका हुआ। देखते ही देखते वृद्ध माता और सुकुमार पत्नी, माता वसुन्धरा की छाती पर लोट गईं।

"अब भी क्षमा माँग ले।" उत्तर मिला—"हर्गिज़ नहीं। चुप रह, तुझको क्षमादान करने का क्या अधिकार है?"

ज़ार ने क्रोधित होकर कहा—अच्छा सँभल जा। तेरे अपराधों का दण्ड केवल मृत्यु है। अस्तु, मरने के लिए तैयार हो जा।

क्रूर ज़ार ने जल्लादों से पूछा—सब ठीक है?

"जी हाँ!"

"तो इस पापी को क्रूस पर लटका दो और मेरे सामने ही इस पापी के हाथ-पैरों में कीलें ठोंक दी जायँ।"

क्षण भर बाद मारकुइस क्रूस पर चढ़ा दिया गया। कील ठोंकने भर की देर थी। इतने में आवाज़ हुई—'ठहरो'। साथ ही दूसरी आवाज़ हुई—'प्रजातन्त्र की जय'। जय-घोष के साथ ही एक और धड़ाका हुआ। शीघ्र ही मारकुइस के हाथ-पैरों में कीलें जड़ दी गईं। अब बच्चों की बारी आई।

सम्राट ज़ार ने आगे बढ़ कर कहा—बच्चो! अभी बच सकते हो। तुमने यह सब देख ही लिया। बतलाओ, क्या चाहते हो!

दोनों का उत्तर एक ही था—"कुछ नहीं।"

उनकी ग़रीब आँखें किसी के देखने को छटपटा रही थीं। किन्तु वहाँ क्या था? माता नहीं थी। वह तो कुछ देर पहिले माता वसुन्धरा की गोद में सो चुकी। तो क्या दादी को ढूँढ़ रहे थे? नहीं, वह उसके साथ ही मर चुकी थी। तब क्या ग़रीब मारकुइस को देखना चाहते थे? नहीं, वह भी न मिल सका। शायद कुछ ही पहिले क्रूर ज़ार के चरणों पर वह भी अर्पित किया जा चुका था। आह! पाशविक वृत्ति, तू सचमुच बड़ी भयानक होती है। तेरे कारण मनुष्य जिसे झूठ समझता है, वह झूठ है। नेत्रों के रहते हुए वह अन्धा और बुद्धि के रहते हुए घोर मूर्ख बन जाता है। ज्योंही समय आया, बच्चे सामने लाए गए। ज़ार ने कहा—बच्चो, क्षमा माँग लो, नहीं तो वह लौह-यन्त्र मँगाया जाता है।

बच्चों ने कहा—यदि आपके राज्य में राज-भक्ति पुण्य है और प्रजा-भक्ति पाप, तो हम किसी तरह भी क्षमा-याचना नहीं चाहते।

सम्राट—ख़ैर, मैं इस समय तुमसे बहस नहीं करना चाहता। बताओ, तुम क्षमा-प्रार्थना करने के लिए तैयार हो कि नहीं। यदि नहीं, तो लौह-यन्त्र चलाया जाता है। न्याय-रक्षा हेतु अन्तिम बार कहता हूँ—क्षमा-प्रार्थना कर लो। बस, तुम्हारा प्रायश्चित हो चुका।

बच्चों ने मुस्करा कर जवाब दिया—"तुम जो करना चाहो करो। हमसे क्षमा-प्रार्थना नहीं हो सकती, इसकी आशा व्यर्थ करते हो। यदि हम लोग तुम्हें सच्चा सम्राट मानते तो अवश्य ऐसा करते; किन्तु तुम जैसे पाशविक लुटेरों से क्षमा-याचना कैसी? सम्राट बलपूर्वक अपहरण कर सकता है, न्याय का गला घोंट सकता है, उसको किसी के रक्त चूसने की याद हो सकती है। किन्तु हम लोग ऐसे मनुष्यता के द्रोही को 'सम्राट' कह कर हर्गिज़ अपने को कलङ्कित नहीं कर सकते। मनुष्यता के नाम पर राक्षसी कार्य करने वाले के साथ क्षमा-याचना कैसी? तुम यन्त्र से हम लोगों का गला दबा दो, उसी में मङ्गल है। इसीसे तुमसे ईश्वर प्रसन्न रहेगा, पाप का घड़ा फूटेगा और साथ-साथ मुक्ति भी मिलेगी।

सम्राट ज़ार ने कहा—"यह लोग भले आदमी और सौजन्य के साथ मानने वाले नहीं हैं। लाओ यन्त्र और इन दोनों को अच्छी तरह कस दो।" उस समय बच्चों के मुख पर जननी जन्म-भूमि के प्रति समवेदना थी, दया थी और थी भीषण पवित्रता। बच्चे समझ रहे थे, अब लौह-यन्त्र चला और तब चला। सहसा चलने भी लगा। लोहे के काँटे चारों ओर से लपलपाती जीभें निकाल कर बच्चों के कुसुम-कोमल कलेवर से सट गए और उनका ख़ून पीने लगे। बेचारे बच्चे असहनीय वेदना से बेज़ार होने लगे। उन्होंने महसूस किया, क्षण भर बाद सारे लोह-कण्टक शरीर में धँस जाएँगे और प्राणान्त हो जायगा। दोनों के मुख पर अन्तिम लालिमा, प्रभात के उगते हुए सूर्य की नाईं, दौड़ गई। दुष्ट ज़ार ने एक बार फिर कहा—"अब भी प्राणदान माँग लो।"

"माँगेंगे, पर तुम्हारे नाश के लिए।"

बच्चों को इस समय असहनीय पीड़ा हो रही थी। काँटे सारे शरीर में धँस गए थे, फिर भी उन्होंने दृढ़ होकर कहा—परम पिता! क्षमा। साथ ही इस पिशाच को सुबुद्धि देना।

इस बार सम्राट ज़ार क्रोध से काँपने लगा। उसने गरज कर कहा—चलाओ, ख़ूब ज़ोर से चलाओ। इन मूर्खों की जीवन-लीला समाप्त कर अभी ज़मीन में गाड़ दो। ये हमारा नाश करेंगे।

यन्त्र के क्रूर लौह-कण्टकों ने भरपूर रक्तपान कर, अपनी प्यास अच्छी तरह बुझाई। उन नौनिहाल वीरों ने किसी तरह भी क्षमा-याचना न की।

देखते ही देखते दोनों बच्चों की वीर आत्मा माता वसुन्धरा के हेतु अर्पित हो गई। साथ ही उसका अञ्चल उन वीरों के उष्ण रक्त की धाराओं से रँग कर लपलपाने लगा।

दानवता के राक्षसों ने देशभक्तों का मरना स्पर्धापूर्ण हँसी हँस कर देखा। उस समय पृथ्वी में दया और करुणा नहीं के बराबर शेष रह गई थीं। वीर बच्चों ने छटपटा-छटपटा कर भले ही प्राण दे दिए थे, लेकिन वह ईश्वर, जिसे लोग मायावी कहते हैं, विमुख था। धरती माता ने अवश्य दो आँसू गिराए। उस समय भगवान भास्कर चमकीली चादर ओढ़े अस्ताचल की ओर तेज़ी से जा रहे थे। किञ्चित वे भी ठहर गए, उस समय ऐसा प्रतीत होता था कि माता वसुन्धरा शहीदों के रक्त पर अवश्य आँसू गिरा रही हैं। वह जगह श्मशान की नाईं सायँ-सायँ कर रही थी।

* * *

यह गुलशन है हमारा!

[जनाब "शातिर" इलाहाबादी]

यह प्यारा हिन्द है मसकन[१] हमारा!
यह घर है यह नशेमन[२] है हमारा!
हम इसके गुल,[३] यह गुलशन[४] है हमारा!

यहाँ के फूल-पत्ते ख़ुशनुमा हैं!
जो रङ्गो-बू में आलम से जुदा हैं!
हम इसके गुल, यह गुलशन है हमारा!!

निशात[५] अङ्गेज़ तेज़े नग़मा[६] ख़्वानी!
पपीहे और कोयल की ज़बानी!
हम इसके गुल, यह गुलशन है हमारा!!

यह काली-काली सावन की घटाएँ!
घटा के साथ यह ठण्ढी हवाएँ!
हम इसके गुल, यह गुलशन है हमारा!!

यह जुगनू का दमकना जङ्गलों में!
यह बिजली का चमकना बादलों में!
हम इसके गुल, यह गुलशन है हमारा!!

यह गङ्गा का बड़े ज़ोरों में बहना!
यह जमना का लबे[७] साहिल से कहना!
हम इसके गुल, यह गुलशन है हमारा!!

ज़माने के पहाड़ों से निराला!
हिमाला है, हिमाला है, हिमाला!
हम इसके गुल, यह गुलशन है हमारा!!

हमारे लब पे चर्चा है इसी का!
हमारे सर में सौदा है इसी का!
हम इसके गुल, यह गुलशन है हमारा!!

भुलाएगा कोई क्या इसको "शातिर"!
जिएँगे सब मरेंगे इसके ख़ातिर!
हम इसके गुल, यह गुलशन है हमारा!!

१—घर, २—घोंसला, ३—फूल, ४—बाग़, ५—आनन्द देने वाली, ६—गाना, ७—किनारा।

सुप्रसिद्ध भारतीय राजनीतिज्ञों के मुक़द्दमे

२—बाबू अरविन्द घोष : १९०८–१९०९

भारत में आज तक जितने राजनैतिक मुक़द्दमे हुए हैं, उनमें सब से अधिक सनसनीपूर्ण १९०८-९ का अलीपूर का मुक़द्दमा है। वह समय भारत में हिंसात्मक क्रान्ति का प्रारम्भिक काल था और उसी समय बम का आविर्भाव हुआ था। पहिले ही बम के धड़ाके ने दो निर्दोष यूरोपियन मेमों की हत्या कर डाली थी। उस समय इससे अधिक सनसनीपूर्ण दुर्घटना न घट सकती थी। इस सम्बन्ध में कलकत्ते के बहुत से प्रतिष्ठित व्यक्तियों के घरों की तलाशियाँ ली गईं और बहुत से गिरफ़्तार कर लिए गए। मुक़द्दमे की पैरवी के समय इस भयङ्कर षड्यन्त्र के रहस्य का जो भण्डा-फोड़ हुआ था, उससे केवल उस समय की राजधानी कलकत्ता ही नहीं, वरन् समस्त भारत भय और आश्चर्य में डूब गया था। इस मुक़द्दमे में जो मुख़बिर हुआ था, वह मैजिस्ट्रेट के सम्मुख गवाही देने के उपरान्त, मुक़द्दमे के अलीपूर सेशन्स कोर्ट में पहुँचने के पहिले ही, अलीपूर जेल के अन्दर गोली से उड़ा दिया गया था। सरकार की ओर से कलकत्ता हाईकोर्ट के प्रतिभाशाली वकील एर्डले नार्टन कई अन्य सहायकों के साथ खड़े हुए थे और श्री० अरविन्द घोष की ओर से पहिले तो श्री० बी० एम० चटर्जी और श्री० बी० चक्रवर्ती खड़े हुए थे, परन्तु बाद में श्री० सी० आर० दास ने मुक़द्दमा अपने हाथ में ले लिया था। ऐसे प्रतिभाशाली वकीलों की कार्यवाही ने मुक़द्दमे को और भी अधिक सनसनीपूर्ण बना दिया था।

२री मई सन् १९०८ को जिस समय बाबू अरविन्द घोष अपने स्कॉट्स लेन वाले घर में सोकर उठे, उस समय उन्हें मालूम हुआ कि उनका घर पुलिस वालों से घिरा हुआ है। थोड़ी देर के उपरान्त उन्हें एक वारण्ट दिखाया गया और उनके घर की तलाशी ली गई। उसके बाद पुलिस उन्हें पुलिस-कमिश्नर के पास ले गई और वे लाल बाज़ार की हवालात में बन्द कर दिए गए। उन्होंने कमिश्नर के सम्मुख अपना बयान देने से साफ़ इन्कार कर दिया। इस मुक़द्दमे में अभियुक्त तीन दलों में विभक्त कर दिए गए थे और अरविन्द बाबू तीस अभियुक्तों के उस दल में थे, जिसमें उनके छोटे भाई बीरेन्द्रकुमार घोष भी सम्मिलित थे।

अरविन्द बाबू का दल दूसरा था और उसकी पैरवी अलीपूर के डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट मि० बिर्ले के सम्मुख १८वीं मई को प्रारम्भ हुई थी। सरकारी वकील मि० नार्टन ने अपने प्रारम्भिक भाषण में अरविन्द बाबू की अद्वितीय प्रतिभा, उच्च शिक्षा, अनन्य देशभक्ति और आत्म-बलिदान के ख़ूब गुण गाए और अन्त में यह कह कर कि वे ही बङ्गाल के क्रान्तिकारी आन्दोलन के निर्माता और सर्वस्व हैं, उसे समाप्त कर दिया। मुक़द्दमे की पैरवी केवल इसीलिए सनसनी फैलाने वाली नहीं थी कि उसमें भयङ्कर षड्यन्त्रों के रहस्यों का पता लगा था, बल्कि उसमें बीच-बीच में वकीलों में जो बहस होती थी, उसके कारण भी लोगों की उसमें बहुत दिलचस्पी बढ़ गई थी। और इसीलिए मुक़द्दमे की कार्यवाही भी प्रायः सभी पत्रों में अक्षरशः प्रकाशित होती जाती थी। ऐसी ही एक मनोरञ्जक घटना निम्न-प्रकार है :—

मि० नार्टन—मेरा ख़याल है कि अरविन्द घोष के फ़ोटो की बहुत सी प्रतियाँ बाँटने के लिए तैयार की गई होंगी।

मि० चटर्जी—आप यह कैसे जान सकते हैं कि वे बाँटने के लिए तैयार की गई थीं? आपको ऐसा कहने का कोई अधिकार नहीं है।

मि० नार्टन—मुझे अनुमान करने का पूरा अधिकार है।

मि० चटर्जी—नहीं, आपको कोई अधिकार नहीं है।

तपस्वी अरविन्द घोष

मि० नार्टन—मुझे वक्तृता न दो। (दूसरी ओर मुँह फेर कर) इन्हीं नवयुवकों ने ही तो बङ्गाल के वकालत के पेशे को गन्दा कर दिया है। (उनकी इस युक्ति पर, वहाँ जितने आदमी उपस्थित थे, सभी खिलखिला कर हँस पड़े।)

मालूम होता है कि मि० नार्टन को क्रान्तिकारी दल के बहुत से पत्र मिले थे, जिनमें उन्हें जान से मार डालने की धमकी दी गई थी। एक दिन पैरवी के अन्त में उन्होंने कहा—"मैंने आप लोगों का क्या बिगाड़ा है, जो आप मेरी जान लेने पर तुले हैं।" उत्तर में अभियुक्तों ने कहा कि "तुमने हमें दोषी क़रार दिया है।" इस पर मि० नार्टन ने कहा कि "अभी तक तो मैंने दोषी क़रार नहीं दिया, परन्तु अब जितना जल्दी हो सकेगा, कर दूँगा।" एक अभियुक्त ने फिर क्रोधपूर्वक उत्तर दिया कि "उस समय के आने के पहिले ही आप रसातल भेज दिए जायँगे।" इस उत्तर से मि० नार्टन एक रूखी हँसी हँस कर एक ओर को चले गए।

सरकारी गवाहियों की भरमार के कारण पैरवी की प्रगति बहुत धीमी थी। केवल गवाहियाँ ही नहीं, बहुत सी किताबों, हस्त-लिपियों, चिट्ठियों और फ़ोटो के सबूतों से भी कुछ कम विलम्ब नहीं हुआ। अन्त में १८ वीं अगस्त, सन् १९०८ को मुक़द्दमा सेशन्स सुपुर्द कर दिया गया।

बाबू अरविन्द घोष पर भारतीय दण्ड-विधान की कई धाराओं के अभियोग लगाए गए थे, जिनमें से मुख्य १२१ और १२१ 'ए' मुख्य थीं, जिनके अनुसार वे क्रमशः राजविद्रोहात्मक षड्यन्त्र और सम्राट के विरुद्ध युद्ध छेड़ने के अपराधी ठहराए गए थे। उनके ऊपर 'शस्त्र क़ानून' (Arms Act) के भी अभियोग लगाए गए थे। उनके भाई पर उपर्युक्त सभी अभियोगों के अतिरिक्त हत्या और हत्या करने के लिए दूसरे व्यक्तियों को भड़काने के भी अभियोग लगाए गए थे। श्री० बी० चक्रवर्ती, जो 'बन्देमातरम्' केस में, बाबू अरविन्द घोष की ओर से खड़े हुए थे, उनकी ओर से सेशन्स की पैरवी में भी खड़े हुए। इस मुक़द्दमे के ख़र्च के लिए बाबू अरविन्द घोष की ओर से उनकी भगिनी ने देश से अपील की और देश ने कुछ ही महीनों में छब्बीस हज़ार की थैली उनकी झोली में डाल दी।

सेशन्स की पैरवी ठीक १९वीं अक्टूबर, सन् १९०८ को अलीपूर के सेशन्स जज मि० बीचक्राफ़्ट आई० सी० एस० की अदालत में प्रारम्भ हो गई। दो बङ्गाली महाशय असेसर नियुक्त किए गए। मि० नार्टन ने २० तारीख़ को मुक़द्दमा प्रारम्भ कर दिया। जिस समय मुक़द्दमे की पैरवी हो रही थी, उसी समय अरविन्द बाबू के केम्ब्रिज के पुराने सहपाठी मि० फ़ैरर्स भारत-भ्रमण के लिए निकले थे। उन्होंने अदालत से आज्ञा लेकर श्री० अरविन्द से मुलाक़ात की और उनकी घण्टों बातें हुईं। अरविन्द बाबू के इस परिवर्तन से मि० फ़ैरर्स के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। क्योंकि इङ्गलैण्ड में अरविन्द घोष क्रान्ति के लिए नहीं, अपनी साहित्यिक प्रतिभा के लिए प्रसिद्ध थे, और उस समय तक उनके पुराने मित्र उनकी प्रतिभा की प्रशंसा के गीत गाया करते थे।

सेशन्स कोर्ट की पैरवी में भी मनोरञ्जन का कुछ कम भाग न था और उसका बहुत-कुछ श्रेय मि० नार्टन को भी था। एक बार जब पैरवी में यह प्रश्न उपस्थित हुआ कि मनीऑर्डर पर दस्तख़त किस प्रकार किए जाते हैं, तब मि० नार्टन ने कहा कि "मुझे अपने जीवन में कभी मनीऑर्डर नहीं मिला और न उस पर कभी दस्तख़त करने की ही आवश्यकता पड़ी। मैं अपने मवक्किलों से सदैव पेशगी रुपया ले लिया करता हूँ।" इसी प्रकार जब प्रफुल्ल चाकी की फ़ोटो पेश की गई, जिन्होंने अपनी आत्म-हत्या कर ली थी, तब मि० नार्टन बच्चों का भोलापन दिखाते हुए बोले कि "फ़ोटो किसी मकान का है या घोड़े या ऊँट का।" उनके मुँह से ये शब्द निकलते ही अदालत में हँसी का फ़व्वारा फूट पड़ा।

अन्त में स्वर्गीय देशबन्धु दास ने मुक़द्दमे में हाथ लगाया और उनके सामने मि० नार्टन को लेने के देने पड़ गए। उनकी प्रतिभा के सामने उनका टिकना मुश्किल हो गया। उन दोनों के वाक्-युद्ध की खींचातानी और उसका मनोरञ्जन अपूर्व था। मि० नार्टन ने अरविन्द बाबू के पत्रों के उस 'आध्यात्मिक' भाव को, जिसमें एक रुपया में पन्द्रह आने दान करने का उल्लेख था, तोड़-मरोड़ कर उन्हें दुश्चरित्र साबित करने का बहुत प्रयत्न किया, परन्तु उनकी दाल नहीं गली।

पैरवी के अन्त में मि० नार्टन ने पूरे १४ दिनों तक अदालत के सम्मुख अपना भाषण दिया और उसके हर एक शब्द में उन्होंने अरविन्द बाबू को दोषी साबित करने का प्रयत्न किया। उनके विरुद्ध श्री० दास ने अपनी

(शेष मैटर १६वें पृष्ठ के पहले कॉलम के नीचे देखिए)

१९३० की लन्दन-नेवल कॉन्फ़्रेन्स

[श्री० प्रभुदयाल जी मेहरोत्रा, एम० ए०, रिसर्च-स्कॉलर]

"अगर यूरोप में एक और युद्ध हुआ तो हमारी शताब्दियों की सभ्यता का, रोम की सभ्यता की भाँति, अन्त हो जावेगा।"

—बाल्डविन

१९२९ में इङ्गलैण्ड में मज़दूर-दल शासनारूढ़ हुआ और मिस्टर मैकडॉनल्ड इसके प्रधान-मन्त्री हुए। १९२७ की कूलिज कॉन्फ़्रेन्स (Coolidge Conference) के असफल होने के उपरान्त इङ्गलैण्ड और अमेरिका में मनमुटाव हो गया। इस मनमुटाव को दूर करने के हेतु तथा दोनों राष्ट्रों में सद्भाव उत्पन्न करने के लिए, मौक़ा पाते ही मि० मैकडॉनल्ड अमेरिका गए। वहाँ जाकर उन्होंने प्रेज़िडेण्ट हूवर (President Hoover) से परामर्श किया। इस परामर्श में हूवर साहब ने मि० मैकडॉनल्ड को पारस्परिक मनमुटाव का कारण बतलाया। उपरोक्त सज्जनों ने यह भी निर्णय किया कि आपस में समझौता करने के लिए वे लोग उन प्रश्नों पर विचार करेंगे।

२२वीं नवम्बर को अमेरिका के भूतपूर्व सेक्रेटरी आफ़ स्टेट्स मिस्टर केलॉग (Kellogg) लन्दन के पिलग्रिम्स क्लब (Pilgrims Club) के मेहमान थे। उस समय विसकाउण्ड सेसिल (Viscount Cecil) ने व्याख्यान देते हुए कहा था कि केलॉग इतिहास में शान्ति के सब से बड़े पुजारी लिखे जावेंगे। केलॉग पैक्ट ने बहुत कुछ कर दिखाया था। उसने इस बात पर बहुत ज़ोर दिया था कि भविष्य में युद्ध-रूपी भूत से बचने के लिए ठोस काम और त्याग की आवश्यकता है। पाठकों को याद होगा कि महायुद्ध के बाद अमेरिका ने लीग तथा शान्ति-आन्दोलन से अपना सम्बन्ध विच्छेद कर लिया था। पर केलॉग के मन्त्रित्व में अमेरिका पुनः पुराने पथ पर आ गया। सेसिल साहब ने यह भी घोषणा की कि नाविक प्रश्न पर बातचीत हो रही है। और दो महीने के अन्दर ही एक कॉन्फ़्रेन्स में इस विषय पर विचार होगा। मिस्टर केलॉग ने उत्तर देते हुए कहा कि पारस्परिक विश्वास के आधार पर ही संसार की शान्ति रूपी इमारत खड़ी की जा सकती है। आपने आपस के झगड़ों को शान्ति से तय करने पर विशेष ज़ोर दिया। अन्त में आपने पीस पैक्ट को सफल बनाने के लिए निम्न-लिखित विचार रक्खे :—

(१) संसार की जनता को शान्ति-आदर्शों में शिक्षित किया जावे। गिरजाघर, कॉलेज तथा व्यापारिक और नागरिक सङ्घ विशेषतः यह काम करें।

(२) आपस के झगड़ों को शान्ति से तय कर लिया जावे।

(३) शस्त्रों को परिमित करना। आपस में कोई भी ऐसी लाग-डाँट न होने देना, जो हमें युद्ध की ओर ले जावे।

यूरोप के राष्ट्र निशस्त्रीकरण (Disarmament) की नीति पर किस तरह अमल कर रहे हैं!

२१वीं जनवरी १९३० को लन्दन में नाविक कॉन्फ़्रेन्स का अधिवेशन हुआ। इसमें इङ्गलैण्ड, अमेरिका, फ़्रान्स, इटली तथा जापान राष्ट्र सम्मिलित थे। इसका उद्घाटन स्वयं बादशाह सलामत ने किया। आपने प्रतिनिधियों का स्वागत करते हुए नाविक शस्त्रों को परिमित करने पर ज़ोर दिया। आपने अपने व्याख्यान के अन्त में कहा—"मुझे आशा है कि इस कॉन्फ़्रेन्स के परिणाम-स्वरूप शस्त्रों का भारी बोझ, जो इस समय संसार पर लदा है, शीघ्र ही घट जावेगा। लीग के निःशस्त्रीकरण कमीशन का काम सरल हो जावेगा, और वह दिन शीघ्र आवेगा, जब कि एक सर्वव्यापी निःशस्त्रीकरण कॉन्फ़्रेन्स इस समस्या को पूर्णतया हल करेगी।"

सर्वसम्मति से मिस्टर मैकडॉनल्ड इस कॉन्फ़्रेन्स के सभापति चुने गए। आपने भी अपने भाषण में शस्त्रों के बोझ की तरफ़ लोगों का ध्यान आकर्षित करते हुए पारस्परिक विश्वास पर ज़ोर दिया। और पारस्परिक लाग-डाँट को रोकने की अपील की। उन्होंने सन् १९१९ से शान्ति का इतिहास समझाया तथा बताया कि संसार ने शान्ति की समस्या को अभी हल नहीं कर पाया है। अमेरिका के प्रतिनिधियों के नेता स्टिमसन ने कहा कि गुप्त नीति को दूर करना, आपस की लाग-डाँट तथा जलन को मिटाना तथा प्रत्येक राष्ट्र को उसकी रक्षा के उतने ही उचित साधन देना, जितने से उसके पड़ोसी राष्ट्रों के हृदय में घबड़ाहट तथा अविश्वास पैदा न हो, यही इस कॉन्फ़्रेन्स का लक्ष्य है। भारतवर्ष की तरफ़ से सर अतुल चटर्जी ने आशा प्रकट की कि कॉन्फ़्रेन्स के उद्योग का परिणाम यह होगा कि संसार को शान्ति मिलेगी। आपने कहा—"मेरे देशवासियों को भारतवर्ष के इस ऐतिहासिक अन्तर्राष्ट्रीय सभा में भाग लेने पर गर्व है।" फ़्रान्स, इटली और जापान की ओर से टारडिउ सिगनर ग्रायडी तथा मिस्टर वाकाट्सुकी (Wakatsuki) ने भी बारी-बारी से अपने-अपने विचार प्रकट किए।

कॉन्फ़्रेन्स की प्रारम्भिक बैठक में मि० स्टिमसन ने अमेरिका के प्रस्तावों का दिग्दर्शन कराया, जो अमेरिका तथा इङ्गलैण्ड के नाविक समता पर निर्धारित थे। टारडिउ साहब ने फ़्रान्स की भौगोलिक, आर्थिक तथा राजनैतिक समस्याओं का वर्णन किया। आपने कहा कि फ़्रान्स को व्यापार आदि सभी बाधाओं से रहित और सुरक्षित रहना चाहिए। आपने फ़्रान्स को सुरक्षित रखने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय समझौते पर ज़ोर दिया। मिस्टर मैकडॉनल्ड ने निम्न-लिखित तीन बातें सामने रक्खीं।

१—चूँकि इङ्गलैण्ड चारों ओर समुद्रों से घिरा है, इसलिए उसके निवासी अन्न आदि आवश्यक खाद्य पदार्थों को पाने के लिए समुद्र पर अधिकार चाहते हैं।

२—जो अङ्गरेज़ी सेना समुद्र पर तैनात है, वह तीन टुकड़ों में विभाजित की जावे, ताकि समुद्र की वह रक्षा कर सके और शान्ति रख सके।

३—प्रत्येक अङ्गरेज़ के लिए समुद्र ही सर्वस्व है। अतएव इङ्गलैण्ड को अमन-अमान का आश्वासन मिलना चाहिए। सिगनर ग्रायडी ने इटली की भौगोलिक तथा आर्थिक स्थिति का वर्णन करते हुए कहा कि इटली शस्त्रों को किसी हद तक घटाने को तैयार है, पर यूरोप का कोई भी राष्ट्र उससे अधिक शस्त्र न रक्खे। मिस्टर वाकाट्सुकी ने वाशिङ्गटन समझौते (Washington Agreement) को महत्वपूर्ण बतलाया। मिस्टर स्टिमसन ने अमेरिका का मन्तव्य निम्न प्रकार प्रकट किया :—

१—क्रूज़रों तथा दूसरे विध्वंसी शस्त्रों में लाग-डाँट का अन्त करने के लिए पाँचों राष्ट्रों में समझौता किया जावे।

२—सबमेरीनों को उठा दिया जावे या उनकी संख्या कम से कम कर दी जावे। और वे व्यापारिक जहाज़ों पर हमला न करें, जैसा कि उन्होंने महायुद्ध में किया था।

३—युद्ध के जहाज़ों को घटाने में वाशिङ्गटन समझौते से आगे बढ़ा जावे।

उन्होंने यह भी कहा कि उपरोक्त बातों से अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव उत्पन्न होने के साथ ही साथ धन की भी बड़ी बचत होगी।

(१५वें पृष्ठ का शेषांश)

वक्तृता के लिए केवल दस दिन लिए और उसमें उन्होंने अरविन्द बाबू की प्रतिभा की प्रशंसा करते हुए उन्हें एक उच्च-कोटि के साधु के रूप में चित्रित कर दिया और यह भी साबित कर दिया कि वे साधारण राजनीति से बिलकुल परे थे। उन्होंने हृदय-विदारक शब्दों में अदालत और असेसरों से इस बात पर विचार करने की अपील की, कि अरविन्द बाबू पर जिन-जिन अपराधों के अभियोग लगाए गए हैं, उनमें गवाहियाँ एक अपराध भी साबित करने में असमर्थ हैं। अन्त में उन्होंने कहा कि अरविन्द बाबू शान्ति के अवतार, देशभक्ति के साक्षात कवि, दयालु और अत्यन्त उच्च-कोटि के फ़िलॉसफ़र हैं।

असेसरों ने अपने निर्णय में उन्हें निर्दोष क़रार दिया और अदालत ने भी उन्हीं के निर्णय से अपनी सहमति प्रकट की। अरविन्द बाबू सभी अभियोगों में छोड़ दिए गए और उनके साथ उनके १७ साथी भी मुक्त किए गए। उनके भाई को पहले फाँसी की सज़ा दी गई, परन्तु बाद में वह आजन्म कालेपानी के दण्ड में परिवर्तित कर दी गई। अन्य अभियुक्तों को क़ैद की विभिन्न सज़ाएँ दी गईं।

* * *

कॉन्फ़्रेन्स की तीसरी प्रारम्भिक बैठक में फ़्रान्स, इङ्गलैण्ड तथा जापान ने अपने-अपने प्रस्तावों की सूचना दी।

अब कॉन्फ़्रेन्स में दो रायें हो गईं। इङ्गलैण्ड, अमेरिका तथा जापान चाहते थे कि जहाज़ों को क्लास (Category) के अनुसार परिमित किया जावे। फ़्रान्स और इटली उस योजना के पक्ष में थे, जिसे अङ्गरेज़ी में Globol toxnage कहते हैं। इस भेद को मिटाने के लिए फ़्रान्स ने एक समझौता पेश किया, जिसका अभिप्राय यह था कि Globol toxnage के साथ ही साथ जहाज़ क्लासों में भी विभाजित कर दिए जायँ। और एक वर्ष की सूचना देने के उपरान्त एक क्लास से दूसरे में बदलने का अधिकार दिया जावे।

कॉन्फ़्रेन्स की प्रथम बैठक में फ़्रान्स के समझौते पर वादविवाद हुआ। इसी बीच में अङ्गरेज़ी सरकार ने घोषणा की कि :—

१—इङ्गलैण्ड ने १९२८ के प्रोग्राम के दस हज़ार टन वाले दो क्रूज़रों के ऑर्डर रद्द कर दिए। तथा

२—१९२९ का प्रोग्राम घटा दिया गया। दो क्रूज़र, चार डिस्ट्रायर्स तथा तीन पनडुब्बियाँ निकाल दी गईं।

हिन्दोस्तानी हाथी बड़ा बुद्धिमान जानवर है

वह हमेशा मेहरबानियों और अपमानों को ख़ूब समझता है, वह बदला लेना भी जानता है

(यह कार्टून "डेली हेरेल्ड" नामक विलायती पत्र में प्रकाशित हुआ था)

प्रथम कमिटी में मैकडॉनल्ड ने पनडुब्बियों को पूर्णतया नष्ट करने का प्रस्ताव किया। पर फ़्रान्स इस पर सहमत नहीं हुआ। उसने कहा—"किसी भी हालत में फ़्रान्स पनडुब्बियों का नाम मिटा देने के लिए सहमत नहीं हो सकता।" जब यह सब हो रहा था, उस समय औरतों के एक डेपुटेशन ने, जिसमें चालीस देशों की प्रतिनिधि सम्मिलित थीं, कॉन्फ़्रेन्स के डेलीगेटों से शस्त्रों को पूर्णतया घटाने की प्रार्थना की तथा युद्ध के विरुद्ध एक प्रार्थना-पत्र भी भेजा। मिस्टर स्टिमसन ने समझौते के लिए निम्नलिखित प्रस्ताव रक्खे।

१—अमेरिका प्रत्येक भाँति के जहाज़ों में इङ्गलैण्ड की समता चाहता है। जहाज़ इस ढङ्ग से घटाए जावें कि १९३१ में दोनों बेड़े एक-दूसरे के बराबर हो जावें।

२—पनडुब्बियों का नाम मिटा देने से अमेरिका बड़ा प्रसन्न होगा। पर यदि यह सम्भव न हो, तो वह चाहता है कि उन पर व्यापारी जहाज़ों के बारे में अन्तर्राष्ट्रीय क़ानून के वही नियम लागू हों, जो पानी के ऊपर चलने वाले जहाज़ों पर लागू हैं।

कॉन्फ़्रेन्स की एक प्रारम्भिक बैठक में पनडुब्बियों के प्रयोग के बारे में पाँचों राष्ट्रों में एक मत हो गया। अतएव फ़्रान्स के मिस्टर लेयनीज़ ने यह प्रस्ताव रक्खा कि समझौते के लिए एक कमिटी बनाई जावे, जो पनडुब्बियों पर वही नियम लागू करे, जो पानी के ऊपर चलने वाले जहाज़ों पर लागू हैं, या होंगे।

एक तरफ़ लन्दन में यह कार्यवाही हो रही थी, दूसरी तरफ़ फ़्रान्स में चैम्बर ऑफ़ डिपुटीज़ (Chamber of Deputies) में फ़्रान्स गवर्नमेण्ट की हार हो गई। फ़्रान्स की गवर्नमेण्ट की इस हार के कारण कॉन्फ़्रेन्स का काम कुछ समय के लिए रुक गया। फ़्रान्स में दूसरी गवर्नमेण्ट स्थापित हो जाने के बाद कॉन्फ़्रेन्स का कार्य फिर प्रारम्भ हुआ। परन्तु अब कॉन्फ़्रेन्स में बहुत सी कठिनाइयाँ पैदा हो गईं। फ़्रान्स यह चाहता था कि सब मिल कर उसे यह गारण्टी दें कि वह सदा सुरक्षित रहेगा। इङ्गलैण्ड तथा अमेरिका इस गारण्टी के लिए राज़ी नहीं थे। इटली ने भी फ़्रान्स से समता का दावा किया। फ़्रान्स इसके लिए तैयार न था। इस खींचातानी के कारण पाँचों राष्ट्रों में समझौता होने की आशा जाती रही। अतएव तीन (इङ्गलैण्ड, अमेरिका और जापान) राष्ट्रों में ही समझौता करने का प्रयत्न किया गया।

कॉन्फ़्रेन्स की प्रथम कमिटी ने कमिटी की रिपोर्ट पर विचार किया। कमिटी ने पनडुब्बियों को एकदम नष्ट करने का तो तय नहीं किया। हाँ, उनके आकार और क्षेत्र आदि के प्रश्नों पर विचार कर एक मत से बहुत सी बातें तय कीं। इसके अलावा उन्हें कम हानिकारक बनाने के लिए निम्न-लिखित घोषणा की :—

१—व्यापारी जहाज़ों के बारे में पनडुब्बियों को अन्तर्राष्ट्रीय क़ानून के उन्हीं नियमों को मानना पड़ेगा, जिन्हें पानी के ऊपर चलने वाले जहाज़ मानते हैं।

२—आम तौर पर एक जङ्गी जहाज़ को, चाहे वह पानी के भीतर चलने वाला हो या ऊपर, यह अधिकार न होगा कि वह एक व्यापारी जहाज़ को डुबा दे या उसे बेकाम कर दे। जब तक कि उस जहाज़ पर के यात्री, या काम करने वाले, या पत्र आदि एक सुरक्षित स्थान पर न पहुँचा दिए जावें। जहाज़ पर की नावें सुरक्षित स्थान न समझी जावेंगी। सुरक्षित स्थान के माने भूमि या कोई अन्य जहाज़ होगा।

एक बार पुनः फ़्रान्स और इटली के भेदों को मिटाने का प्रयत्न किया गया। पर कोई भी सफलता न हुई। अतएव तीन राष्ट्रों में ही समझौता किया गया। ये तीन राष्ट्र इङ्गलैण्ड, अमेरिका और जापान थे। सन् १९३० के अप्रैल की २२वीं तारीख़ को इस सन्धि पर राष्ट्रों ने अपने-अपने हस्ताक्षर किए। यह सन्धि ३१ दिसम्बर, १९३६ तक लागू रहेगी।

यह सन्धि पाँच हिस्सों में विभाजित है। और कुल इसमें २६ आर्टिकिल हैं।

१—पहिले आठ आर्टिकिलों में उपरोक्त तीन राष्ट्रों की सन्धि है, जिस पर फ़्रान्स और इटली के हस्ताक्षर नहीं हैं।

२—पाँच राष्ट्रों की सन्धि में, उन लोगों ने यह निर्णय किया कि १९३१ से लेकर १९३६ तक बड़े जहाज़ के अधिकार का प्रयोग न करेंगे। इङ्गलैण्ड, अमेरिका और जापान ने यह भी निश्चय किया वे अपने कुछ बड़े जहाज़ घटा देंगे।

३—हवाई जहाज़ों के बारे में यह निश्चय हुआ कि ऐसा कोई भी १०,००० टन वाला हवाई जहाज़, जिसमें ६·१ इञ्च से बड़ी तोप लगी हो, न बनाया जावेगा और न किसी से लिया जावेगा।

४—पनडुब्बियों के बारे में यह तय हुआ कि कोई भी २,००० से अधिक टन वाला जहाज़, जिसमें ५·१ इञ्च वाली तोप लगी हो, न बनाया जावेगा और न लिया जावेगा। प्रत्येक राष्ट्र अधिक से अधिक तीन पनडुब्बियाँ रख सकता है, जो २,८०० टन से अधिक न हों, और जिनमें ६·१ इञ्च से अधिक वाली तोप न लगी हो।

५—सन्धि के तीसरे हिस्से में इङ्गलैण्ड, अमेरिका और जापान के लिए युद्ध के सामुद्रिक जहाज़ों का वर्णन है।

६—अन्त में, क्रूज़रों को दो हिस्सों में बाँटा गया है। प्रथम वे जिसमें ६·१ इञ्च से अधिक वाली तोप लगी हों। द्वितीय वे जिसमें इससे छोटी तोप लगी हों। यह भी तय किया गया कि प्रत्येक राष्ट्र कुल मिला कर कितने टन के क्रूज़र, डिस्ट्रायर्स तथा पनडुब्बियाँ रख सकता है।

७—युद्ध के जहाज़ों को बदलने, रद्द करने, बेचने तथा पुराने की जगह नए बनाने के लिए नियम बना दिए गए हैं।

८—अन्त में यह भी तय हो गया है कि १९३५ में दूसरी कॉन्फ़्रेन्स बैठे, जो एक नई सन्धि की रचना करे। पर यदि सब राष्ट्र चाहें तो उपरोक्त समय के पहिले ही कॉन्फ़्रेन्स की जा सकती है।

* * *

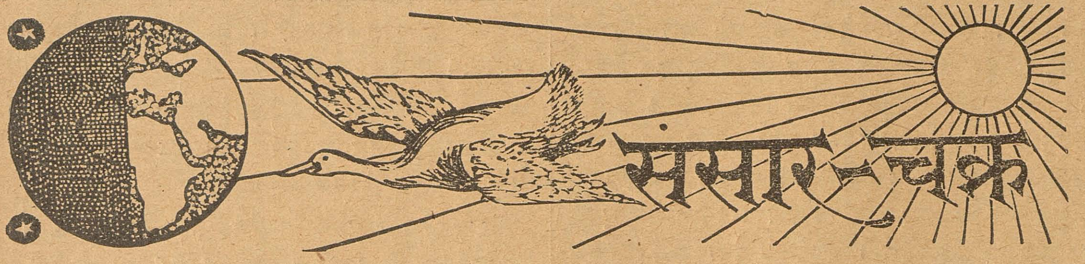

टर्की का प्रजातन्त्र

[श्री० देवकीनन्दन जी विभव, एम० ए०]

"हम टर्की को उसकी राजधानी (क़ुस्तुन्तुनिया) अथवा एशिया-माइनर (मेसोपोटामिया) और थ्रेस के प्रसिद्ध और समृद्धिशाली प्रदेशों से च्युत करने के लिए नहीं लड़ रहे हैं।"

"Nor are we fighting to deprive Turkey of its Capital or of the rich and renowned lands of Asia-Minor and Thrace."

५ जनवरी, सन् १९१८ की प्रसिद्ध घोषणा करते हुए ब्रिटिश महामन्त्री लॉयड जॉर्ज ने कहा—संसार और विशेषकर भारतवर्ष की मुस्लिम जनता, जिसमें असन्तोष के चिन्ह प्रकट होने लगे थे, ब्रिटिश-न्याय और सत्य पर विश्वास करके शान्त हुई। परन्तु इस घोषणा के १० माह बाद ही जब ३० अक्टूबर, १९१८ को तुर्कों ने सन्धि की शर्तें निश्चित करने के लिए हथियार डाल दिए, दार्दनल्स और बास्फरस के क़िले मित्र-शक्तियों के हाथ में आ गए और आन्तरिक रक्षा के लिए आवश्यक सेना को छोड़ कर बाक़ी तुर्की सेना तोड़ दी गई। तब लॉयड जॉर्ज और मित्र-गण अपनी घोषणा को भूल गए और टर्की की ऐसी असहाय अवस्था में मित्र-शक्तियों के जङ्गी जहाज़ों ने क़ुस्तुन्तुनिया के बन्दरगाह में अड्डा जमा लिया। महात्मा गाँधी ने क़ैसरे-हिन्द मेडल लौटाते हुए वाइसराय लॉर्ड चेम्सफ़र्ड को लिखा :—

" Events that have passed during the past month have confirmed me in the opinion that the Imperial Government have acted in the *Khilafat* matter in an unscrupulous, immoral, and unjust manner and have been moving from wrong to wrong in order to defend their immorality. I can neither retain respect nor affection for such a Government."

अब यह अच्छी तरह मालूम हो गया कि क़ुस्तुन्तुनिया टर्की के हाथ से गया। अङ्गरेज़ राजनीतिज्ञ कहने लगे कि लॉयड जॉर्ज की घोषणा इसी आधार पर थी कि टर्की मित्र-शक्तियों से तुरन्त लड़ाई बन्द कर दे, परन्तु इस घोषणा के १० माह के बाद तक टर्की लड़ता रहा, और इसलिए उसने इस घोषणा का लाभ अपने हाथ से खो दिया। परन्तु वास्तव में बात यह थी कि मित्र-शक्तियाँ बहुत पहले ही मार्च सन् १९१५ में टर्की का बटवारा निश्चय कर चुकी थीं। और उसके अनुसार क़ुस्तुन्तुनिया और यूरोप का सारा टर्की का प्रदेश रूस को मिलना था और मेसोपोटामिया, ईराक़ वग़ैरा अङ्गरेज़ों के क़ब्ज़े में आने को थे। सन् १९१७ और १९१८ में रूस की बोल्शेविक सरकार ने इस समझौते के सब गुप्त काग़ज़ों को प्रकाशित करके इस षड्यन्त्र का भण्डाफोड़ कर दिया और लॉयड जॉर्ज को, भारतीय मुसलमानों को भ्रम में डालने के लिए, उक्त घोषणा करनी पड़ी।

सदियों से टर्की को यूरोप से निकालने के लिए भिन्न-भिन्न षड्यन्त्र हो रहे थे, वे सफल होते दिखाई दिए। टर्की का रहन-सहन, विचार, प्रणाली यूरोप की अपेक्षा एशिया से अधिक मिलती थी और मुस्लिम राज्य होने के कारण यूरोप के ईसाई राज्य इससे मन ही मन जलते थे। मित्र-शक्तियों के हाथ में क़ुस्तुन्तुनिया आ तो गया, परन्तु कठिनाई यह थी कि मित्र-शक्तियों में से कौन सी शक्ति ऐसी विश्वासपात्र है, जिसके हाथ में उसे सौंपा जाय, जिससे सभी उससे लाभ उठा सकें। इङ्गलैण्ड मुँह बाए बैठा था, परन्तु अन्य शक्तियों को उसमें विश्वास नहीं था। मार्च, १९१५ के समझौते के अनुसार क़ुस्तुन्तुनिया पर वास्तविक अधिकार रूस का था, परन्तु रूस में बोल्शेविक सरकार होने से वह अपने सिद्धान्त के अनुसार न तो रूस ज़ार की की हुई सन्धियों से कोई लाभ उठाना चाहता था और न मित्र-शक्तियाँ ही क़ुस्तुन्तुनिया उसके क़ब्ज़े में तब तक देना चाहती थीं जब तक रूस में सोवियट सरकार की जगह 'पूँजीवाद' सरकार क़ायम न हो।

अब केवल यह आशा थी कि इसके निबटारे का भार अमेरिका पर छोड़ा जाय और उसकी जैसी सम्मति हो वैसा किया जाय। परन्तु अब अमेरिका यूरोप के झगड़ों से अलग रहना चाहता था, इसलिए उसने वार्सलीज़ की सन्धि पर दस्तख़त तक नहीं किए थे। ऐसी स्थिति में फ़्रान्स के वैदेशिक मन्त्री एम० पिचन ने एक ख़रीता तैयार किया, जिसमें उसने बड़ी योग्यता के साथ इस बात का समर्थन किया कि क़ुस्तुन्तुनिया सुलतान के अधिकार में ही रहने दिया जाय। परन्तु लॉयड जॉर्ज इसे स्वीकार नहीं करते थे। वह इस बात पर तुले हुए थे कि टर्की का नामोनिशान यूरोप में न रहे। फ़्रान्स के महामन्त्री एम० क्लेमेन्सो पहले तो लॉयड जॉर्ज के पक्ष में आ गए, परन्तु जब इन्होंने पिचन के तर्कों का पूरी तरह अध्ययन किया, तो उनका मत फिर पलट गया और वे अपनी पूरी शक्ति से इस बात का समर्थन करने लगे कि टर्की के क़ब्ज़े से क़ुस्तुन्तुनिया अलग न किया जाय। क्लेमेन्सो की दृढ़ता का परिणाम यह हुआ कि लॉयड जॉर्ज ने भी बाद को पार्लामेण्ट में उसके मत का समर्थन किया।

मित्र-शक्तियाँ परस्पर एक-दूसरे को सन्देह की दृष्टि से देखती थीं और अमेरिका इस झगड़े के बीच में आने को तैयार नहीं था, इसलिए अन्त में मित्र-शक्तियों को यही निश्चय करना पड़ा कि क़ुस्तुन्तुनिया टर्की के हाथ में ही रहने दिया जाय। परन्तु समझौते की अभी कितनी ही समस्याएँ बाक़ी थीं। मित्र-शक्तियों में टर्की के प्रश्नों पर बहुत मतभेद था, इसलिए टर्की को भी यह अवसर मिल गया कि वह अधिक न झुके। इङ्गलैण्ड टर्की की इस प्रवृत्ति को सहन न कर सका और तुर्कों को डर दिखलाने की नीयत से फ़रवरी १९२० में अपना जङ्गी बेड़ा और जनरल मिलने के अधिकार में बहुत सी मित्र-सेना क़ुस्तुन्तुनिया में भेजी गई। सुलतान की कमज़ोर सरकार में मित्र-शक्तियों का विरोध करने की शक्ति नहीं थी और इसलिए उसने उनकी इच्छानुसार १० अगस्त, १९२० को सन्धि-पत्र पर दस्तख़त कर दिए।

टर्की का इस समय पूरी तरह पतन हो चुका था, उसके साधन नष्ट हो चुके थे और उसके अस्त्र-शस्त्र तोड़ दिए गए थे। उसका साहस ग़ायब हो गया था और वह मित्र-शक्तियों के सामने पड़ा हुआ हाँफ रहा था। मित्र-शक्तियाँ वृद्ध टर्की के गले पर पैर रख चुकी थीं और उसका गला घुटने में अधिक देर नहीं थी। परन्तु ईश्वर की इच्छा और ही कुछ थी, मुस्तफ़ा कमाल पाशा ने मित्र-शक्तियों के पैर को हटा कर संसार के इतिहास में वे नए पृष्ठ लिखे, जिससे यूरोप की राजनीति का प्रवाह एक बार ही फिर बदल गया।

जिस समय सन् १९१९ में सुलतान के मन्त्री पेरिस में अपनी गर्दनें झुकाए मित्र-मण्डल की लताड़ सह रहे थे और जब मित्र-शक्तियों के जङ्गी जहाज़ अपनी तोपों के मुँह क़ुस्तुन्तुनिया की ओर झुकाए हुए आग उगलने को तैयार थे, उस समय मुस्तफ़ा कमाल काले-सागर के तट पर अरज़रम में था। उसे प्रेरणा हुई कि अब समय आ गया है, जब उसे टर्की के हित के लिए उसकी बागडोर अपने हाथ में लेनी चाहिए।

टर्की की सैनिक शक्ति अब तक अनवर पाशा के हाथ में थी, परन्तु उसकी कमज़ोरी, जल्दबाज़ी और ग़लतियों से टर्की ठोकरों पर ठोकरें खा रहा था, इसलिए लड़ाई के अन्त होते ही उसकी ताक़त का भी अन्त होने लगा। उसका पतन और कमाल पाशा का उत्थान साथ ही साथ हुआ। कमाल पाशा ने सन् १९०० में क़ुस्तुन्तुनिया के उसी सैनिक स्कूल से डिग्री प्राप्त की थी, जिससे दो वर्ष पहले अनवर वह डिग्री प्राप्त कर चुका था। मुस्तफ़ा कमाल बालक़ान की लड़ाइयों और गल्लीपोली की रक्षा में काफ़ी यश प्राप्त कर चुके थे। लड़ाई के अन्त होने के कुछ ही दिन बाद अनवर तुर्किस्तान में किसी विद्रोह में मारा गया और वज़ीरे-आज़म ने कमाल-पाशा को जनरल मिलने के मना करने पर भी बयालीस तुर्की अफ़सरों का अध्यक्ष बना कर, एशिया-माइनर भेजा। इस समय कमाल पाशा तीसरी फ़ौज के इन्सपेक्टर जनरल थे।

इस समय टर्की की सारी शक्तियाँ बिखर चुकी थीं और टर्की साम्राज्य अत्यन्त अरक्षित स्थिति में था। ऐसी स्थिति से लाभ उठा कर ग्रीक और आरमोनियन राज्य की सरकारों ने काले-सागर के तुर्की प्रदेशों को आपस में बाँट लेने का गुप्त समझौता कर लिया। * स्मरना पर अपना अधिकार करने के लिए ग्रीक सेनाएँ मई में स्मरना में उतरीं और बराबर बिना किसी विरोध के आगे बढ़ने लगीं। एशियाई प्रदेशों में विदेशी सेनाओं के प्रवेश करने से मुसलमानों के भाव भड़क उठे। मुस्तफ़ा कमाल ने इस नवीन उत्तेजना का उपयोग करते हुए धार्मिक और अन्य प्रभावशाली व्यक्तियों को अनातोलिया में इकट्ठा होने के लिए निमन्त्रण दिया। सितम्बर १९१८ में तुर्कों की कॉङ्ग्रेस हुई। कॉङ्ग्रेस ने सुलतान सरकार को एक लम्बा तार भेजा, जिसमें मित्र-शक्तियों को कोई भी तुर्की प्रदेश न छोड़ने का आदेश किया गया और सुलतान की सरकार की कमज़ोर नीति की निन्दा की गई।

सुलतान की कमज़ोर सरकार इसका उचित उत्तर ही क्या देती? जब कमाल पाशा को कोई सन्तोषप्रद उत्तर प्राप्त नहीं हुआ, तब उसने आज्ञा की कि पूर्वीय एशिया-माइनर के सारे प्रदेश में राष्ट्रीय धारा-सभा के लिए प्रतिनिधि भेजने के लिए चुनाव हो। तुर्की कर्मचारियों और सैनिकों ने इन चुनावों का प्रबन्ध किया, परन्तु ईसाई इस चुनाव से अलग रहे। इसी समय समाचार पहुँचा कि मित्र-शक्तियों की सेनाएँ क़ुस्तुन्तुनिया में उतर चुकी हैं और जनरल मिलने ने नगर पर फ़ौजी अधिकार होने की घोषणा कर दी है। इससे देशभक्त तुर्कों

* *Revue des Deux Mondes, Feb. 1922, p. 551.*

का मस्तिष्क और भी अधिक उत्तेजित हुआ। इन विचित्र स्थितियों में राष्ट्रीय धारा-सभा का चुनाव हुआ। १३ अप्रैल, १९२२ को अङ्गोरा नगर में, जो राजधानी नियत हुआ, धारा-सभा का प्रथम अधिवेशन प्रारम्भ हुआ।

अब राष्ट्रीय धारा-सभा (National Assembly) के सामने पहला काम एक सरकार क़ायम करना था, इसलिए एक केबिनेट बनाई गई और इसके अध्यक्ष मुस्तफ़ा कमाल चुने गए। एक ओर क़ुस्तुन्तुनिया की सरकार मित्र-शक्तियों की तलवार के बीच में अपनी घड़ियाँ गिन रही थी, दूसरी ओर पहाड़ियों के बीच में अङ्गोरा सरकार स्वतन्त्र और स्वच्छ वायु में अपनी शक्तियों का सङ्गठन कर रही थी। ग्रीक सेनाओं का सामना करने के लिए मुस्तफ़ा कमाल सैनिकों का सङ्गठन करने लगे। अभी तक उनके पास तुर्की सैनिकों की कुछ अव्यवस्थित टुकड़ियाँ थीं, उन्हीं के आधार पर उन्होंने धीरे-धीरे एक सुव्यवस्थित और सुशिक्षित सेना सङ्गठित कर ली। अस्त्र-शस्त्र, गोला-बारूद यूरोप से ख़रीदा गया। अङ्गोरा सरकार को रुपए की कभी कमी नहीं हुई। इसलिए रूस के अतिरिक्त अन्य देशों से भी उन्हें जो लड़ाई का सामान चाहते थे, मिल जाता था।

१९२१ के प्रारम्भ में ही अङ्गोरा सरकार ने बाकिर-समीबे को अपना प्रतिनिधि बना कर लन्दन-परिषद् में भेजा, परन्तु मित्र-शक्तियों ने उसकी कोई बात नहीं सुनी। ग्रीक सेनाएँ यद्यपि इयूनू की सराय पर रोक दी गईं, परन्तु दूसरी तरफ़ से अब भी आगे बढ़ती जाती थीं। अन्त में अङ्गोरा से २०० मील पर सक्रिया नदी के पास ग्रीक सेनाएँ रोक दी गईं और मुस्तफ़ा कमाल के सैनिक जी तोड़ कर लड़े। उधर ग्रीक सेना को गोला-बारूद की कमी अनुभव होने लगी थी।

अङ्गोरा से २०० मील पर जब यह घटनाएँ हो रही थीं, तब भी अङ्गोरा में सरकार के सङ्गठन का काम बड़ी तेज़ी से चल रहा था। राष्ट्रीय धारा-सभा के अधिवेशनों में उत्तेजना, जीवन और भावुकता की भरमार थी। जिस समय सभा-भवन में मुस्तफ़ा कमाल प्रवेश करते उस समय लोगों के उत्साह में बाढ़ आने लगती थी और जय-ध्वनि से भवन गूँज जाता था। मुस्तफ़ा कमाल पाशा का व्यक्तित्व तुर्कों के लिए बड़ा आकर्षक था। वे जब बोलने लगते थे तो लोग अपने को भूल जाते थे। वे धीरे-धीरे अपना जब भाषण शुरू करते तो सब कान उधर ही लग जाते थे। पर शीघ्र ही उनकी आवाज़ तेज़ होती जाती थी। एक शब्द के बाद दूसरा शब्द शीघ्रता से निकलने लगता था। उनकी भावुकता वाक्-धारा में हिलोरें पैदा करने लगती थी और सारे सभा-भवन में आग लग जाती थी। मुस्तफ़ा कमाल का एक-एक शब्द तुर्कों के लिए जादू का काम करता था।

अङ्गोरा में क़ुस्तुन्तुनिया सरकार के मुक़ाबिले में भिन्न-भिन्न भागों का सङ्गठन होने लगा, वैदेशिक कार्यालय, युद्ध-मन्त्रि-मण्डल, ख़ज़ाना, पब्लिक डेट ऑफ़िस, ओटोमन बैङ्क आदि विभाग उसी तरह बन गए, जिस तरह क़ुस्तुन्तुनिया में सुल्तान की सरकार के थे। एशिया-माइनर में जो मालगुज़ारी इकट्ठी हुई, वह अङ्गोरा के ख़ज़ाने में दाख़िल कर दी गई, परन्तु उसका हिसाब क़ुस्तुन्तुनिया को भी भेज दिया। रूसी, बलगेरियन और जर्मन आदि विदेशी अफ़सर सेना में सङ्गठन करने के लिए नौकर रक्खे गए। भीतरी प्रदेश से रोज़ नए रँगरूट भरती होने के लिए आते थे। गलियाँ सैनिकों से भर गईं। चारों ओर उत्साह, आशा और देश-प्रेम के भाव तरङ्गें मारते हुए दिखाई देते थे।

अनातोलिया में तुर्कों की इस नवीन जाग्रति ने यूरोप की सारी शक्तियों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लिया। टर्की की जाग्रति से सब से अधिक चोट इङ्गलैण्ड को पहुँचती थी। टर्की के पुनर्जीवित हो जाने से तुर्क और रूस की शक्तियाँ मिल कर एशिया में ब्रिटिश हितों को बहुत धक्का पहुँचा सकती थीं, इसलिए इङ्गलैण्ड तुर्कों के इस नवीन जीवन को बड़ी सावधानी से देख रहा था। इङ्गलैण्ड, जर्मनी में फ़्रान्स की माँगों का साथ नहीं देता था, इसलिए फ़्रान्स दिल ही दिल में इङ्गलैण्ड से कुढ़ रहा था, और वह व्यर्थ ही अपने को टर्की के झगड़े में नहीं डालना चाहता था। इङ्गलैण्ड किसी बहाने से तुर्कों पर धावा बोल देता, परन्तु उसे भारतीय मुसलमानों का डर था, जिन्होंने महात्मा गाँधी के नेतृत्व में ख़िलाफ़त की रक्षा के लिए भीषण आन्दोलन प्रारम्भ कर दिया था। अन्त को १३ अगस्त, १९२१ को इङ्गलैण्ड और फ़्रान्स ने इस ग्रीक-तुर्क युद्ध में तटस्थ होने की घोषणा कर दी, परन्तु इङ्गलैण्ड भीतर ही भीतर ग्रीक से सहानुभूति रखता था और फ़्रान्स का झुकाव टर्की की ओर था।

सन् १९२२ के प्रारम्भ होते ही ग्रीक सेनाओं का भी दुर्भाग्य प्रारम्भ हुआ। मित्र-शक्तियों ने ग्रीक और तुर्कों में समझौता कराने के लिए कितनी ही बार प्रयत्न किया, परन्तु स्मरना के प्रश्न पर समझौते की सब बातों का अन्त हो जाता था। २९ जुलाई को ग्रीक सरकार ने क़ुस्तुन्तुनिया पर क़ब्ज़ा करने की घोषणा कर दी और २५ हज़ार ग्रीक सेनाएँ मारमोरा सागर के उत्तरीय तट पर जुट गईं। अब मित्र-शक्तियों के लिए एक बड़ी समस्या उपस्थित हो गई। वे तटस्थ होने की घोषणा कर चुके थे और इस जीती मक्खी को नहीं निगल सकते थे कि अङ्गोरा-सेना को तो क़ुस्तुन्तुनिया में घुसने से रोकें और ग्रीक सैनिकों को घुस जाने दें। अन्त में उन्हें ग्रीक-सरकार को लिखना पड़ा और वहाँ से ग्रीक सेनाएँ हट गईं।

अगस्त सन् १९२२ में मुस्तफ़ा कमाल की राष्ट्रीय सेनाओं ने अफ़िम-कार हिस्सार के समीप ही ग्रीक सेनाओं पर आक्रमण किया। ग्रीक सेनाएँ पीछे हटने लगीं, एक मोर्चे के बाद दूसरा मोर्चा उनके हाथ से निकलता गया और पन्द्रह दिन में ही उनमें भयङ्कर गड़बड़ मच गई। अन्त में ग्रीक सैनिक मैदान छोड़ कर भाग खड़े हुए। यूरोप ने अपनी आँखें मलते हुए देखा कि ग्रीक पराजित हो चुके हैं और तुर्की सेनाएँ ग्रीक सैनिकों को खदेड़ती हुई क़ुस्तुन्तुनिया के सामने उस प्रदेश की ओर बढ़ी आ रही हैं, जहाँ यूरोपीय युद्ध की सन्धि के बाद सैनिक सङ्गठन का प्रवेश होना निषिद्ध था।

यूरोप के ऊपर महायुद्ध के बादल फिर जमा होते हुए दिखाई देने लगे। यद्यपि भारतीय आन्दोलन के प्रभाव से इङ्गलैण्ड बाहर से तटस्थ होने की चेष्टा कर रहा था, परन्तु जब ९ सितम्बर को तुर्की सेनाओं ने स्मरना में प्रवेश किया और गल्लीपोली के सामने चनक के समीपी प्रदेशों में, जो सेवरेस की सन्धि के अनुसार मित्र-शक्तियों के क़ब्ज़े में था, प्रवेश किया, तो ब्रिटिश सरकार ने घोषणा की कि यदि तुर्की सेनाएँ तटस्थ सीमा को पार करेंगी तो लड़ाई अनिवार्य हो जायगी। १५ सितम्बर को तुर्की सेनाएँ चनक के बहुत ही समीप आ पहुँचीं और यह प्रतीत होने लगा कि यदि उन्होंने निश्चित की हुई तटस्थ सीमा को पार किया तो लड़ाई छिड़ जायगी, परन्तु फ़्रान्सीसी और इटली सरकार अब किसी नए झगड़े में पड़ना नहीं चाहती थीं।

महायुद्ध ने यूरोपीय महाशक्तियों की कमर तोड़ दी थी और नए-नए करों से वहाँ की प्रजा का दिवाला निकल रहा था। उनके बड़े-बड़े नेताओं ने घोषणा की थी कि अब एक शताब्दी तक कोई युद्ध नहीं होगा। ऐसी स्थिति में क्या उनके लिए इतना शीघ्र फिर एक नए युद्ध में सम्मिलित होना सम्भव था? दूसरी ओर तुर्की सेना ने ग्रीक सेना को बुरी तरह हरा कर यूरोप की शान किरकिरी कर दी थी और एशियाई राष्ट्रों में जो यूरोप का रोब ग़ालिब था, उसे बुरी तरह धक्का पहुँचा था। अगर तुर्कियों ने यूरोप की ताक़तों को ठुकरा कर उस प्रदेश में, जोकि टर्की से छीन कर सन्धि की शर्तों के अनुसार तटस्थ प्रदेश बना दिया गया था, बिना विरोध के प्रवेश कर लिया तो पूर्व में यूरोप का, विशेषकर इङ्गलैण्ड का सारा प्रभाव मिट्टी में मिल जायगा।

इङ्गलैण्ड एशिया के सम्बन्ध में बड़े-बड़े स्वप्न देख रहा था। टर्की की नई शक्ति से यह सब छिन्न-भिन्न होते हुए दिखाई दिए। दूसरी यूरोप की शक्तियाँ टर्की के सम्बन्ध में आगा-पीछा दिखा रही थीं, परन्तु लॉयड जॉर्ज अब चुप न रह सके। १६ सितम्बर को डाउनिङ्ग स्ट्रीट से घोषणा की गई कि ग्रेटब्रिटेन तटस्थ प्रदेश की रक्षा करने के लिए अपने कर्त्तव्य का पालन करेगा और इसलिए मोर्चाबन्दी करने के लिए और ब्रिटिश सैनिक भेजे जायँगे।

"The British Government has given order to the Mediterranean Fleet to oppose by every means any infraction of these zones or any attempt on the part of Turks to cross to the European Shore."

इङ्गलैण्ड की तरफ़ से लड़ाई की तैयारियाँ होने लगीं। ब्रिटिश सरकार ने बालकान राज्यों और उपनिवेशों की सरकारों को भी इसमें योग देने के लिए लिखा। फ़्रान्स और इटली की सरकार इस पक्ष में नहीं थी कि तटस्थ प्रदेश में मोर्चाबन्दी करने के लिए और सेनाएँ भेजी जायँ। यही नहीं, वे आगे से टर्की के मामले में पूर्ण तटस्थ रहना चाहते थे। उन्होंने जो वहाँ उनकी सैनिकों की टुकड़ियाँ थीं, उन्हें भी वहाँ से उठा लिया। अब चनक में केवल अङ्गरेज़ सैनिक रह गए।

टर्की के मामले से फ़्रान्स और इङ्गलैण्ड के भाव इतने तन गए थे कि यदि शीघ्र ही टर्की का मामला तय न होता तो फ़्रान्स और इङ्गलैण्ड के सम्बन्ध टूट जाने की पूरी सम्भावना थी। दार्दनेल की खाड़ी में पड़ा हुआ ब्रिटिश जङ्गी बेड़ा इधर मुस्तफ़ा कमाल की फ़ौजों को रोकने की आशा कर सकता था। परन्तु चनक में ब्रिटिश सैनिकों की एक ही टुकड़ी थी और यदि कमाल के सैनिक उधर धावा बोल देते, तो वहाँ से एक भी ब्रिटिश सैनिक बच कर नहीं जाता।

२० सितम्बर की शाम को निकट-पूर्व के ब्रिटिश कमाण्डर-इन-चीफ़ हेरिङ्गटन ने तुर्की अफ़सरों को लिखा कि तटस्थ सीमा को पार करने की कोई भी चेष्टा की जायगी, तो वह अपनी जल और स्थल शक्ति से उसका पूरी तरह सामना करेगा। इसका उत्तर, क़ुस्तुन्तुनिया में अङ्गोरा सरकार के प्रतिनिधि हमीद बे ने भेजा—"राष्ट्रीय सरकार लड़ना नहीं चाहती, परन्तु शत्रु को थ्रेस से बाहर खदेड़ देने का दृढ़ निश्चय कर चुकी है।" जनरल हेरिङ्गटन ने अङ्गोरा सरकार के इस जवाब को लन्दन-सरकार के पास भेज दिया।

लॉर्ड कर्ज़न पेरिस भाग कर फ़्रान्स और इटली के प्रतिनिधियों से तुर्की की समस्या पर बातचीत करने के लिए आए। अन्त में इङ्गलैण्ड, फ़्रान्स और इटली के संयुक्त हस्ताक्षरों से ग्रीक और टर्की को शान्ति-सभा के लिए निमन्त्रित किया। इस निमन्त्रण में टर्की के अधिकार को थ्रेस के मारित्ज़ा और एड्रियानोपोल तक मान लिया गया और उससे निवेदन किया गया कि वह मित्र-शक्तियों द्वारा नियत तटस्थ प्रदेश में तुर्की सेनाओं को न भेजे। इस बार फिर इस बात का विश्वास दिलाया कि सन्धि होते ही क़ुस्तुन्तुनिया से मित्र-शक्तियों की फ़ौजें हट जायँगी।

तुर्की सेनाओं ने २३ सितम्बर को चनक की सीमा में प्रवेश किया। वे २४ तारीख़ को वापस चली गईं और फिर २५ तारीख़ को आ गईं। इस समय सीमा के

पास ही कमाल के ७०,००० वीर सैनिक डटे हुए थे। ब्रिटिश जनरल हेरिङ्गटन के पास केवल १०,००० अङ्गरेज़ सैनिक ही थे।

तुर्की अफ़सर और सैनिकों का जोश उमड़ रहा था, हाल की जीतों ने उन्हें आशावादी बना दिया था और वे युद्ध के पक्ष में थे। मुस्तफ़ा कमाल स्वयं एक बड़े सैनिक थे और विजय का लोभ उन्हें युद्ध की ओर आकर्षित कर रहा था, परन्तु फिर उनकी दूरदर्शिता ने भावुकता पर विजय प्राप्त की। संसार और टर्की का हित उन्हें शान्ति में ही दिखलाई दिया। उन्हें अभी आन्तरिक सङ्गठन का बहुत काम करना था, जो बिना शान्ति के हो नहीं सकता था। उन्होंने तुर्की सैनिकों को इस पक्ष में लाने के लिए अपने प्रभाव का पूरा उपयोग किया और मित्र-शक्तियों के निमन्त्रण को स्वीकृति भेज दी। इसका परिणाम यह हुआ कि पूर्व में ख़ून की नदियाँ बहते-बहते बच गईं।

३ अक्टूबर को मुडानिया में इटली, फ़्रान्स, इङ्गलैण्ड, टर्की और ग्रीस के प्रतिनिधि मिले और समझौते की शर्तें तय करने के लिए तोपों के मुँह बन्द कर दिए गए। ग्रीक सेनाओं ने थ्रेस ख़ाली कर दिया और टर्की ने यह स्वीकार कर लिया कि सन्धि होने तक वह तटस्थ प्रदेश में अपनी सेनाएँ नहीं भेजेगा।

इसके कुछ ही सप्ताह बाद, शान्ति-परिषद् होने से पहले ही अङ्गोरा की महान धारा-सभा का अधिवेशन हुआ और १ नवम्बर, १९२२ के प्रस्तावानुसार सुलतान की सरकार का अन्त कर दिया गया। सुलतान ब्रिटिश जङ्गी जहाज़ में बैठ कर भागा और माल्टा में जाकर शरण ली। टर्की प्रजातन्त्र की घोषणा कर दी गई। एक पहले सुलतान अब्दुल अज़ीज़ के लड़के अब्दुल मजीद मुस्लिम-धार्मिक संसार के ख़लीफ़ा बना दिए गए, पर २७ फ़रवरी, १९२४ को धारा-सभा ने ख़िलाफ़त को बिलकुल उठा दिया। सन् १९१९ में ब्रिटिश सरकार जिस ख़िलाफ़त के भावों की रक्षा के लिए तुर्कों को कुस्तुन्तुनिया से निकालने का प्रस्ताव करने में डरती थी, तुर्कों ने उसी ख़िलाफ़त को एक दम में तोड़ कर अलग कर दिया।

२० नवम्बर, १९२२ को स्विटज़रलैण्ड के एक नगर लूसेन में सन्धि-परिषद् का अधिवेशन प्रारम्भ हुआ। वहाँ तुर्की प्रतिनिधि इस्मतपाशा की दृढ़ता से टर्की की अधिकांश माँगें स्वीकार कर ली गईं। कमाल पाशा और कुछ तुर्की देश-भक्तों ने टर्की साम्राज्य को नष्ट होते-होते बचा लिया। यूरोपीय शक्तियाँ, जो कुस्तुन्तुनिया की ओर आँखें लगाए हुए थीं, हाथ मलती रह गईं। हेनरी केबट लॉज ने अमेरिका के थियोडर रूज़वेल्ट को लिखाः—

" One of the chief objects of the war will be lost, if we do not finally expell the Turk from Europe and take possession of Constantinople as an international city, so that the straits may always be free."*

अर्थात्—"यदि हम तुर्कों को कुस्तुन्तुनिया से निकाल कर उसे अन्तर्राष्ट्रीय शहर न बना सके, तो महायुद्ध के सब से बड़े ध्येयों में से एक जाता रहेगा।" लॉयड जॉर्ज की ५ जनवरी, १९१८ वाली घोषणा और इसमें कितना महान अन्तर है। यूरोप की राजनीति के मदारियों के वाक्जाल का मूल्य क्या है, यह इससे भली प्रकार प्रकट होता है।

सन्धि की शर्तें तय करने के लिए स्विटज़रलैण्ड के एक नगर लूसेन में २० नवम्बर, १९२२ को एक परिषद प्रारम्भ हुई। जिस मुसलमानी सल्तनत को मिटाने के लिए ईसाई सरकारें बहुत दिनों तक षड्यन्त्र कर रही थीं, उसी मुसलमान धर्म के सभापति ने प्रारम्भिक भाषण में तारीफ़ करते हुए कहा—"The two great religions to which the two adversaries of yesterday owe their faith, and from which their civilization is nourished . . . have now met with the common aim of peace." इस परिषद् में टर्की और ग्रीस के अतिरिक्त इङ्गलैण्ड, फ़्रान्स, जापान, संयुक्त-राज्य, अमेरिका, रूमानिया और जेकोस्लोवेकिया के प्रतिनिधि भी सम्मिलित हुए थे।

टर्की प्रतिनिधि-मण्डल के अध्यक्ष श्री० इस्मत पाशा थे। इन्होंने बड़ी दृढ़ता और निर्भीकता से टर्की के पक्ष का प्रतिपादन किया। वर्सलीज़ की शान्ति-परिषद् में मित्र-शक्तियों ने जर्मनी से मनमानी शर्तें क़बूल करा लीं, परन्तु लूसेन में मित्र-शक्तियों को पराजित जर्मनी के स्थान में विजित टर्की से पाला पड़ा था, जिसके राष्ट्रीय नेता अपने देश की प्रतिष्ठा की रक्षा पर तुले हुए थे। ३१ जनवरी, १९२३ को एक शर्तों का ख़रीता पेश किया गया, जिसके सम्बन्ध में लॉर्ड कर्ज़न ने कहाः—

डॉक्टर बी० के० दास, डी० एस-सी० (लन्दन)
आप कलकत्ता विश्वविद्यालय के ज़ूलोजी विषय के प्रतिभाशाली प्रोफ़ेसर हैं, जिन्हें विलायत से अपनी विशेष योग्यता के कारण कई स्वर्ण-पदक तथा अन्य वस्तुएँ भेंट की गई हैं।

"When we contrast the conditions of the Former Treaty of Sevres with those of the present instrument, I do not think any one will be found to complain of a lack of generosity or concession here. In fact we might be blamed for going too far. And this change has not been due simply to the fact that the Turks were victorious in the latest stage of the war with Greece, but to an increasing and sincere recognition of their own aspirations for national unity."

लॉर्ड कर्ज़न की उदारता (!) के लिए सहस्रों बधाई! पाठक देखेंगे कि जिन मित्र-शक्तियों ने जर्मनी की शर्तें लिखाने में इतनी कड़ाई से काम लिया था, जो टर्की के एक बड़े हिस्से को निगल चुकी थीं, वे ही तुर्की राष्ट्रवादियों द्वारा निगला हुआ उगलने को विवश किए जाने पर इस तरह की उदारता बघारें! यह कर्ज़न जैसे कूटवादियों के लिए ही सम्भव हो सकता था। इन शर्तों में टर्की की सीमा यूनान और कारागच के रेलवे-स्टेशन तक क़ायम की गई थी, मोसूल का झगड़ा लीग ऑफ़ नेशन्स के लिए छोड़ दिया गया था और खाड़ी व्यापार और कुछ जङ्गी जहाज़ों के आने-जाने के लिए स्वतन्त्र कर दी गई थी। टर्की में जो ग़ैर-मुस्लिम अल्प-मत जातियाँ थीं, उनके शासन की शर्तें लीग ऑफ़ नेशन्स पर छोड़ दी गई थीं। इस्मत-पाशा ने कुछ रद्दोबदल के बाद और सब शर्तें तो स्वीकार कर लीं, परन्तु कुछ न्याय और आर्थिक मामलों में कोई समझौता न हो सका। इस समय लॉर्ड कर्ज़न ने घोषणा की कि टर्की के साथ अब अधिक रियायत करना असम्भव है। इस्मत पाशा को मित्र-शक्तियों ने भुलावे में डालने की बहुत चेष्टा की, परन्तु इस्मत इतने दृढ़ आचरण का आदमी प्रमाणित हुआ कि यूरोप के बड़े-बड़े राजनीतिज्ञों को अपना-सा मुँह लेकर रह जाना पड़ा। सन्धि-परिषद् बिना कोई निश्चय किए हुए भङ्ग हो गई।

यूरोप में अशान्ति के बादल फिर इकट्ठा होते हुए दिखाई दिए। तुर्की राष्ट्रवादियों की दृढ़ता के सामने लॉर्ड कर्ज़न को नर्म होना पड़ा। २४ अप्रैल को लूसेन-परिषद् फिर जुड़ी। इस बार एम० व्रोवस्की की अध्यक्षता में रूसी प्रतिनिधि-मण्डल भी तुर्कों को सहायता देने के लिए सम्मिलित हुआ, परन्तु होटल सिसिल में भोजन करते हुए एम० व्रोवस्की को किसी ने गोली मार दी।

पहले की तैयार की हुई शर्तों के अनुसार कारागच रेलवे-स्टेशन मारीट्ज़ा सरहद से परे था, और ग्रीस के क़ब्ज़े में आता था। यूनान-सरकार उसे देने को तैयार नहीं थी, और तुर्क उसके लिए बिना कोई शर्त नहीं करना चाहते थे। अन्त में तुर्कों की ही विजय हुई, कारागच उनके क़ब्ज़े में आ गया। अन्य आर्थिक मामलों में भी मित्र-शक्तियों को दबना पड़ा। तुर्कों से हर्जे की जो बड़ी-बड़ी रक़में माँगी जा रही थीं, वह मित्र-शक्तियों को छोड़नी पड़ीं, और भी अन्य आर्थिक मामलों में टर्की की ही विजय रही। यह भी निश्चय हुआ कि मेसेडोनिया के तुर्क एशिया-माइनर में चले जायँ, और एशिया माइनर के यूनानी मेसेडोनिया में आ जायँ। २४ जुलाई को इस्मत ने सन्धि की शर्तों पर दस्तख़त कर दिए।

लूसेन की सन्धि का परिणाम यह हुआ कि टर्की विदेशियों के सब अनुचित दबावों से रक्षित हो गया। उसका राष्ट्रीय क़र्ज़ बहुत कम हो गया। उसका शासन यूरोप के एक बड़े प्रदेश पर, जिसमें कई प्रसिद्ध नगर भी थे, मज़बूती से स्थापित हो गया, और कुस्तुन्तुनिया उसे वापस मिल गया। इसका श्रेय हम निम्न कारणों को दे सकते हैं :—

(१) कमाल पाशा, इस्मत पाशा आदि राष्ट्रवादियों का ज्वलन्त देश-प्रेम, सङ्गठन-शक्ति और दृढ़ता।

(२) तुर्कों की प्राचीन रूढ़ियों को दूर फेंक कर समय के अनुसार प्रवृत्ति होना।

(३) मित्र-शक्तियों का पारस्परिक ईर्षा और सन्देह का भाव और तुर्की प्रश्नों पर भयङ्कर मतभेद।

(४) यूनानी सरकार की निर्बलता।

इधर जब टर्की प्रजातन्त्र की विजय हो रही थी, उधर यूनानी प्रजा भी स्वेच्छाचारी शासकों के प्रति उग्र होती जा रही थी। जब टर्की का ख़लीफ़ा कुस्तुन्तुनिया छोड़ कर भागा, उसी समय एथिन्स में यूनान के बादशाह कान्सटेनटाइन का भी सूर्य अस्त हो गया। सैनिकों ने विद्रोह कर दिया और बादशाह को प्राण बचा कर भागना पड़ा। उसके मन्त्रियों और सलाहकारों पर मुक़दमा चला और ६ को उसी समय गोली से उड़ा दिया गया। उसका लड़का जॉर्ज द्वितीय सिंहासन पर बैठा, परन्तु वह भी अधिक दिन तक राज्य न कर सका। जनता प्रजातन्त्रवाद के स्थान में कोई और शासन नहीं चाहती थी, इसलिए जॉर्ज द्वितीय को भी शीघ्र ही रूमानिया में शरण लेनी पड़ी। दिसम्बर १९२३ में ही प्रजातन्त्र स्थापित हो गया और वेनीज़ुला प्रधान-सचिव बनाए गए।

* * *

* *Letters of Theodre Roosebelt and Henry Cabbot Lodge. (1925) II, 539.*

देश के राजनैतिक रङ्गमञ्च पर

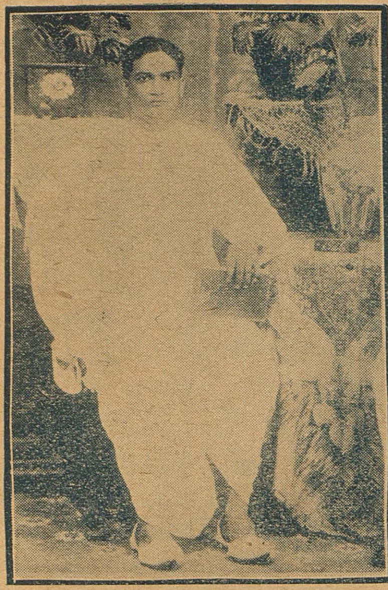

काशी के अमर-शहीद—स्वर्गीय श्री० कालीशङ्कर जी वाजपेयी—जो बम्बई में पुलिस की लाठी से आहत होकर मृत्यु को प्राप्त हुए थे। आपकी अस्थि काशी विसर्जनार्थ लाई गई थी।

काशी के सुप्रसिद्ध राजनैतिक कार्यकर्त्ता—श्री० रामेश्वर सहाय सिंह जी—जिन्हें ३ मास का कठिन कारावास-दण्ड दिया गया है। आप काशी म्यूनिसिपुल बोर्ड के शिक्षा-ध्यक्ष थे। बोर्ड ने भी आपको पदच्युत कर दिया है!

१२ वर्षीय बालिका—कुमारी गुलाब बाई बाबूराव पारकर, जिन पर राष्ट्रीय झण्डा न देने के अपराध में बम्बई की पुलिस ने लाठी-प्रहार किया था, जिससे आप बुरी तरह घायल हो गईं थीं।

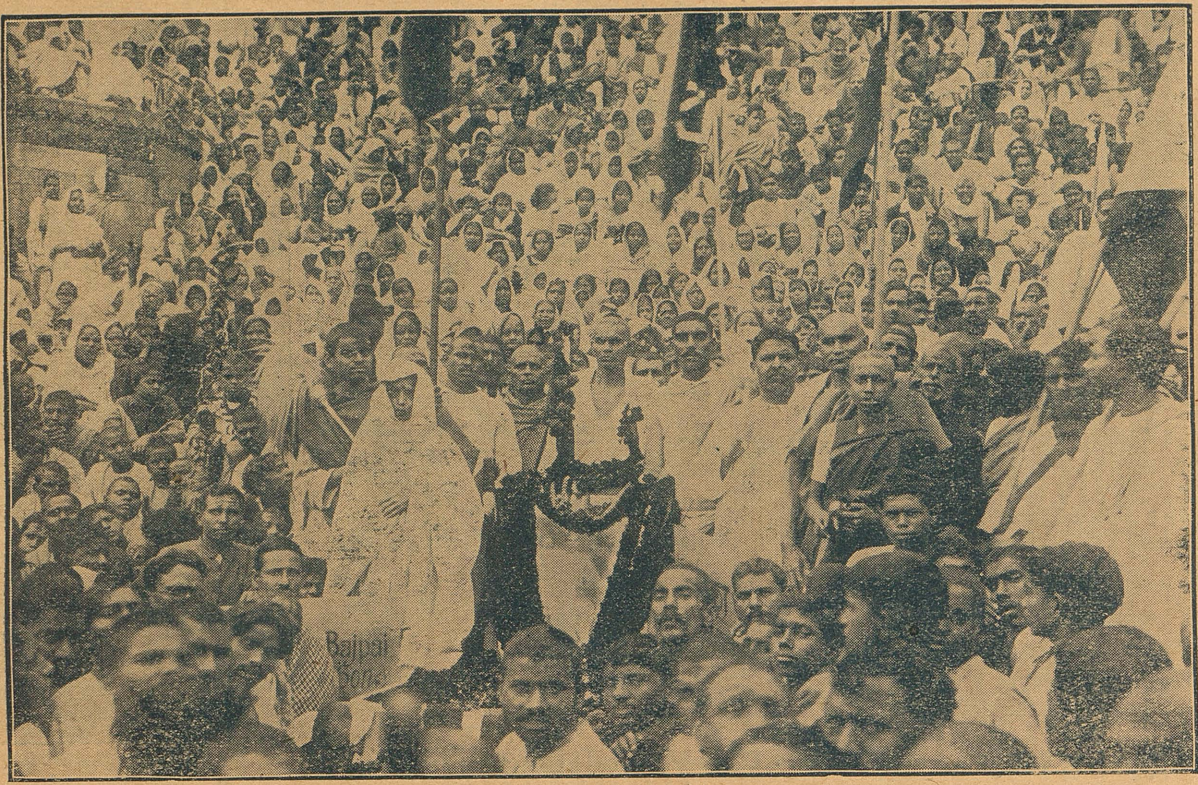

काशी के केदार घाट का वह दृश्य, जिसमें अपार जन-समूह स्वर्गीय कालीशङ्कर वाजपेयी के अस्थि-विसर्जन के समय एकत्र हुआ था। कहा जाता है आपकी राख ले-लेकर उपस्थित जनता ने टीका लगा कर अपने को धन्य समझा था।

सूरत काँङ्ग्रेसे कमिटी की 'डिक्टेटर'—श्रीमती बसुमती ठाकोर—जो हाल ही में गिरफ़्तार कर ली गईं हैं।

कानपुर की वे महिलाएँ, जो नियमित रूप से घर-घर घूम कर चर्खा तथा खादी का नित्य प्रचार करती हैं।

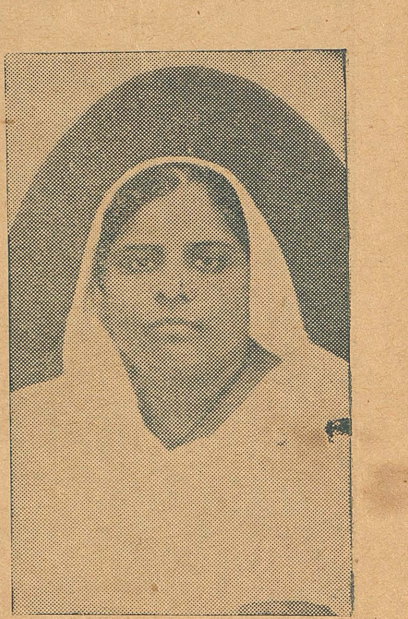

बड़ोच के देश-सेविका सङ्घ की प्रधाना—श्रीमती कुसुम बेन—जो हाल ही में गिरफ़्तार कर ली गईं हैं।

उर्दू पत्र-पत्रिकाओं के कुछ प्रतिभाशाली सम्पादक

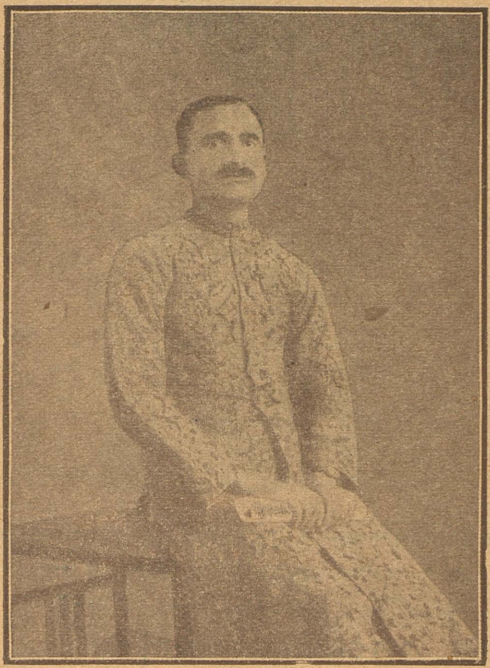

श्री० रहमअली हाशिमी, सम्पादक 'हमदम'

श्री० मुर्तुज़ा अहमद ख़ाँ महम्मदज़ाई
सम्पादक 'अफ़ग़ानिस्तान'

हकीम सय्यद शमसुल्लाह क़ादरी
सम्पादक 'तारीख़'

श्री० जमील बेग मञ्ज़र स० सम्पादक
'जामे जहाँनुमा'

श्री० सञ्जर अज़ीमाबादी स० सम्पादक
'जामे जहाँनुमा'

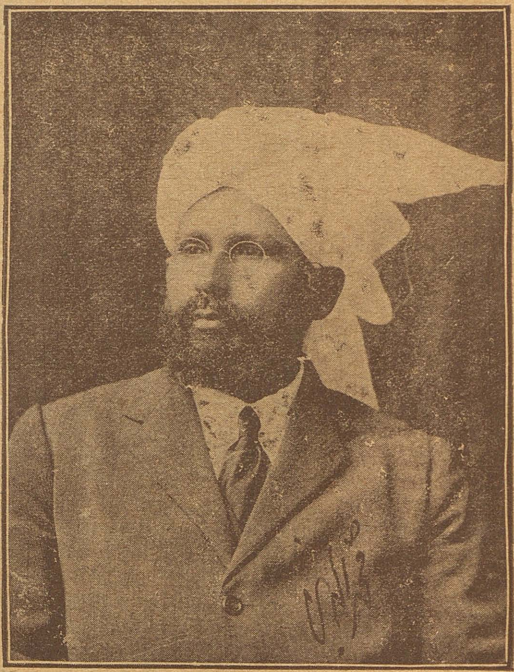

श्री० मोहम्मद उद्दीन सम्पादक 'सूफ़ी'

श्री० ज़फ़र हाशमी, सम्पादक 'चमनिस्तान'

श्री० हादी क़ुरैशी, सम्पादक 'दिलफ़रेब'

श्री० जमाल साबिरी, सम्पादक 'अलीगढ़ पञ्च'

देश के प्रमुख स्त्री-पुरुषों की चित्रावली

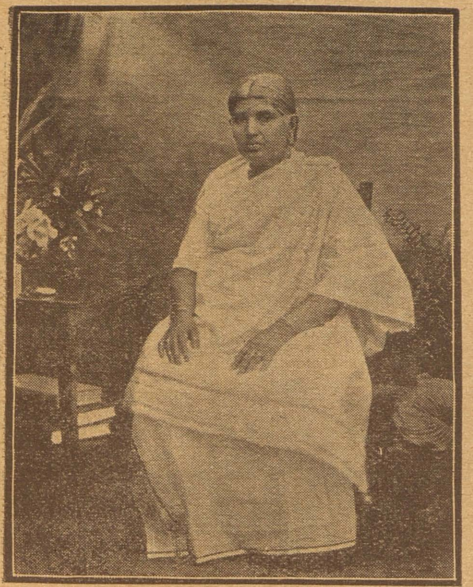

श्रीमतो के० के० जानकी अम्मा

जो त्रिवन्द्रम (मद्रास) के गर्ल्स हाई-स्कूल की प्रधान अध्यापिका थीं। आपने स्त्री-शिक्षा के क्षेत्र में ४० वर्षों तक कार्य करके हाल ही में विश्राम लिया है।

श्रीमती के० सी० दे

आप बङ्गाल ओलेम्पिक एसोसिएशन की कार्यकारिणी सभा की सदस्या नियुक्त की गई हैं। भारतीय महिला का ऐसी महत्वपूर्ण सभा के सदस्य होने का यह पहिला ही अवसर है।

त्रावणकोर की महारानी सेतू पार्वती

आप स्त्री-कॉन्फ्रेन्स के मद्रास में होने वाले अधिवेशन की सभानेत्री चुनी गई थीं। कहा जाता है महिला कॉन्फ्रेन्स का यह अधिवेशन बहुत सफल रहा।

श्री० ए० वेङ्कटरमा अय्यर, बी० ए०, बी० एल

आप त्रावणकोर स्टेट के नए दीवान नियुक्त किए गए हैं। आपका शिक्षक जीवन बड़ा प्रतिभापूर्ण बतलाया जाता है।

बङ्गलोर के राव बहादुर डॉक्टर सी० बी० रामाराव के पोते—श्री० एम० सुभाराव, जिन्होंने हाल ही में आई० सी० एस० की परीक्षा पास की है।

मि० एस० आर० पाटनिस

आप प्रथम श्रेणी के पाँच स्काउटों में से एक हैं। आपको कोल्हापुर स्टेट का सर्व-श्रेष्ठ स्काउट होने का गौरव प्राप्त है।

केप्टेन दयालसिंह वेदो

आप मद्रास की स्टेटों के पोलिटिकल एजेण्ट के सहायक नियुक्त किए गए हैं।

वैद्यराज उमाशङ्कर पीताम्बर भट्ट

आपको अखिल भारतीय वैद्य-सम्मेलन की ओर से सर्वोत्तम औषधियों और उन पर वैज्ञानिक लेख लिखने के लिए सुवर्ण-पदक प्रदान किए गए हैं।

श्रीमती रीनियस

पुदुकोट्टा (मद्रास) के पुलिस-कमिश्नर श्री० एस० टी० रीनियस की धर्मपत्नी है—जो पुदुकोट्टा स्टेट की व्यवस्थापिका सभा की सदस्या नियुक्त हुई हैं।

देश के प्रमुख स्त्री-पुरुषों की चित्रावली

हाल ही में होने वाली आन्ध्र प्रान्तीय महिला-सम्मेलन की सभानेत्री—डॉक्टर के० लक्ष्मी देवी, एल० सी० पी० एस०

इलाहाबाद की कायस्थ महिला-सभा की सभानेत्री, स्त्री आर्य-समाज की प्रधाना, विधवा-आश्रम की उप-प्रधाना तथा आदर्श आर्य कन्या-पाठशाला की कार्यकारिणी सभा की सदस्या—श्रीमती कला देवी जी—आपने हाल ही में स्थानीय डी० ए० वी० हाई स्कूल को १०००) रु० दान दिए हैं।

विज़गापाटम (मद्रास) की म्यूनिसिपुल कौन्सिलर श्रीमती पी० के० पङ्काजम—जो हाल ही में शिक्षा-समिति की सदस्या नियुक्त हुई हैं।

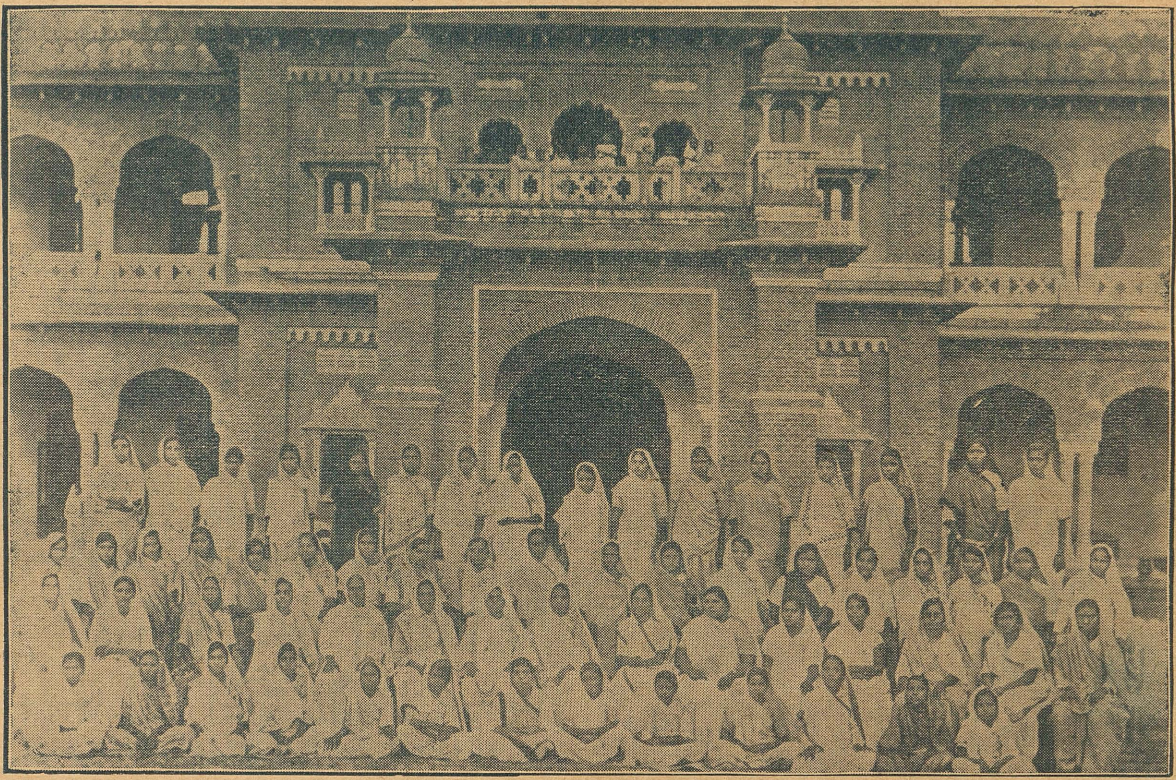

प्रयाग महिला-विद्यापीठ की परीक्षा में सम्मिलित होने वाली कानपूर की महिलाओं तथा बालिकाओं का ग्रूप

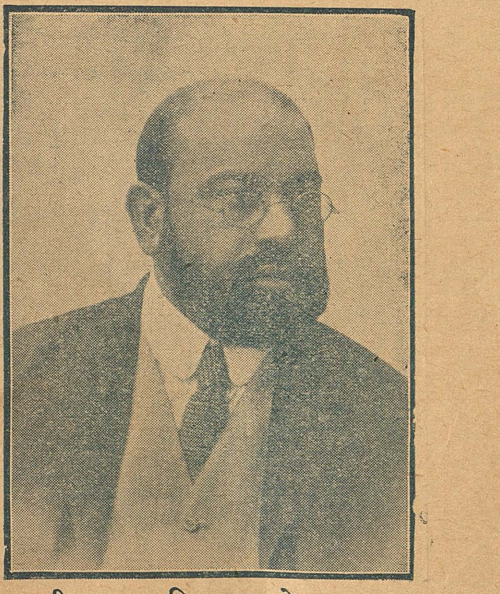

यू० पी० व्यवस्थापिका सभा के नए सदस्य—ख़ान बहादुर हाफ़िज़ मोहम्मद हलीम—आप कानपूर के प्रसिद्ध एवं धनवान चमड़े के व्यापारी हैं।

बम्बई के मेयर और भारतीय व्यापार-सङ्घ के प्रधान—श्री० एच० ए० लाल जी—जिन्हें गवर्नमेण्ट ने १९३१ में होने वाली अन्तर्राष्ट्रीय मज़दूर-सभा के १५वें अधिवेशन के लिए भारतीय प्रतिनिधि चुना है!

हाल ही में विश्राम लेने वाला रङ्गून कॉरपोरेशन के मेयर—श्री० आर० बी० रशल, एम० बी० ई०। आप शीघ्र ही विलायत पधारेंगे।

इख़्तिलाफ़े[१] रङ्ग से, वह रौनक़े-महफ़िल नहीं,
दिल तो है पहलू में सब के, एक सब का दिल नहीं !
बज़्मे-हस्ती[२] में ठहर कर, हमने देखा हर तरह,
और तो सब कुछ है, लेकिन, इम्बिसाते[३] दिल नहीं !
बात बन-बन कर बिगड़ती है, तो है इसमें यह बात,
डालते थे जो असर दिल पर, वह अहले-दिल नहीं !
एक के दम से जहाँ में, दूसरे की है नमूद,[४]
दिल नहीं तो हम नहीं, हसरत नहीं, तो दिल नहीं !
खींचिए आकर ज़रा पहलू से, तो खुल जाय राज़,
आप कहते हैं, कि मेरा तीर जुज़्वे[५] दिल नहीं !
अपनी हाजत पर करे, औरों की हाजत का लेहाज़,
यों हमारा, यों तुम्हारा, यों किसी का दिल नहीं !
आपके ग़मज़ों को भी, आते हैं क्या-क्या तोड़-जोड़,
दिल नहीं पहलू में, लेकिन फिर भी मैं बेदिल नहीं !
—"नूह" नारवी

मानता हूँ मैं, यह तेरा काम ऐ क़ातिल नहीं,
क्या हुआ पहलू से दिल, पहलू में फिर क्यों दिल नहीं ?
कीजिए इसरार,[६] लेकिन इससे कुछ हासिल नहीं,
मुफ़्त कोई आपको दिल दे दे, वह शै दिल नहीं !
तुमसे क़ातिल के लिए, तुमसे सितमगर के लिए,
दिल नहीं, हाँ दिल नहीं, हाँ दिल नहीं, हाँ दिल नहीं !
ग़मज़ा[७] कहता है मुझे दो, नाज़ कहता है मुझे,
क्या करूँ मैं एक दिल है, और कोई दिल नहीं !
तर्क रस्मे-इश्क़ पर इन्साफ़ करना चाहिए,
बेमुरव्वत आप ही हैं, बेमुरौवत दिल नहीं !
—"आज़ाद" सहसरामी

सर्दमेहरी की शिकायत से, कोई हासिल नहीं,
उनकी वह पहली मुहब्बत, वह नज़र, वह दिल नहीं !
—"अदीब" कडपोई

सर में तेरे ज़ुल्फ़ का सौदा, कब ऐ क़ातिल नहीं ?
कब गिरफ़्तारे सलासिल,[८] यह हमारा दिल नहीं !
—"अख़गर" दीनाजपूरी

दिल न होता तो हमेशा, सहते क्यों दर्दे-फ़िराक़ ?
हैं वही आराम से पहलू में जिनके दिल नहीं !
किस तरह मुझसे उठे, अब नाज़े-बेजा आपका ?
अब तबीयत वह नहीं है, अब वह मेरा दिल नहीं !
—"अतहर" गुरबारी

क्या हुई अगली मुहब्बत, क्या हुआ अगला मिलाप ?
या तो अब वह हम नहीं, या आपका वह दिल नहीं !
आप छेड़ेंगे इसे, तो छेड़ कर पछताएँगे,
एक छाला है मेरे पहलू में, मेरा दिल नहीं !
तिर्छी नज़रों पर, इसे क़ुर्बान रहना चाहिए,
तुम जो "बाँके" हो तो क्यों बाँका तुम्हारा दिल नहीं ?
—"बाँके" देहरादूनी

असल उलफ़त की निगाहों में, किसी क़ाबिल नहीं,
उसको पत्थर जानिए, जो दर्द वाला दिल नहीं !
इस तरफ़ कुछ और सूरत, उस तरफ़ कुछ और हाल,
एक-दिल का लुत्फ़ क्या, हम तुम अगर इक-दिल नहीं !
रोज़ोशब इसको, तड़पने, लोटने से काम है !
"बर्क़" मिसले बर्क़,[९] क़ाबू में हमारा दिल नहीं !!
—"बर्क़" बयापूरी

शिकवए-ग़म पर हमारे, हँस रहे हैं दोस्त भी,
हो गया मालूम, अब दुनिया में अहले-दिल नहीं !
सैकड़ों मिलते, तो करता इनको भी तुम पर निसार,
एक दिल है और उस दिल के अलावा दिल नहीं !
—"मदनी" कलकतवी

अब नहीं वह सर, कि सौदा हो तुम्हारी ज़ुल्फ़ का,
बे-नतीजा जो फ़िदा तुम पर हो, ऐसा दिल नहीं,
—"ख़लिश" गयावी

१—फूट, २—संसार, ३—आनन्द, ४—प्रकट, ५—हिस्सा ६—हठ, ७—भाव, ८—ज़न्जीर ९—बिजली,

सर अगर है सर, तो फिर सौदा भी सर में चाहिए !
दिल नहीं कहते उसे, जिस दिल में दर्दे-दिल नहीं !!
दिल जभी तक दिल है; जब तक, है सरापा आरज़ू !
आरज़ू दिल से अगर निकली, तो दिल भी दिल नहीं !!

इम्तिहाँ गाहेजुनूँ में, काम दिल वालों का है,
आए क्या उस बज़्म[१०] में, पहलू में जिसके दिल नहीं !
—"रयाज़" अवगुलवी

है यह सच, वे एक-दिली के; क्या नतीजा ज़ीस्त[११] का,
लेकिन अपने हम-वतन, इस पर भी तो एक-दिल नहीं !
—"सेहर" बयापूरी

कौन कहता है, कि यह मुज़्तर[१२] नहीं, बिस्मिल नहीं ?
बन्दापरवर कुछ हमारा दिल तुम्हारा, दिल नहीं !!
—"सरीर" कावरी

हालते-दिल क्या कहूँ, इज़हार के क़ाबिल नहीं !
सख़्त मुश्किल है, कि अब क़ाबू में अपना दिल नहीं !
—"क़ाज़ी" दौलतपूरी

काम होना चाहिए, वादों से कुछ हासिल नहीं,
अब मेरी उम्मीद भी वजहे सुकूने[१३] दिल नहीं।
"सीमाब" अकबराबादी

हम वही हैं, देख लो ! दिल भी हमारा है वही;
तुम वही हो देख लो, अब वह तुम्हारा दिल नहीं !
ख़ुद ही गुम हूँ, क्या बताऊँ मैं तुझे ऐ बेख़ुदी !
ढूँढ़ कर तू ही बता, पहलू में है, या दिल नहीं ?
दिल सितानी[१४] हो चुकी, अच्छा दिल-आज़ारी[१५] सही,
दर्द ही तेरा रहे, पहलू में जिसके दिल नहीं !
—"शफ़क़" अमादपूरी

दिल लगा कर, तुमसे हमने किस क़दर सदमे सहे !
क्या कहें अब हाले-दिल, क़ाबू में अपना दिल नहीं !
—"क़मर" बनारसी

कोई कहदे क्या करेंगे, यह निकम्मे हाथ-पाँव,
सर भी अब वह सर नहीं है, दिल भी अब वह दिल नहीं !
—"वजद" अज़ीमाबादी

ले उड़ी शायद, निगाहे यार-जाना[१६] ले उड़ी
देखते हैं हम, तो पहलू में हमारा दिल नहीं !
—"ऐश" बयापूरी

तुम हमें भूलो, मगर हम याद से ग़ाफ़िल नहीं,
जिस तरह का दिल तुम्हारा है, हमारा दिल नहीं !
—"शौक़" सहसरामी

थे किसी क़ाबिल कभी हम, अब किसी क़ाबिल नहीं
वह जवानी, वह उमङ्गें, वह जिगर, वह दिल नहीं !
—"हामिद" अज़ीमाबादी

१०—सभा, ११—जिन्दगी, १२—बेचैन, १३—धीरज, १४—दिल लेना, १५—दुख देना, १६—प्रेमिका,

उनका यह आलम, कि देखा भी नहीं अब तक इधर,
मेरी यह हालत, कि क़ाबू में अभी से दिल नहीं !
—"ख़लीक़" फ़ैज़ाबादी

हैं बहुत नादिम[१७] ज़माने पर, भरोसा करके हम
अब खुला, हर यक के सीने में हमारा दिल नहीं !
—"नातिक़" गुलावठी

सर अगर है सर, तो फिर सौदा भी सर में चाहिये,
दिल नहीं कहते उसे, जिस दिल में दर्दे-दिल नहीं !
—"बशीर" मलकापूरी

दिल जभी तक दिल है; जब तक है सरापा आरज़ू !
आरज़ू दिल से अगर निकली, तो दिल भी दिल नहीं !
—"ख़लील" नयाज़ी

हो कशिश दिल में, तो आ जाते हैं खिच कर इस तरह,
गर न हो जज़्बे-मुहब्बत दिल में, तो कुछ दिल नहीं !
—"जरीह" अमरावती

बेवफ़ा से मिलके, यह भी बेवफ़ा हो जायगा,
यह ख़बर होती, तो करते ऐतबारे दिल नहीं !
—"अख़तर" नागपूरी

ख़ून की लहरों में, रह-रह कर चमक उठता है कुछ,
एक बिजली है मेरे सीने में, शायद दिल नहीं !
—"आग़ाज़" बिरारी

अब वह ज़ौक़े शायरी, "अहसाँ" न वह लुत्फ़े-ग़ज़ल,
मिट गए सब वलवले, वह हम नहीं वह दिल नहीं !
—"अहसाँ" बाँदवी

तर्क उलफ़त की हमें, देता है क्यों नासेह[१८] सलाह ?
जानता है जब कि क़ब्ज़े में, हमारा दिल नहीं !
—"तालिब" मिदनापूरी

बन्दापरवर ! हमने माना हम किसी क़ाबिल नहीं !
लेकिन इतने ज़ुल्म सहना भी पसन्दे-दिल नहीं !
—"कामिल" अज़ीमाबादी

जो कहें वह कर दिखाएँ, इसके हम आमिल[१९] नहीं,
दो ज़बानों क्यों नहीं, किस वास्ते दो दिल नहीं ?
हो जो इसतक़लाल[२०] तो, कुछ काम शायद हो सके,
एक सूरत, एक पहलू पर, हमारा दिल नहीं !
दिल से निकले, लब तक आए, लब से पहुँचे अर्श[२१] तक,
दिल ही दिल में जो रहे, घुट कर वह आहे-दिल नहीं !
क्या करूँ ऐ ख़न्जरे-ग़म, क्या करूँ ऐ तीरे-इश्क़ !
हैं तो दो पहलू, मगर दोनों में एक एक दिल नहीं !
—"बिस्मिल" इलाहाबादी

१७—लज्जित, १८—नसीहत करने वाला, १९—अमल करने वाला, २०—धीरज, २१—आकाश

'चाँद' कार्यालय की विख्यात पुस्तकें

निर्वासिता

निर्वासिता वह मौलिक उपन्यास है, जिसकी चोट से क्षीणकाय भारतीय समाज एक बार ही तिलमिला उठेगा। अन्नपूर्णा का नैराश्यपूर्ण जीवन-वृत्तान्त पढ़ कर अधिकांश भारतीय महिलाएँ आँसू बहावेंगी। कौशलकिशोर का चरित्र पढ़ कर समाज-सेवियों की छातियाँ फूल उठेंगी। उपन्यास घटना-प्रधान नहीं, चरित्र-चित्रण-प्रधान है। निर्वासिता उपन्यास नहीं, हिन्दू-समाज के वक्षस्थल पर दहकती हुई चिता है, जिसके एक-एक स्फुलिङ्ग में जादू का असर है। इस उपन्यास को पढ़ कर पाठकों को अपनी परिस्थिति पर घराटों विचार करना होगा, भेड़-बकरियों के समान समझी जाने वाली करोड़ों अभागिनी स्त्रियों के प्रति करुणा का स्रोत बहाना होगा, आँखों के मोती बिखेरने होंगे और समाज में प्रचलित कुरीतियों के विरुद्ध क्रान्ति का झण्डा बुलन्द करना होगा; यही इस उपन्यास का संक्षिप्त परिचय है। मूल्य ३) रु०

अनाथ पत्नी

इस पुस्तक में बिछुड़े हुए दो हृदयों—पति-पत्नी—के अन्तर्द्वन्द्व का ऐसा सजीव चित्रण है कि पाठक एक बार इसके कुछ ही पन्ने पढ़ कर करुणा, कुतूहल और विस्मय के भावों में ऐसे ओत-प्रोत हो जायँगे कि फिर क्या मजाल कि इसका अन्तिम पृष्ठ तक पढ़े बिना कहीं किसी पत्ते की खड़खड़ाहट तक सुन सकें।

अशिक्षित पिता की अदूरदर्शिता, पुत्र की मौन-व्यथा, प्रथम पत्नी की समाज-सेवा, उसकी निराश रातें, पति का प्रथम पत्नी के लिए तड़पना और द्वितीय पत्नी को आघात न पहुँचाते हुए उसे सन्तुष्ट रखने को सचेष्ट रहना, अन्त में घटनाओं के जाल में तीनों का एकत्रित होना और द्वितीय पत्नी के द्वारा, उसके अन्तकाल के समय, प्रथम पत्नी का प्रकट होना—ये सब दृश्य ऐसे मनमोहक हैं, मानो लेखक ने जादू की क़लम से लिखे हों!! शीघ्रता कीजिए, केवल थोड़ी ही प्रतियाँ शेष हैं। छपाई-सफ़ाई दर्शनीय; मूल्य केवल लागत मात्र २) स्थायी ग्राहकों से १॥)

सन्तान-शास्त्र

पुस्तक का नाम ही उसका परिचय दे रहा है। गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने वाले प्रत्येक नवयुवक को इसकी एक प्रति अवश्य रखनी चाहिए। इसमें काम-विज्ञान सम्बन्धी प्रत्येक बातों का वर्णन बहुत ही विस्तृत रूप से किया गया है। नाना प्रकार के इन्द्रिय-रोगों की व्याख्या तथा उनसे त्राण पाने के उपाय लिखे गए हैं। हज़ारों पति-पत्नी, जो कि सन्तान के लिए लालायित रहते थे तथा अपना सर्वस्व लुटा चुके थे, आज सन्तान-सुख भोग रहे हैं।

जो लोग झूठे कोकशास्त्रों से धोखा उठा चुके हैं, प्रस्तुत पुस्तक देख कर उनकी आँखें खुल जायँगी। काम-विज्ञान जैसे गहन विषय पर हिन्दी में यह पहिली पुस्तक है, जो इतनी छान-बीन के साथ लिखी गई है। भाषा अत्यन्त सरल एवं मुहावरेदार; सचित्र एवं सजिल्द तथा तिरङ्गे प्रोटेक्टिङ्ग कवर से मण्डित पुस्तक का मूल्य केवल ४); तीसरा संस्करण अभी-अभी तैयार हुआ है।

मालिका

यह वह मालिका नहीं, जिसके फूल मुरझा जायँगे; इसके फूलों की एक-एक पङ्खुरी में सौन्दर्य है, सौरभ है, मधु है, मदिरा है। आपकी आँखें तृप्त हो जायँगी। इस संग्रह की प्रत्येक कहानी करुण-रस की उमड़ती हुई धारा है।

इन कहानियों में आप देखेंगे मनुष्यता का महत्व, प्रेम की महिमा, करुणा का प्रभाव, त्याग का सौन्दर्य तथा वासना का नृत्य, मनुष्य के नाना प्रकार के पाप, उसकी घृणा, क्रोध, द्वेष आदि भावनाओं का सजीव चित्रण। आप देखेंगे कि प्रत्येक कहानी के अन्दर लेखक ने किस सुगमता और सचाई के साथ ऊँचे आदर्शों की प्रतिष्ठा की है। पुस्तक की भाषा अत्यन्त सरल, मधुर तथा मुहावरेदार है। शीघ्रता कीजिए, अन्यथा दूसरे संस्करण की राह देखनी होगी।

सजिल्द, तिरङ्गे प्रोटेक्टिङ्ग कवर से सुशोभित; मूल्य केवल ४); स्थायी ग्राहकों से ३)

व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

तकली

[श्री० परशुराम जी मेहरोत्रा, एम० ए०]

किशोरी—भाभी, तुम तो दो महीने पहले दिन भर क्रोशिया चलाया करती थीं, ऊनी और सूती गोलों के लिए भैया की जान खाए रहती थीं, खाना पड़ा फ़ुँकता रहता था, परन्तु तुम अपनी सलाइयाँ हाथ से न छोड़ती थीं—परन्तु भाभी, आजकल क्यों उससे नफ़रत हो गई है ?

भाभी—क्या करूँ किशोरी, तुम्हारे भाई सूत लाकर ही नहीं देते, ऊनी गोले ऊलन मिल के होने के कारण आधे विलायती हैं, मोज़ा आधा बना पड़ा है। सलाई को घिस कर पैसे के मध्य बिन्दु में छेद करके तुम्हारे भाई ने तकली बना ली है।

किशोरी—वाह री भाभी वाह ! तुमने भी ख़ूब सुनाई।

भाभी—उन्होंने तकली को अपनाया है ! वह उनके सामने नाचा करती है, उसे वे रूमाल के स्थान पर जेब में आसन देते हैं, उसे कभी मेज़ पर रख कर और कभी खड़े-खड़े घुमाते हैं। पोनी के पास उनकी चुटकी रहती है और सदा उसी पर निगाह। दफ़्तर से आते ही उसे लेकर बैठ जाते हैं, जल-पान की याद भी नहीं रहती, परन्तु तकली की तलाश तुरन्त की जाती है—सोने के समय भी तकली रानी का मुखड़ा निहारा करते हैं।

किशोरी—तो यों कहो, उन्होंने तकली को पाणि में ग्रहण किया है।

भाभी—बहिन किशोरी, कुछ न पूछो, नाक में दम है। लेकिन जैसे कतरने वाली चीज़ का नाम कतरनी और अटेरने वाली चीज़ का नाम अटेरनी, उसी तरह कातने वाली चीज़ का नाम कतनी होना चाहिए था, सो तकली कौन से हिसाब से नाम पड़ा ?

किशोरी—नाक में दम कैसा ? तुम चर्ख़ा कातो, वे तकली चलावें। भाभी, देखो उसका नाम तकली तीन कारणों से पड़ा—एक तो उसमें तकलीफ़ कम होती है, दूसरे तकले से छोटी चीज़ तकली न कही जाएगी तो क्या कही जावेगी, और तीसरे यह कि इसने भारत-माता की स्वतन्त्रता तक ली है।

भाभी—हूँ-हूँ—फ़ुरसत कहाँ जो चर्ख़ा चलाऊँ, तू तो शास्त्री-जैसी बातें करती है। क्रोशिया भी बड़ी मुश्किल से चला पाती थी, वह भी समय बचा कर ! सो उन्होंने उसकी तकली बना डाली। उस दिन मैं "हिन्दी-नवजीवन" पढ़ रही थी। उसके किसी पिछले अङ्क में यह लिखा था कि बाँस की डण्डी छील कर चिकनी बना ली जाए और एक ओर से क्रमशः ढालू रखते हुए दूसरे सिरे पर स्लेट गोरैया या पके खपटे को गोल घिस कर उसके बीचों-बीच छेद करके, उस चिप्पल को सीधा जमा लेने से तकली बन जाती है। न उसमें पैसे का ख़र्च और न किसी की चीज़ की जबरन छीनने की ज़रूरत। क्यों न किशोरी ?

किशोरी—फ़क़त चाक़ू की ज़रूरत पड़ती है, सो तरकारी की डलिया से उठा लिया या लड़कों के क़लमदान से निकाल लिया !

भाभी—इस मुई का नाच भी मुझे नहीं सुहाता, क्योंकि इसकी दुनिया न्यारी है। भारी बदन वाली भी अगर नाचे तो जल्द थकेगी और नाच भी बिगड़ेगा, छरेरे बदन वाली अगर नाचे तो उत्तम नाचेगी और देर तक नाच सकती है, मगर तकली जितनी भारी होती है उतनी ही तेज़ नाचती है। हलकी तकली नाचते-नाचते जल्दी थकती है, नाच में भी स्थिर नहीं रहती और किशोरी, उसकी सूरत भी बड़ी अनोखी होती है—देखो न, पैर कितने भारी और गर्दन कितनी पतली। और कमर कितनी लम्बी, और फिर वह गूँगी होती है; तोतला अच्छा, मगर गूँगा अच्छा नहीं।

किशोरी—भाभी, तुमने तो कमाल कर दिया। मालूम होता है तुमने प्रेमी कतैए नहीं देखे हैं। जब तकली से महीन सूत निकालने वाले उसकी ओर देखते हैं तो अपना आपा तक भूल जाते हैं। दूध जैसी धार निकालते हैं और उसके नख़रे हाथों पर लिए रहते हैं। वह तुनक-मिज़ाज होती है, कोमलाङ्गी होती है।

श्री० फ़िरोज़ पी० नाज़िर

आप जी० आई० पी० रेलवे के बिजली के इञ्जीनियर हैं। हाल ही में आपको कराची ऐरो क्लब से वायुयान चलाने का 'ए' श्रेणी का लाइसेन्स मिला है।

भाभी—मुझे तो ऐसी तकली तनिक भी नहीं सुहाती। जब देखो तब कच्चे धागे से लटकी रहती है, छूते ही गिर पड़ती है, इधर-उधर देखने से उलटी चलने लगती है। पोनी बासी इस्तेमाल करने से रूठ जाती है और रस्सी जैसा सूत उगलने लगती है या अड़ियल घोड़ी बन जाती है। कोमल इतनी होती है कि ज़मीन पर गिरते ही लँगड़ी हो जाती है; कभी-कभी ऐसा चुभती है कि ख़ून निकाल देती और प्राण तक हर लेती है। यह निगोड़ी कई रकम की होती है। बाँस की खपच्चियों को आड़ी-बेड़ी रख कर धन के चिन्ह जैसा बना लो, अधन्ने से या मिट्टी की खपरैल से बना लो। सुपारी से बना लो, काठ की बना लो। हड्डी, सींग, लोहा, पीतल, हाथी-दाँत और दफ़्ती तक की बनी देखी है। सबकी शक्लें जुदा-जुदा होती हैं—कोई चौड़ी-चकली, कोई दुबली-पतली, कोई गोरी, कोई काली, कोई भारी, कोई हलकी।

किशोरी—हाँ भाभी, तकली कई तरह की चलती देखी है, परन्तु मैं तो तुम्हारे लिए भैया जो मलाई लाते हैं, उसका सकोरा लूँगी और उसकी पेंदी घिस कर, उसकी तकली बना कर भैया को दूँगी। एक बार उनकी तकली को ख़ुद भी चलाऊँगी। परन्तु सुना है कि उसके चलाने में पाँच नियमों का एक साथ पालन आवश्यक है—बाएँ हाथ की चुटकी में पोनी पर दाब एक सा रखना तथा चावल भर पोनी निकली हुई रखना, दाहिने हाथ की चुटकी पोली और नरम रख कर पाँच इञ्च की दूरी से तार खींचना, सूत का डण्डी की जड़ में ठस लपेटना और डण्डी के सिरे पर दो फेरे देकर अटकाना तथा तकली को कभी उलटी न चलने देना। और भैया तो उसे ऐसे घुमाते हैं जैसे रुपया खनकाते हों। उनका अँगूठा व उसके पास वाली उँगली हलके झटके से काम लेती है, तकली देर तक नाचती रहती है।

भाभी—कल से एक बला घर में और आई है, वह है—'तुक-तुक ताँय-ताँय' करने वाली महागन्दी और टेढ़ी-मेढ़ी धुनकी।

किशोरी—भाभी, यह तो तकली की सखी-सहेली है। इसकी मदद से सूत गोल, एक-साँ, मज़बूत और तेज़ी से निकलता है, पैसे बचते हैं और दूसरे का मुँह नहीं ताकना पड़ता है।

भाभी—मैं रोटी करने जा रही थी, वह मुई खूँटी पर टँगी थी—धोती का पल्ला लग गया, फिर से नहाना पड़ा। आजकल चिल्ले के जाड़ों में नहाना सहज नहीं।

किशोरी—तो भाभी नहाने की क्या ज़रूरत थी ?

भाभी—क्या ? क्या ताँत आँतों की नहीं बनती ? आँत क्या पवित्र चीज़ है ? कल्यानी की माँ कहती थी कि रेशम की डोरी या मूँज छोटे बाबू जी क्यों नहीं लगाते ?

किशोरी—भाभी, ताँत टिकती ज़्यादा है, काम भी अच्छा निकालती है। बात की बात में रुई को मक्खन की तरह फुला देती है, रुई को मैल, धूल में से उठा लाती है। रुई के रेशे खोलती, फैलाती, फेंकती, काटती और गेंद की तरह उछालती है। इसी ताँत में गाँधी महात्मा तो सङ्गीत बताते हैं और तुम उसे छूना तक पसन्द नहीं करतीं। अरे मोरे राम !

भाभी—ना बाबा, धुनकी में बीसों खटराग होते हैं, मेरे तो हाथ दो ही मिनट में थक जाते हैं।

किशोरी—तो तुम्हें क़ायदे से धुनना न आता होगा, अच्छा अगले इतवार को मैं आऊँगी और धुनना सिखाऊँगी। मुझे आता है।

भाभी—अच्छा किशोरी, अगर मैं भी कातूँ तो कितना कपड़ा बनेगा ?

किशोरी—एक घण्टे में लगभग १०० गज़ सूत निकलना तकली से कठिन नहीं। वर्धा-आश्रम के बालक तो इससे दुगुना सूत फ़ी घण्टा कात लेते हैं, इस प्रकार सौ गज़ सूत रोज़ जमा करते जाने से १ गज़ लम्बा और १ गज़ चौड़ा कपड़ा महीने के अन्त में मिलेगा। आजकल रुई तीन सेर की है और सेर भर में पाँच गज़ खद्दर तैयार होता है, तो मानो एक आना गज़ लागत पड़ेगी (बुनाई अलग), लेकिन इसमें १० मिनट छोटी धुनकी से धुनना भी शामिल है। गाँधी महात्मा तक रोज़ धुनते व कातते हैं ! देखो भाभी, अगर इतना न कात सको, तो ५० गज़ ही रोज़ काता करो, भैया की जेब के रूमाल ही निकल आया करेंगे ! बीजे छीलने और निंदा-गाथा में भाग लेने के बजाय अगर यही किया करो तो कपड़ा का कपड़ा मिले, उनसे प्रेम भी बढ़े, स्वभाव भी शुद्ध हो।

भाभी—अच्छी बात है, सीखूँगी और ज़रूर सीखूँगी। मगर सूत बुनवा कर कौन देगा ? हलकी धुनकी कहाँ से मिलेगी ?

किशोरी—सत्याग्रह-आश्रम साबरमती, नवयुवक चर्ख़ा-मण्डल कानपुर, खादी-भण्डार कलकत्ता—की धुनकियाँ उत्तम होती हैं। खद्दर बुनने में कोरी सिद्ध-हस्त होते हैं।

* * *

स्त्रियों का ओज

राजपूतनी की राख

[लेखक—???]

"रणथम्भोर का दुर्जय दुर्ग उस दैत्य ने विजय कर लिया। सावन्त हम्मीर ने १ वर्ष वीरता से युद्ध किया और अन्त में वह मारा गया। वहाँ एक भी मर्द जीवित नहीं है। लाशें गली-कूँचे में सड़ रही हैं और २४ हज़ार स्त्रियों ने जौहर-व्रत से अपनी प्रतिष्ठा की रक्षा की है। वह बड़ा भयानक, बड़ा ख़ूनी, बड़ा निर्दयी, बड़ा पतित नर-पशु है, अब वह अन्धाधुन्ध चित्तौर पर चढ़ा आ रहा है।"

"स्वामिन्, आप अधिक भयभीत प्रतीत होते हैं।"

"महारानी, मैंने राजपूतनी का दूध पिया है, और मैं राजपूत के वीर्य से उत्पन्न हूँ। भय क्या होता है, मैंने नहीं जाना। पर उस नीच का उद्देश्य अत्यन्त कुत्सित है।"

"वह चित्तौर पर दाँत रखता है न? चित्तौर रणथम्भोर तो नहीं। क्या आपके पास रजपूतों का अभाव है?"

"नहीं प्रिये!"

"क्या उन्हें प्राण प्यारे हो गए हैं?"

"नहीं-नहीं प्रिये, चित्तौर के सीसोदिया नाहरी के जाए असल नाहर हैं!"

"फिर चिन्ता क्या है स्वामिन्?"

"वह चित्तौर-विजय के लिए नहीं आ रहा है"

"फिर किस लिए आ रहा है?"

"वह बात कहने योग्य नहीं"

"फिर भी कहिए तो"

"वह तुम्हारे लिए आ रहा है"

"उसका ऐसा साहस?"

"उसने गुजरात के राजा कर्ण को मार कर उसकी रानी और बेटी को ज़बर्दस्ती अपने घर में डाल लिया है।"

"पर पद्मिनी गुजरात की रानी नहीं, सीसोदिया-वंश की कुलवधू है।"

"पर प्रिये, उसका प्रस्ताव अद्भुत है"

"वह क्या है—सुनूँ'

"वह केवल एक बार अपनी आँखों से तुम्हारा रूप निहार कर लौट जाना चाहता है; वह भी प्रत्यक्ष नहीं, शीशे की परछाईं में।"

"पर चित्तौर के धोबी भी अपनी स्त्री की यह अप्रतिष्ठा सहन न करेंगे।"

"पर प्रिये, सहस्रों प्राणों के वारे-न्यारे का प्रश्न है, कदाचित इस चित्तौर का भी।"

"क्या महाराजा उसके नीच प्रस्ताव से सहमत हैं?"

"नहीं, मैं सिंहल-कुमारी की प्रतिष्ठा के लिए प्राण देने को अनायास ही तैयार हूँ, यह साधारण बात है, और सीसोदिया भी नामर्द नहीं—पर क्या अपनी स्त्री की रक्षा के लिए मैं हज़ारों बेटियों-बहुओं को विधवा बनाऊँ? चित्तौर के दुर्ग को खण्डहर होने दूँ? इस तूफ़ान से यों ही टक्कर ले लूँ! प्रिये, राजपूत के लिए युद्ध में प्राण त्यागना उसका सौभाग्य है, पर राजा के लिए राजनीति ही सर्वोपरि है।"

"तब आपकी राजनीति कहती है कि इस अपमान का घूँट पी लिया जाय, पद्मिनी की मुख-छवि म्लेच्छ को दिखा दी जाय, और चित्तौर का सङ्कट बिना रक्त-पात के टाल दिया जाय?"

"हाँ रानी, राजनीति यही कहती है"

"तब मैं यह सोच देखूँ कि प्राण दूँ या प्रतिष्ठा?"

"नहीं, यह सोच देखो कि प्रतिष्ठा दूँ, या सहस्रों सीसोदियों का रक्तपात बचाऊँ, चित्तौर का सर्वनाश बचाऊँ, सहस्रों कुल-बहुओं को विधवा होने और आग में जल मरने से बचाऊँ?"

"सोच लिया स्वामिन्, विलम्ब का काम नहीं। मैं अपनी प्रतिष्ठा का बलिदान दूँगी, चित्तौर को नष्ट करने की आवश्यकता नहीं है। राजपूत बालाओं के माथे का सौभाग्य-सिन्दूर अचल रहे। पद्मिनी के लिए उनके पति और पुत्रों का एक बूँद रक्त भी न गिरने पावेगा। जाओ कह दो उस ख़ूनी पशु से, उस घृणित म्लेच्छ से, वह आकर अच्छी तरह इस कलङ्किनी का मुख देख जाय।"

"रानी, मैंने उससे एक प्रस्ताव किया था।"

"क्या स्वामिन्?"

"यह कि यदि मैं उसे आत्म-समर्पण कर दूँ, तो क्या वह सन्तुष्ट होगा?"

"नहीं स्वामी, आपके प्राणों को वह क्या करेगा। उसे चाहिए मेरा रूप-दर्शन। जाइए दिखा दीजिए। और सुनिए—"

"क्या रानी"

"क़िले को और अपने आपको सर्वथा सुरक्षित रखिए। वह शत्रु निरस्त्र और एकाकी आवे।"

"ऐसा ही होगा रानी"

२

"महाराज, देख लिया। आप बड़े ख़ुशक़िस्मत हैं, ऐसी ख़ूबसूरत रानी आपने पाई। वाह! क्या कहने हैं, जैसे सोने की मूर्ति हो।"

"सुलतान, व्यर्थ रक्तपात से बचने और आपकी मित्रता के वचन पर भरोसा करके मैंने यह अपमान-जनक काम किया है, जो सीसोदिया वंश के किसी अदने व्यक्ति ने भी न किया होगा।"

"महाराज, आप हमारी दोस्ती का भरोसा रखिए। ताज़िन्दगी यह क़ायम रहेगी। हम अब पगड़ी बदल भाई हुए। लीजिए हमारी पगड़ी और दीजिए हमें अपनी।"

"सुलतान, मैं आपका विश्वास करता हूँ। यदि इस अप्रतिष्ठा के बदले दिल्ली के तख़्त की दोस्ती चित्तौर को मिल जाय तो मैं समझूँ कि मुझे मेरी अप्रतिष्ठा का बदला मिल गया।"

"ओह, आप इसे बेइज़्ज़ती क्यों कहते हैं, जब हम भाई-भाई हुए। अरे! फाटक आ गया। महाराज, अब आप क्यों तकलीफ़ करते हैं? अरे, इतनी दूर आपको आना पड़ा, अब आप कहाँ तक चले जायँगे?"

"सुलतान, और ज़रा दूर सही, आप हमारे अतिथि हैं। अतिथि-सत्कार हमारा कुल-धर्म है। फिर आप दिल्ली के सुलतान हैं।"

"आपकी शराफ़त और तवाज़ा का मैं बहुत ही क़ायल हूँ। आप वाक़ई दोस्ती के क़ाबिल हैं। और अच्छा, अब मैं जल्द ही छावनी उठा लूँगा। आपकी क्या राय है, अरे, आप फाटक से बहुत दूर आ गए, (इधर-उधर देख कर) कोई है?"

(एकदम झाड़ियों से सशस्त्र यवनों का निकल कर राणा को देखते-देखते क़ैद कर लेना, और घोड़े पर बाँध कर तीर की भाँति सुलतान का भाग जाना। क़िले में हलचल मच जाना)

३

"काकी रानी, अब क्या करना?"

"बेटा बादल, घबराओ नहीं, मैं महाराणा को लाऊँगी।"

"काकी, हम लोग युद्ध के लिए प्रस्तुत हैं"

"नहीं बेटे, यह युद्ध का अवसर नहीं, काँटे से काँटा निकाला जायगा। गोरा को बुला लो।"

"जुहार, काकी रानी"

"गोरा और बादल, सुनो पुत्रो—तुम अल्पायु हो, पर मुझे तुम्हारी ही आवश्यकता है, कहो तुम्हारी भुजा में कितना बल है?"

"यथेष्ट है, काकी रानी"

"अच्छी बात है, सुनो। सुलतान को लिख दो कि रानी अपनी सहेलियों सहित आपकी सेवा में आती हैं, युद्ध करने की आवश्यकता नहीं। महाराज को छोड़ दिया जाय।"

"यह क्या काकी......... ?"

"सुनो, सात सौ डोलियाँ इस समय क़िले में तैयार हैं। उन सब में प्रत्येक में दो-दो सशस्त्र योद्धा बैठा दो। ऊपर परदा डाल दो। ये सात सौ मेरी सहेलियाँ होंगी।"

भारतवासियों के प्रति

[श्री० आनन्दीप्रसाद जी श्रीवास्तव]

(१)

करते स्वदेश का हो तुम अपमान यदि
पूजा करते हो उसके न प्रति कन की,
जो लगाते देश-हित में उसे नहीं हो तुम
करते हो दुर्दशा बड़ी स्वकीय धन की,
देश पर बलिदान करते उसे नहीं जो
मिट्टी में मिलाते महिमा हो निज तन की
वह मन-संज्ञा-योग्य ही कभी नहीं है, और
देश-सेवा के हुई न गति जिस मन की।

(२)

दमन तुम्हारा प्रति क्षण हो रहा है हाय,
भीति तुमको है एक बार के दमन की,
छोड़ते स्वदेश-हित-हेतु हा नहीं हो उसे
छिन सकती जो किसी क्षण राशि धन की,
अगणित तन धीरे-धीरे नष्ट हो रहे हैं
ममता है एक बार कुछ कोटि तन की,
क्षति बार-बार सहते हो, एक बार नहीं
गति न समझ पड़ती तुम्हारे मन की!

(३)

आज भी तुम्हारे चरणों पर पड़ी है बड़ी
जग की सकल राशियों से राशि धन की,
प्रकृति ने अगणित तुमको बना दिया है
हो न सकती है तुमको तो कमी जन की,
है विचित्र बात और समय की घात जो कि
तुमको भी रहती है भीति यों दमन की,
मुट्ठी भर जनों* के मनों का देखो समुत्साह
और ज़रा देखो दशा अपने भी मन की।

* अङ्गरेज़ों

"यह कैसी सहेलियाँ ?"

"और सुनो। प्रत्येक डोली में चार-चार सावन्त कहार बन कर लगे चलेंगे। ये सब सशस्त्र होंगे और ऊपर वस्त्र से हथियारों को ढक रक्खेंगे।"

"मैं समझ गया काकी"

"मैं भी समझ गया"

"ठहरो गोरा, तुम्हारा गोरा नाम क्यों है, जानते हो ? तुम चित्तौर में सब से गोरे और सुन्दर बालक हो। तुम काकी रानी के डोले में अपनी ढाल-तलवार लेकर जा डटो।"

"जय रानी की, हम सूर्यास्त से प्रथम ही महाराज को ले आवेंगे।"

"वहाँ पहुँच कर तुम एकान्त में क़नात के पर्दे में डोलियाँ ले जाना। और एक बार महाराज से एकान्त में मुलाक़ात करके बन्धन-मुक्त कर देना और म्लेच्छों पर टूट पड़ना। आगे तुम्हारा भुज-बल रहा।

"काकी, हम सूर्यास्त से प्रथम ही लौट आवेंगे, आप निश्चिन्त रहें।"

"अभी पत्र लिख दो और तैयारी करो, सभी योद्धा चुने हुए हों।"

"ऐसा ही होगा, काकी रानी।"

४

"पहरेदार ! यह कोलाहल कैसा है ?"

"आपकी रानी साहिबा, सुलतान की ख़िदमत में आई हैं। बाप रे—कितनी लौंडियाँ हैं। शायद तमाम फ़ौज के सिपाहियों को बाँटी जावेंगी, जनाब उसी की ख़ुशी में जश्न हो रहा है !"

"यह तू क्या बकता है—पाजी"

"जनाब महाराज—ज़बान सँभालिए, यह आपका क़िला नहीं, यहाँ पाजी कोई नहीं—बन्दा पठान है।"

"क्या यह सच है ?"

"नहीं तो नाच, गाना और शराब योंही उड़ रही है ?"

"रानी कहाँ है ?"

"सुलतान की बग़ल में होंगी"

"हरामज़ादे, क्या तूने देखा है ?"

"हज़रत दुपहर से डोलों का ताँता बँधा है, क्या हमारी आँखें फूट गई हैं। सभी को मालूम है।"

(एक सैनिक)

"महाराज, रानी साहिबा आपसे मुलाक़ात करने आई हैं। डोला हाज़िर है।"

"मुलाक़ात की ज़रूरत नहीं—उसे मेरे सामने से हटाओ।"

"मैं सुलतान का हुक्म बजा लाता हूँ, आपका नहीं—बन्दा रुख़सत होता है। पहरेदार, तुम भी हट जाओ। सुलतान का हुक्म है कि मुलाक़ात अकेले में होगी। महाराज ! सिर्फ़ आधा घण्टा।"

(प्रस्थान—डोली आती है, महाराणा अग्निमय नेत्रों से देखते हैं। भीतर से गोरा निकलता है।)

"यह क्या ?"

"चुप, लीजिए हथियार पहनिए। ठाकराँ, तुम महाराज की बेड़ियाँ काट दो। रेती है ?"

"है"

"गोरा !"

"महाराणा, सात सौ डोलियों में १४ सौ योद्धा हैं। ढाई हज़ार कहार के वेश में हैं। आइए म्लेच्छों पर टूट पड़ें।"

"लाओ मेरी तलवार, क्या शत्रु बेसुध हैं ?"

"सब शराब और नाच-तमाशे में मस्त हैं।"

"चलो"

"चलो"

"जय एकलिङ्ग"

"जय एकलिङ्ग" (प्रचण्ड घोष)

"मारो"

"काटो"

"पाजी"

"म्लेच्छ"

"हाय-हाय"

"तोबा-तोबा"

"ले दुष्ट, वह मारा"

"आह ! मरा"

"पानी-पानी"

"मारो-मारो"

"जय एकलिङ्ग की"

"जय महाराणा की"

"अरे भागो"

"भागो-भागो"

बधाई

सुप्रसिद्ध समाज-सेवी—मुन्शी नवजादिकलाल जी श्रीवास्तव लिखते हैं :—

'भविष्य' बड़ा ही सुन्दर निकल रहा है। उसका सुन्दर सम्पादन आपकी सम्पादकीय योग्यता का परिचायक है। मेरी बेवक़ूफ़ियाँ छोड़ कर, बाक़ी जितने लेख निकले हैं, सभी पठनीय और सामयिक हैं। चित्रों के लिहाज़ से भी 'भविष्य' हिन्दी का अद्वितीय पत्र है। परन्तु मुझे सब से अधिक पसन्द है, श्री० चतुरसेन शास्त्री की 'तरलाग्नि'। वास्तव में शास्त्री जी कमाल करते हैं। 'दुबे जी की चिट्ठी' का क्या कहना है। हज़रत पुराने घाघ हैं; ख़ूब पते की कह जाते हैं। मेरी तो राय है कि इस सन्बन्ध में वह जगद्गुरु के भी गुरु हैं। सप्ताह भर के समाचारों का संग्रह और उनका विभाग भी बड़ी सुन्दरता से हो रहा है।

"गोरा ?"

"राणा !"

"तुम कहाँ हो ?"

"महाराज, बादल मारे गए, आप धीरे-धीरे क़िले की ओर बढ़िए। पहुँचने का सङ्केत कर दें।"

"तुम पीछे हटते जाओ गोरा, तुम बालक हो, म्लेच्छों से मैं निबट लूँगा।"

"अन्नदाता, यह तो असली युद्ध नहीं, जाइए चित्तौर की रक्षा कीजिए।"

"गोरा, बेटा, सावधान—मैं नई सेना भेजता हूँ।"

"महाराणा, काका जुहार, निर्भय जाइए। क़िले में पहुँच कर सङ्केत कर दीजिए।"

५

"महारानी, अब दुर्ग की रक्षा असम्भव है, मैंने सेना को विसर्जन कर दिया है। केसर के कड़ाह चढ़ गए हैं, जिसे मरना हो केसरिया धारण करे, प्यारी अब तुम भी अपनी तैयारी करो।"

"स्वामी, इतना शोक न करो ; हम तैयार हैं। हमारे लिए स्थान कौन सा नियत किया है ?"

"क़िले की गुप्त सुरङ्ग में। यथासम्भव ज्वलनशील पदार्थ इकट्ठे कर दिए हैं। पूर्वी द्वार का लौह-फाटक बन्द कर दिया गया है। आग दे दी गई है। तुम सब कितनी हो ?"

"कुल १४ हज़ार"

"आज चित्तौर को यह दिन देखना पड़ा प्रिये ! हम शीघ्र मिलेंगे।"

"स्वामिन् इस भाँति मरने में तो मुझे गर्व है, पर शोक यही है कि चित्तौर का विध्वंस मेरे लिए हुआ। मैं प्रतिष्ठा बेच कर, छल करके भी उसे न बचा सकी। मैं सीसोदिया वंश की राहु बनी।"

"ऐसा न कहो प्रिये—आह ! वह कौन है ? राजदुलारी ! उसे मेरे सामने न आने दो—जाओ ले जाओ। रानी, अब समय नहीं है।"

(लड़की का प्रवेश)

"माँ, यह इतनी आग कैसी है ?"

"चलो बेटी, हमें वहीं चलना है"

"माँ, मुझे भय लगता है, मैं जल जाऊँगी"

"चलो बेटी, क्षत्रिय पुत्री भय नहीं किया करतीं"

(बहुत सी स्त्रियों का प्रवेश)

"जय महारानी, हम प्रस्तुत हैं"

"और राजपूत बालाओ, गले मिल लो, जिससे स्वर्ग में हम फिर मिलें।"

"अरे तुम रोती हो ?"

"और तू ? प्यारी बच्ची"

"अरी माता, तुझे इस आयु में भी भय है"

"बहू, मेरा हाथ दृढ़ता से पकड़—आज अग्निदेव से हमारा ब्याह होगा।"

"जय अग्निदेव"

"जय मा वसुन्धरे"

"जय पद्मिनी रानी"

"जय सीसोदिया वंश"

"जय चित्तौर—जय चित्तौर—जय—जय—जय !"

* * *

"वीरो, तुम कितने हो ?"

"महाराणा तीन सौ दस"

"तलवारें तो सब पर हैं न"

"हाँ अन्नदाता"

"जिसे प्राण प्यारे हों, वह अवश्य चला जाय"

"जय चित्तौर की—हम आज अमर होंगे"

"सरदारो, तुम्हारा नाम सदा जागता रहेगा"

"जय सीसोदिया वंश की"

"देखो, राजमहल भस्म हो गया—वह लपटें उठ रही हैं, हमारी पुत्रियाँ, बधुएँ, माताएँ, सब स्वर्ग में पहुँच चुकीं, चलो अब हम चलें।"

"चलो दरबार"

"जय एकलिङ्ग ! फाटक खोल दो"

"जय एकलिङ्ग"

"मारो"

"मारो"

"मारो"

"वह काटा"

"वह मारा"

"हाय-हाय"

"जय एकलिङ्ग"

"जय चित्तौर"

"जय सीसोदिया वंश, जय—जय—जय !"

* * *

"गाँधी का जेल में रहना ब्रिटिश शासन पर कलङ्क है"

"हर एक शिक्षित भारतीय अपने देश में ही एक ज़बरदस्त क़ैदी है"

"एक विचारवान और निष्पक्ष व्यक्ति की सम्मति के अनुसार भारत की वर्तमान आसन्न परिस्थिति के विरोध में इससे अधिक सङ्गत और युक्तिपूर्ण बात नहीं कही जा सकती, कि भारतीयों का सर्वस्व गाँधी, और उसके साथ अन्य प्रतिभाशाली, योग्य और सच्चे देशभक्त भारतीय, हिंसात्मक अपराधों के कारण नहीं, बल्कि केवल राजनैतिक क़ैदियों की हैसियत से जेलों में बन्द हैं। भारत का वर्तमान वायु-मण्डल इतना दूषित हो गया है, कि उसके कारण हर एक शिक्षित भारतीय अपने देश में एक ज़बरदस्त क़ैदी बन गया है। वह स्वतन्त्रता, जिसे भारत संग्राम के वधैले और भयङ्कर अस्त्रों से कभी प्राप्त न कर सकता, सत्याग्रह के नए आविष्कृत अस्त्र के उपयोग से उसकी ओर प्रबल वेग से दौड़ी जा रही है। जेलें लबालब भर चुकी हैं और अब उनमें और ठूँसठाँस करना उनकी परिमित शक्ति के बाहर है।"

श्री० डब्ल्यू नॉर्मन ब्राउन नामक सुप्रसिद्ध विद्वान ने वर्तमान भारतीय आन्दोलन तथा इसके प्रवर्तक महात्मा गाँधी के सम्बन्ध में, 'जापान टाइम्स' में एक लेख प्रकाशित कराया है। उसका आशय पाठकों के मनोरञ्जनार्थ यहाँ दिया जाता है :—

भारतवासियों के सब से प्यारे नेता, जिन्हें उन्होंने 'महात्मा' की उपाधि से विभूषित किया है, इस समय जेल में बन्द हैं। वे अनिश्चित समय के लिए जेल में रक्खे गए हैं और उनका छूटना ब्रिटिश शासकों की इच्छा के अधीन है। अदालत में अपने मामले की जाँच के लिए दबाव डालने का भी उन्हें कोई अधिकार नहीं है!

इस महापुरुष का अपराध क्या है? क्या उनके आत्म-चरित से इसका कोई आभास मिल सकता है? वे कहते हैं :—

"मेरे अनुभवों ने मेरे हृदय में यह विश्वास दृढ़ कर दिया है कि 'सत्य' ही ईश्वर है। और यदि मेरी इस पुस्तक के प्रत्येक अध्याय और प्रत्येक पन्ने से यह स्पष्ट न हो कि 'सत्य' की प्राप्ति के लिए अहिंसा ही एकमात्र उपाय है, तो मेरा इस पुस्तक का लिखना व्यर्थ है।"

यह निश्चित है कि इस सिद्धान्त से किसी को किसी प्रकार की हानि नहीं पहुँच सकती, क्योंकि यहाँ प्रत्येक कार्य का आधार अहिंसा है। इस सिद्धान्त का उपासक एक गाल पर चपत खाने पर दूसरा गाल भी फेर देना उचित समझता है। यह वह सिद्धान्त है, जो दूसरे व्यक्ति के लिए, चाहे वह परिचित हो या अपरिचित, आत्म-त्याग करने और उसके लिए अपनी जान तक दे देने का आदेश करता है।

एक अन्य स्थान पर यही महापुरुष कहता है, कि "उस 'सत्य' का विश्वव्यापी अस्तित्व जानने के लिए, मनुष्य में संसार के छोटे से छोटे जीव पर भी उसी प्रकार प्रेम करने की शक्ति होनी चाहिए, जिस प्रकार वह स्वयं अपने वास्ते करता है। जो मनुष्य उस पथ की ओर अग्रसर होता है, वह अपने जीवन को सङ्कुचित नहीं रख सकता, उसे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में प्रवेश करना पड़ता है। सत्य की यही अनन्य उपासना मुझे राजनैतिक क्षेत्र में भी खींच लाई है, और बिना किसी सङ्कोच के मैं यह कह सकता हूँ, कि जो लोग राजनीति को धर्म से विभिन्न बतलाते हैं, वे वास्तव में धर्म के सच्चे स्वरूप को नहीं जानते।"

महात्मा की परीक्षा

अब यह बिलकुल स्पष्ट हो गया कि यह महापुरुष जेल में क्यों आए। अपने धार्मिक विचारों को केवल आध्यात्मिक विषयों तक मर्यादित न कर, उन्होंने उनका अपने देशवासियों के सामाजिक और आर्थिक उद्धार में भी व्यावहारिक उपयोग किया, और इस प्रकार राजनैतिक संग्राम में भाग लेने से वे अपने को न बचा सके। अनेक बातों में वे सरकार के विरोधी नहीं हैं। उदाहरणार्थ, उन अभागे अछूतों के सामाजिक उत्थान में, जिनकी उच्च कहलाने वाले हिन्दुओं पर छाया मात्र पड़ जाने से उन्हें गङ्गा-स्नान करना पड़ता है, सरकार के साथ उनकी पूर्ण सहानुभूति है। किन्तु अन्य बातों में वे सरकार के कट्टर विरोधी भी हैं। इस विरोध के लिए उन्हें अनेक बार गालियाँ, धमकियाँ और सज़ाएँ भोगनी पड़ी हैं। जिस समय उन्होंने दक्षिण अफ़्रिका में भारतीय मज़दूरों के लिए मनुष्यत्व के साधारण अधिकारों के लिए आन्दोलन खड़ा किया था; जिस समय चम्पारन में उन्होंने उस विधान के विरुद्ध युद्ध किया था, जिसमें किसान अपनी ज़मीन की खेती का $\frac{3}{20}$-वाँ भाग खेतों के मालिकों को देने के लिए बाध्य किए गए थे; जिस समय उन्होंने १९१९ में पञ्जाब में होने वाले अत्याचारों से पीड़ित जनता को शान्त करने का प्रयत्न किया था; जब खैरा में लगान की मुआफ़ी के लिए उन्होंने आन्दोलन का नेतृत्व ग्रहण किया था, उन अवसरों पर उन्हें कम मुसीबतें नहीं उठानी पड़ी थीं। और फिर जब उन्होंने लङ्काशायर की छाती पर घूँसा मार कर भारत में खद्दर का प्रचार आरम्भ किया, या जिस समय असहयोग आन्दोलन के अन्त में, इस 'शैतान' गवर्नमेण्ट की अवज्ञा के आन्दोलन का श्रीगणेश करना चाहा (किन्तु अपने अनुयायियों के हिंसात्मक रुख़ के कारण वैसा नहीं कर सके), और सन् १९३० में, जब उन्होंने नमक-क़ानून को भङ्ग किया और भद्र-अवज्ञा आन्दोलन फिर से प्रारम्भ किया, उस समय भी उन्हें धमकियों और गिरफ़्तारियों का कम सामना नहीं करना पड़ा।

किसी देश पर विदेशी शासन जितना असह्य प्रतीत होता है, उतना देशी शासन नहीं। और उस समय तो यह विदेशी शासन बिलकुल ही असह्य प्रतीत होने लगता है, जब एक साम्राज्यवादी और स्वेच्छाचारी गवर्नमेण्ट थोड़ी सी अशान्ति में ही पूर्ण नृशंसतापूर्वक उसे कुचलने पर तुल जाती है। इसी नीति के कारण भारत में रहने वाले कुछ सङ्कुचित विचारों के यूरोपियन गाँधी के विरुद्ध अपना राग अलापा करते हैं और इसी नीति के कारण साम्राज्य के मोरचा-रक्षक उनके सिद्धान्तों पर सदैव कुठाराघात करते रहते हैं!

आज इस घोर संग्राम के समय हम गाँधी के महत्व को पूर्णरूप से नहीं समझ सकते। हाँ, ५० वर्ष बाद उनका जीवनी-लेखक, उनके पूर्ण महत्व को संसार के सम्मुख अवश्य रख सकेगा। इस समय हमारा ध्यान विशेषतया उनके कार्यों की ओर खिंचता है। उनका जीवन भी बड़ा रहस्यपूर्ण है। उनके जीवनी-लेखक को उनके पूर्व और पश्चात जीवन में एक गूढ़ सम्बन्ध मिलेगा। उनके पूर्व के दाम्पत्य जीवन, उनकी छोटी-छोटी भूलों, उनके हृदय के छोटे-छोटे कुसंस्कारों, और फिर पश्चात जीवन के ब्रह्मचर्यव्रत, आत्म-दमन, विषय-वासनाओं के त्याग आदि में मानस-शास्त्र सम्बन्धी अनेक प्रश्न मिलेंगे। उस लेखक को गाँधी के जीवन के युवावस्था के अनुभवों में, जब गोरों के दर्पपूर्ण दुर्व्यवहारों से उनकी आत्मा पर गहरी ठेस लगी थी और उनके वर्तमान जीवन में, जहाँ ब्रिटिश अफ़सरों से समझौता होना टेढ़ी खीर मालूम होती है, एक विचित्र सम्बन्ध मिलेगा। उनके जीवन की कुछ विरोधात्मक घटनाएँ, जैसे गत महायुद्ध के समय ब्रिटिश सेना में सिपाहियों का भरती कराना, और फिर बाद में अहिंसा पर इतना अधिक ज़ोर देना, सदैव पहेलियाँ रहेंगी।

हम पश्चिम के रहने वाले सब से पहले जो बात जानना चाहते हैं, वह है गाँधी का सन्देश, जिसने भारतीयों के हृदयों पर जादू फेर दिया है। दूसरी जानने योग्य बात ब्रिटिश सरकार के साथ उनके युद्ध का औचित्य और अनौचित्य है। तीसरी बात यह है, कि ब्रिटिश सरकार के भारतीय शासनाधिकार पर उनके प्रयत्नों का क्या प्रभाव पड़ेगा और उससे साम्राज्य में कितनी उथल-पुथल मचेगी—इन प्रश्नों पर इतिहास और राजनीति के निष्पक्ष विद्वान के विचार करने की आवश्यकता है।

गाँधी के सिद्धान्त, भारत की प्राचीन सभ्यता के सिद्धान्तों से मिलते-जुलते हैं। यदि यह बात न होती, तो आज इतने आदमी इस प्रकार बिना सोचे-विचारे, उनकी बातों पर चलने के लिए तैयार न होते।

गाँधी की सम्मति में भारत से समझौता करने के लिए अङ्गरेज़ों का भारत पर से अपना शासन हटा लेना अनिवार्य है। एक निष्पक्ष और विचारवान व्यक्ति की सम्मति के अनुसार भारत की वर्तमान अशान्त परिस्थिति के विरोध में इससे अधिक सङ्गत और युक्तिपूर्ण बात नहीं कही जा सकती, कि भारतीयों का सर्वस्व गाँधी और उसके साथ अन्य प्रतिभाशाली, योग्य और सच्चे देशभक्त भारतीय हिंसात्मक अपराधों के कारण नहीं, बल्कि केवल राजनैतिक क़ैदियों की हैसियत से जेलों में बन्द हैं। भारत स्वतन्त्र होने के लिए व्यग्र है। वहाँ का प्रत्येक शिक्षित मनुष्य सचमुच में एक क़ैदी बन गया है। यद्यपि सारे भारत में पूर्णतया अहिंसा-व्रत का पालन नहीं किया जा रहा है, तो भी शासक जाति, जिसमें केवल तलवार ही का सामना करने की शक्ति है—इस समय बिलकुल निराश हो गई है। उसे इस अहिंसात्मक क्रान्ति को कुचलने के लिए कोई यन्त्र नज़र नहीं आता!

(शेष मैटर ३१वें पृष्ठ के पहले कॉलम के नीचे देखिए)

राष्ट्रीयता और साम्राज्यवाद की मुठभेड़

(अखिल साम्राज्य-परिषद में ब्रिटिश राजनीतिज्ञों की दाल न गली)

'न ख़ुदा ही मिला न विसाले सनम'

[डॉक्टर "पोलखोलानन्द भट्टाचार्या" एम० ए०, पी० एच-डी० (बर्लिन)]

भारतीय गोलमेज़ परिषद होने के पहिले लन्दन में अखिल साम्राज्य परिषद की बैठक हुई थी, जिसमें यह घोषणा की गई थी कि इसका उद्देश्य साम्राज्य की आर्थिक दशा का उत्थान करना तथा साम्राज्य के भिन्न-भिन्न भागों को सुदृढ़ बनाना है। परन्तु वास्तव में बात और ही थी। इङ्गलैण्ड की आर्थिक अवस्था इस समय बहुत ही ख़राब है। एक तो ऐसे ही संसार-व्यापी औद्योगिक शिथिलता के कारण उसका व्यापार बहुत घट गया है, फिर भारतीय बहिष्कार आन्दोलन ने तो उसके सारे व्यापार को मटियामेट ही कर दिया है। बेकारी की संख्या २२ लाख से ऊपर पहुँच गई है। ऐसे समय में ब्रिटिश राजनीतिज्ञों ने सोचा कि एक बार अपने उपनिवेशों को बुला कर, उन्हें फुसला कर, उनसे इस विषय में कुछ सहायता क्यों न ली जावे। वे हमारे उपनिवेश हैं, अभी कुछ दिन पूर्व ही वे हमारे माल के अच्छे ग्राहक थे। उन दिनों हम उनकी आर्थिक नीति को चलाते थे, पर जब से वे स्वतन्त्र हुए हैं, वे स्वदेशी का प्रचार कर रहे हैं और अपना माल उन देशों से ख़रीदते हैं, जहाँ वह सस्ता और अच्छा मिलता है। उनसे इस आर्थिक सङ्कट के समय में किसी तरह से फिर हमारे माल को ख़रीदने का वचन क्यों न लिया जाय। अखिल साम्राज्य-सभा करने में ब्रिटिश राजनीतिज्ञों का यह उद्देश्य था, परन्तु वे अपनी चाल में सफल न हुए।

साम्राज्य-सभा की बैठक आरम्भ हुई। बड़े-बड़े भाषण हुए। ब्रिटिश राजनीतिज्ञों ने ब्रिटिश साम्राज्य-वाद की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि हमें चाहिए कि हम एक होकर इस साम्राज्य की उन्नति का प्रयत्न करें। इसी उद्देश्य से हम यहाँ एकत्रित हुए हैं। इस समय ब्रिटिश राजनीतिज्ञों ने एक और चाल ढूँढ़ निकाली। उन्होंने सोचा कि इन उपनिवेशों से लाभप्रद सन्धि करने का केवल एक उपाय है। और वह यह कि हम उन्हें कुछ और राजनैतिक अधिकार दे दें और उनके बदले में उनसे अपने माल की खपत करने का वचन ले लें। इसी आशा से उन्होंने उपनिवेशों को और कई छोटे-छोटे अधिकार दे दिए। अभी तक पार्लामेण्ट उपनिवेशों के उन क़ानूनों को, जो कि साम्राज्य की भलाई के दृष्टि से ठीक न थे, रद्द कर सकती थी। इसके अतिरिक्त और कई छोटे-छोटे विषयों में वह उपनिवेशों के शासन में हस्तक्षेप कर सकती थी। साम्राज्य-परिषद में पार्लामेण्ट का यह अधिकार हटा लिया गया और उपनिवेशों को अपने शासन में पूर्ण अधिकार प्राप्त हो गया। इस तरह इङ्गलैण्ड और उसके उपनिवेशों में समता का व्यवहार स्थापित हो गया। इस व्यवहार की घोषणा करने के उद्देश्य से दक्षिण अफ़्रिका के प्रधान-मन्त्री जनरल हर्टज़ोग तो यह चाहते थे कि साम्राज्य के भिन्न-भिन्न भागों को "उपनिवेशों" के स्थान में "राज्य" का नाम दिया जावे। जिससे यह साफ़-साफ़ प्रकट हो जाय कि वे किसी प्रकार इङ्गलैण्ड के अधीन नहीं हैं, पर उनकी यह इच्छा पूर्ण न हुई। तब भी उपनिवेशों को जो कुछ अधिकार मिले, वे कुछ कम न थे।

यहाँ तक तो कोई कठिनाई नहीं पड़ी। इङ्गलैण्ड ने अपना नियन्त्रण छोड़ना शीघ्र ही स्वीकार कर लिया। उपनिवेशों ने भी सहर्ष इन अधिकारों को ग्रहण किया। अब व्यापार सम्बन्धी प्रश्न उठे। इङ्गलैण्ड यह चाहता था कि उसके उपनिवेश व्यापार में और देशों की अपेक्षा उसे विशेष सुविधाएँ दें और उसके माल के ग्राहक बनें। परन्तु ये दोनों बातें उपनिवेशों की उन्नति की दृष्टि से ठीक न थीं। इङ्गलैण्ड चाहता था कि साम्राज्यवाद के परदे की आड़ में मैं धनी बन सकूँ। उसके नेता चाहते थे कि साम्राज्यवाद की प्रशंसा करके उसके जाल में उपनिवेशों के प्रतिनिधियों को फँसा कर अपने देश के व्यापार तथा उद्योग की उन्नति की जावे। परन्तु उपनिवेश इस चक्कर में क्यों आने लगे। वे ब्रिटिश राजनीतिज्ञों की कूटनीति को ख़ूब समझते थे। वे जानते थे कि साम्राज्य की आड़ में इङ्गलैण्ड स्वतः धनी होना चाहता है। उन्हें यह मालूम था कि इङ्गलैण्ड की दोनों माँगें उनके राष्ट्र-प्रेम के विरुद्ध हैं। यदि वे अङ्गरेज़ी माल के व्यापार को प्रोत्साहित करते हैं, तो उनके देश के कारख़ाने, जो अभी बाल्यावस्था में ही हैं, नाश हो जायँगे। और इस तरह उनके देश के उद्योग-धन्धों का विनाश हो जायगा। दूसरी तरफ़ यदि वे सस्ते विदेशी माल के बजाय अङ्गरेज़ी माल को ख़रीदने का वचन देते हैं, तो उसमें भी उनके देश का नुक़सान होता है। इस प्रकार साम्राज्यवाद और राष्ट्रीयता की ख़ूब मुठभेड़ हुई। उपनिवेशों के प्रतिनिधियों ने अपने-अपने देशों का साथ दिया। उन्होंने कहा कि साम्राज्य की उन्नति से हमें सहानुभूति अवश्य है। इङ्गलैण्ड हमारी पूर्व मातृ-भूमि होने के कारण हमें प्रिय अवश्य है, परन्तु हमारा देश हमें उससे कहीं अधिक प्रिय है। उसकी उन्नति करना हमारा सर्व-प्रथम धर्म है। इसलिए हम इङ्गलैण्ड तथा साम्राज्य के अन्य भागों से वही माल ख़रीद सकते हैं, जो कि हमारे उद्योग-धन्धों को नुक़सान न पहुँचावेगा। इसी सिद्धान्त का अनुकरण करते हुए उन्होंने कहा कि हम इङ्गलैण्ड से मैशीन तथा कुछ और माल, जो कि अभी हमारे देश में नहीं बनता है, ख़रीदने को तैयार हैं। यह माल भी केवल हम उस समय तक लेंगे, जब तक हम इसे ख़ुद अपने देश में तैयार नहीं कर सकते। जब हम यह माल अपने देश में तैयार करने लगेंगे तब हम अङ्गरेज़ी माल ख़रीदना बन्द कर देंगे। इन चीज़ों में हम इङ्गलैण्ड को कुछ दिनों तक विशेष सुविधाएँ दे सकते हैं, परन्तु इसके बदले में इङ्गलैण्ड को भी हमारे कच्चे माल के व्यापार में हमें विशेष सुविधाएँ देनी पड़ेंगी और अपने स्वतन्त्र व्यापार का नियम तोड़ना पड़ेगा। यह सुन कर ब्रिटिश राजनीतिज्ञों की सारी आशाओं पर पानी फिर गया। उन्होंने सोचा था कि इनका धूमधाम से स्वागत करके और इन्हें कुछ राजनैतिक अधिकार देकर ख़ुश कर लेंगे और इनसे अङ्गरेज़ी माल ख़रीदने का वचन ले लेंगे, परन्तु इसमें इनकी दाल न गली। उपनिवेश के प्रतिनिधियों ने उनकी सारी कलई खोल दी। ब्रिटिश नेताओं को इससे बहुत खेद हुआ। कन्सरवेटिव दल वाले तो इस विषय में इतने परेशान थे कि वे जो कुछ मिल रहा था, वही लेने को तैयार हो गए। इसके कई कारण थे। उनमें से सब से मुख्य तो यह था कि भारत के विषय में वे दमन-नीति के समर्थक थे। वे चाहते थे कि किसी तरह से हम यह दिखा सकें कि भारत के बहिष्कार आन्दोलन से हमारा कुछ नहीं बिगड़ सकता। वे भारत की जनता को दिखाना चाहते थे, कि उनके नेता उन्हें ग़लत रास्ते पर ले जा रहे हैं। परन्तु इङ्गलैण्ड के मज़दूर तथा उदार दल वालों ने उपनिवेशों की शर्तों को स्वीकार करने से साफ़ इन्कार कर दिया। इस तरह पूर्ण निराशा के अन्धकार में ब्रिटिश साम्राज्य-सभा का अन्त हुआ।

परन्तु इस परिषद के बाद होने वाली गोलमेज़ परिषद में उनकी सारी चालें सफल हुई हैं। भारत के हिन्दू-मुस्लिम प्रतिनिधियों ने आपस में ख़ूब नोचा-खसोटी की। जी-हुज़ूरों को ब्रिटिश सरकार ने जो कुछ दिया, उसे उन्होंने सहर्ष स्वीकार कर लिया। ब्रिटिश राजनीतिज्ञों ने उलट-फेर कर इनसे साइमन साहब की रिपोर्ट का सारांश स्वीकार करा लिया। भारत की आर्थिक व्यवस्था पर अब भी ब्रिटिश सरकार का पूरा अधिकार रहेगा। सेना, विदेशी नीति इत्यादि भी ज्यों की त्यों है और यदि वाइसराय और गवर्नरों के अधिकार कुछ बढ़ा दिए जावें तो इसमें कुछ आश्चर्य न होगा। अन्य उपनिवेशों के प्रतिनिधियों ने अपने देश का साथ दिया और साम्राज्यवाद के जाल में फँसने से इन्कार किया। परन्तु भारत के स्वयंभू प्रतिनिधियों ने जान-बूझ कर ब्रिटिश नेताओं की सारी शर्तें स्वीकार कर लीं। पर इससे ब्रिटेन की आशा सफल नहीं हो सकती। ब्रिटिश नेताओं को हरदम यह स्मरण रखना चाहिए कि भारत में देशभक्तों की कमी नहीं है और वे अपने देश को साम्राज्यवाद के पञ्जों से छुड़ाने के लिए अपना सर्वस्व अर्पण कर देंगे। भारत की जनता भी अब इनकी चालों को ख़ूब समझ गई है, वह भी अपने देश को पराधीनता के बन्धन से मुक्त करने के लिए, अपना सर्वस्व अर्पण करने के लिए तैयार है। गोलमेज़ परिषद की बैठक से उन्हें ख़ुशी अवश्य हुई है, परन्तु जब वास्तविक सन्धि-परिषद की बैठक होगी, तब वहाँ भी साम्राज्य-परिषद की तरह उन्हें निराश होना पड़ेगा। वहाँ भी उनके साम्राज्यवादी जाल को काट कर राष्ट्रीयता के सूर्य का उदय होगा।

* * *

(३०वें पृष्ठ का शेषांश)

स्वतन्त्रता, जिसकी प्राप्ति भारत के लिए हिंसात्मक क्रान्ति के द्वारा असम्भव थी, इस नए अस्त्र के द्वारा प्रबल वेग से दौड़ी आ रही है। निरस्त्रों पर अस्त्रों का वार करना आसान नहीं है। और जेलों का भी तो हद है! उनमें अब और अधिक ठूस-ठाँस करना उनकी परिमित शक्ति के बिलकुल बाहर है। इस समय भारत के साथ मित्रता स्थापित करके ही, उसे साम्राज्य के अन्तर्गत रक्खा जा सकता है। साइमन कमीशन के प्रस्तावों द्वारा भारत की माँगें पूरी नहीं हो सकतीं। इस समय भारतवासियों की मानसिक प्रगति की ओर ध्यान देना अतीव आवश्यक है।

यह हिन्दू-महात्मा निश्चय ही इस समय संसार का सब से अधिक प्रभावशाली शान्ति-स्थापक है। यही नहीं, संसार में आज तक जितने महापुरुष हुए हैं और होंगे, उनमें गाँधी का नाम चिरस्मरणीय रहेगा। उनके अहिंसावाद पर अमेरिका को विचार करना चाहिए !!

* * *

वीरबाला

दुर्गा और रणचण्डी की साक्षात् प्रतिमा, पूजनीया महारानी लक्ष्मीबाई को कौन भारतीय नहीं जानता? सन् १८५७ के स्वातन्त्र-युद्ध में इस वीराङ्गना ने किस महान साहस तथा वीरता के साथ विदेशियों का सामना किया; किस प्रकार अनेकों बार उनके दाँत खट्टे किए और अन्त में अपनी प्यारी मातृभूमि के लिए लड़ते हुए युद्ध-क्षेत्र में प्राण न्योछावर किए; इसका आद्यन्त वर्णन आपको इस पुस्तक में अत्यन्त मनोहर तथा रोमाञ्चकारी भाषा में मिलेगा।

साथ ही—अङ्गरेज़ों की कूट-नीति, विश्वासघात, स्वार्थान्धता तथा राक्षसी अत्याचार देख कर आपके रोंगटे खड़े हो जायँगे। अङ्गरेज़ी शासन ने भारतवासियों को कितना पतित, मूर्ख, कायर एवं दरिद्र बना दिया है, इसका भी पूरा वर्णन आपको मिलेगा। पुस्तक के एक-एक शब्द में साहस, वीरता, स्वार्थ-त्याग, देश-सेवा और स्वतन्त्रता का भाव कूट-कूट कर भरा हुआ है। कायर मनुष्य भी एक बार जोश से उबल पड़ेगा। सजिल्द एवं सचित्र पुस्तक का मूल्य ४) ; स्थायी ग्राहकों से ३)

निर्मला

इस मौलिक उपन्यास में लब्धप्रतिष्ठ लेखक ने समाज में बहुलता से होने वाले वृद्ध-विवाह के भयङ्कर परिणामों का एक वीभत्स एवं रोमाञ्चकारी दृश्य समुपस्थित किया है। जीर्ण-काय वृद्ध अपनी उन्मत्त काम-पिपासा के वशीभूत होकर किस प्रकार प्रचुर धन व्यय करते हैं; किस प्रकार वे अपनी वामाङ्गना षोडशी नवयुवती का जीवन नाश करते हैं; किस प्रकार गृहस्थी के परम पुनीत प्राङ्गण में रौरव-काण्ड प्रारम्भ हो जाता है, और किस प्रकार ये वृद्ध अपने साथ ही साथ दूसरों को लेकर डूब मरते हैं; किस प्रकार उद्भ्रान्ति की प्रमत्त-सुखद कल्पना में उनका अवशेष ध्वंस हो जाता है—यह सब इस उपन्यास में बड़े मार्मिक ढङ्ग से अङ्कित किया गया है।

यह वही क्रान्तिकारी उपन्यास है, जिसने एक बार ही समाज में खलबली पैदा कर दी है। भाषा अत्यन्त सरल एवं मुहावरेदार है। सुन्दर सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल २॥); स्थायी ग्राहकों से १॥।=) मात्र !

लम्बी दाढ़ी

"दाढ़ी वालों को भी प्यारी है बच्चों को भी,
बड़ी मासूम, बड़ी नेक है लम्बी दाढ़ी।
अच्छी बातें भी बताती है, हँसाती भी है,
लाख दो लाख में, बस एक है लम्बी दाढ़ी॥"

ऊपर की चार पंक्तियों में ही पुस्तक का संक्षिप्त विवरण "गागर में सागर" की भाँति समा गया है। फिर पुस्तक कुछ नई नहीं है, अब तक इसके तीन संस्करण हो चुके हैं और ५,००० प्रतियाँ हाथोंहाथ बिक चुकी हैं। पुस्तक में तिरङ्गे प्रोटेक्टिङ्ग कवर के अलावा पूरे एक दर्जन ऐसे सुन्दर चित्र दिए गए हैं कि एक बार देखते ही हँसते-हँसते पढ़ने वालों के बत्तीसों दाँत मुँह के बाहर निकलने का प्रयत्न करते हैं। मूल्य केवल २॥); स्थायी ग्राहकों से १॥।=) मात्र।

चुहल

पुस्तक क्या है, मनोरञ्जन के लिए अपूर्व सामग्री है। केवल एक चुटकुला पढ़ लीजिए, हँसते-हँसते पेट में बल पड़ जायँगे। काम की थकावट से जब कभी जी ऊब जाय, उस समय केवल पाँच मिनट के लिए इस पुस्तक को उठा लीजिए, सारी उदासीनता काफ़ूर हो जायगी। इसमें इसी प्रकार के उत्तमोत्तम, हास्य-रसपूर्ण चुटकुलों का संग्रह किया गया है। कोई चुटकुला ऐसा नहीं है जिसे पढ़ कर आपके दाँत बाहर न निकल आवें और आप खिलखिला कर हँस न पड़ें। बच्चे-बूढ़े, स्त्री-पुरुष—सभी के काम की चीज़ है। छपाई-सफ़ाई दर्शनीय। सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल लागत मात्र १); स्थायी ग्राहकों से ॥।); केवल थोड़ी सी प्रतियाँ और शेष हैं, शीघ्रता कीजिए, नहीं तो दूसरे संस्करण की राह देखनी होगी।

मनमोदक

यह पुस्तक बालक-बालिकाओं के लिए सुन्दर खिलौना है। जैसा पुस्तक का नाम है, वैसा ही इसमें गुण भी है। इसमें लगभग ४५ मनोरञ्जक कहानियाँ और एक से एक बढ़ कर ४० हास्यप्रद चुटकुले हैं। एक बार हाथ में आने पर बच्चे इसे कभी नहीं भूल सकते। मनोरञ्जन के साथ ही ज्ञान-वृद्धि की भी भरपूर सामग्री है। एक बार अवश्य पढ़िए। सजिल्द पुस्तक का मूल्य ॥) स्थायी ग्राहकों से ॥-); नवीन संस्करण अभी-अभी प्रकाशित हुआ है।

व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

श्रीजगद्गुरु का फ़तवा

[हिज़ होलीनेस श्री० वृकोदरानन्द विरूपाक्ष]

आख़िरश बेचारे ठाकुर जी महाराज को भी लोगों ने 'गाँधी की आँधी' में घसीट कर ही छोड़ा ! सुनते हैं, उस दिन सनातनधर्मावलम्बियों की एक 'खचाखच' भरी हुई सभा ने त्रिवेणी-तट पर प्रस्ताव पास कर डाला है कि आइन्दा से मन्दिरों में केवल 'खादी' का ही व्यवहार किया जाय। अब बताइए, हमारे कमनीय-कलेवर ठाकुर जी कैसे जिएँगे ? हाय-हाय ! बेचारे की सारी शौक़ीनी पर पानी फिर जायगा !

❀

यही नहीं, देव-दर्शन के लिए मन्दिरों में जाने वाले 'भगतों' और 'भगतिनों' के लिए भी यही क़ानून लागू होगा। मैञ्चेस्टर के रेशमी 'डपरना' वाले पुजारी जी महाराज से भी अनुरोध किया गया है कि शुद्ध स्वदेशी वस्त्रों का ही प्रयोग करें ! भला बताइए, इसे 'मेंढकी को ज़ुक़ाम' न कहें तो क्या कहें ? पीताम्बर और नीलाम्बर पहनने वाली चन्दन-चर्चित देह भला खुरखुरी खादी कैसे सहन कर सकेगी ?

❀

ख़ैरियत यही समझिए कि महन्तों, पण्डों, पुरोहितों और महामहोपाध्यायों के लिए इस तरह का कोई प्रस्ताव उस 'खचाखच' सभा ने स्वीकृत नहीं किया है. नहीं तो सारा सनातन-धर्म ही आज ख़तरे में पड़ जाता। झुर्रियाँ पड़ी हुई बुढ़ौती की देह भला महामोटी खादी कैसे बर्दाश्त कर सकती ? गड़ जाती जनाब, सारे शरीर में बेंतबाज़ी की सज़ा पाए अपराधी की तरह साटें उखड़ जातीं और मनों हल्दी-तेल मलने पर भी कोई फल न होता

❀

फलतः जो बीतेगी वह पत्थर के ठाकुर जी पर ही बीतेगी ; मोटी तोंदों के लिए कोई चिन्ता की बात नहीं। इसलिए श्रीजगद्गुरु की ओर से सनातनियों की 'खचाखच सभा' को भूरि-भूरि धन्यवाद है। उसे चाहिए कि ऐसे मामलों में बेचारे महन्तों, पण्डों और पुरोहितों को घसीटने की ग़लती कदापि न किया करे। क्योंकि येही तो हमारे सनातन-धर्म की शोभा हैं और इनकी शोभा की वृद्धि होती है, रेशमी वस्त्रों और सुर्मा-सलाई से ! खादी और स्वदेशी से इनसे क्या वास्ता ? भगवत-भक्ति, भगत-भगतिन-भक्ति और 'माले मुफ़्त दिले बेरहम' से बेचारों को फ़ुर्सत ही कहाँ है, जो खादी और स्वदेशी पहन कर देश-भक्ति के पचड़े में फँसें ?

❀

मगर एक बात बहुत बुरी सुनने में आई है। अख़बारों में ख़बर छपी है, कि पद्दुकोटा राज्य की व्यवस्थापिका सभा ने देवदासी-प्रथा को क़ानूनन् नाजायज़ क़रार दे दिया है ! इसे बेचारे ठाकुर जी पर दूसरी आफ़त समझिए। दिन भर के थके-माँदे, भक्तों के कामों से फ़ुर्सत पाने पर, घण्टे दो घण्टे देवदासियों का नृत्य-गीत सुन कर ज़रा जी बहला लिया करते थे, उस पर भी इस दर्दमारी पद्दुकोटा की व्यवस्थापिका ने पानी फेर दिया !

❀

बेचारे ठाकुर जी न थिएटर देखें और न सिनेमा जायँ, न मदारी से मतलब, न आतशबाज़ी देखने का शौक़ ! इत्ते कि आजकल के 'स्कूली छोकरों' की तरह फ़ुटबाल या क्रिकेट खेलने के लिए कभी 'पार्क' की ओर भी नहीं जाते। अब न तो वे द्वापर के दिन रहे और न रास रचाने वाली 'कोई साँवर कोई गोरी' गोपियाँ ही रह गईं ! उनकी थोड़ी सी, बिलकुल धुँधली, स्मृति इन्हीं देवदासियों के नृत्य में रह गई थी। मगर 'क़िस्मत की बदनसीबी' को क्या कहा जाय कि बेचारे देवता का यह थोड़ा सा सुख भी लोगों की आँखों का शहतीर हो रहा है

❀

एक वे भक्त हैं,—ईश्वर उन्हें बैकुण्ठ बख़्शे !—जो अपने 'कलेजे के टुकड़े-सी' कन्याओं को देवता की सेवा के लिए अर्पण कर अक्षय पुण्य के भागी बनते हैं और एक ये हैं, कमबख़्त क़ानून बनाने वाले नास्तिक—काफ़िर, जिन्हें न दीन की ख़बर न दुनिया की ! ज़रा सी 'एबी-सिडी गिट्ट-पिट्ट' सीख लिया और बन गए तीस मार ख़ाँ ! लगे सुधार के कुधार से धर्म-ध्वंस करने ! इसलिए, बाबा जल्दी से 'वर्णाश्रम-स्वराज' की स्थापना करो, नहीं तो ये पापी सुधारक एक दिन क़ानून बना कर ठाकुर जी को अण्डमन या पोर्ट-ब्लेयर भेज दें तो कोई आश्चर्य नहीं !

❀

आह ! इन कलियुगी कपूतों ने पवित्र सती-प्रथा की रीढ़ मारी, त्रिवेणी में 'आत्म-विसर्जन' को आत्म-हत्या बताने की धृष्टता की, गङ्गासागर की तरल तरङ्गों में सन्तानोत्सर्ग करने वालों को नृशंस और हत्याकारी कहा। धर्म की नाक की रक्षा करने के लिए बाल-विवाह बच गया था, सो उसे भी 'सारदा-बिल' के साँप ने डँस लिया ! अब हाथ धोकर ये अभागे पड़े हैं देवदासी-प्रथा के पीछे, सम्पादक जी, आप इन धर्म-ध्वंसियों की ख़बर क्यों नहीं लेते ? किस दिन-रात के लिए है, आपका 'भविष्य' और आपकी लेखनी ! कोंचिए कमबख़्तों को ! भगवान आपका भला करेगा और भारत-धर्म-महामण्डल से 'धर्मधुरन्धर' की पदवी भी मिल जायगी।

❀

श्रीजगद्गुरु की यह शास्त्रीय सम्मति है कि सनातन-धर्मावलम्बियों को इस मामले में चुप नहीं रहना चाहिए और जिस तरह उन्होंने साल-साल भर के बच्चे-बच्चियों को दूल्हा-दुल्हिन बना कर बाल-विवाह-निषेध विधान की जन्मते ही कमर तोड़ दी है, उसी तरह एक बार समस्त देश के देवमन्दिरों को देवदासियों से भर दें। ताकि एक बार फिर जगमगा उठे देश सनातन-धर्म की ज्योति से और ठाकुर जी भी रास रचा कर कलियुग में द्वापर के मज़े लूट लें। नहीं तो इन सुधारवादियों के मारे बेचारे का जीना दूभर हो रहा है।

❀

ख़ैरियत हुई, जान बची ! अपने राम को इस बात की बड़ी भारी चिन्ता थी, कि वर्तमान कॉङ्ग्रेसी आन्दोलन के कारण हमारी सुशीला सखा नौकरशाही को निरा घाटा ही घाटा हो रहा है। मगर नहीं, ख़ुदा के फ़ज़्ल से एक तरफ़ कुछ नुक़सान होता है, तो दूसरी तरफ़ 'बाप मरा घर बेटा हुआ' की तरह लाभ भी काफ़ी हो रहा है। क्योंकि गत १९३० के अक्टूबर के अन्त तक मध्य-प्रान्त और बरार में सत्याग्रहियों पर जो जुर्माना हुआ है, उसकी तादाद बफ़ज़्लहू अल्लाहताला, एक लाख चवालीस हज़ार है ! अगर कमोबेश जुर्माने से इतनी ही आय अन्यान्य प्रान्तों से भी मान ली जाय तो मजाल नहीं किसी की जो इस रोज़गार को बुरा कह दे ? फलतः सखी की ओर से अल्लाहताला की ख़िदमते फ़ैज़दरजत में क्यों न दुआ की जाय कि यह 'ज़रख़ेज़' आन्दोलन ता-क़यामत चलता रहे ! आमीन ! एवमस्तु !!

❀

परन्तु अपनी कम-अक़्ली के मारे यह न समझ लीजिएगा, कि इस लाभ की सीमा यहीं तक है। जनाब, पैसे भी प्राप्त हो रहे हैं और सत्याग्रहियों की खोपड़ियों से जो रक्त निकलता है, उससे साम्राज्य की नींव भी पुष्ट होती जा रही है। लेहाज़ा, अब इस बात में सन्देह की ज़रा भी गुञ्जाइश नहीं रह जाती कि 'ख़ुदा देता है तो छप्पर फाड़ के देता है।'

❀

सखी नौकरशाही की तरह ही 'तक़दीर के साँड़' कोंपर कॉन्फ़्रेन्स के मुँहफोड़ प्रतिनिधि भी हैं। लन्दन जाकर ऐसी धुआँधार स्पीचें झाड़ीं कि महामहिम मुग्धानल देव पसीज कर पानी-पानी हो गए और अन्त में 'स्वराज' देते ही बना। न हर्रे लगी न फिटकिरी ख़र्च हुई। 'आम का आम और गुठलियों का दाम' की तरह विलायत की सैर हुई और स्वराज भी मिल गया। यही नहीं, भारत की ग़ुलामी के इतिहास के पृष्ठों पर नाम भी अमिट अक्षरों में लिख गया ! भई, वाह ! ख़ुदा अक़्ल दे तो ऐसी दे।

❀

लन्दनी कॉन्फ़्रेन्स में हमारे प्रतिनिधियों ने वक्तृताबाज़ी के सिवा भिक्षा, आत्म-कलह, साम्प्रदायिक सङ्कीर्णता और प्रभु-भक्ति का भी ख़ासा परिचय दिया है। इसलिए श्रीजगद्गुरु की राय है कि भारत लौटने पर, एक महती सभा करके उन्हें 'सर्वगुणालङ्कृत' और 'सर्वोपमायोग्य' की पदवी से अवश्य विभूषित किया जाय और कहीं किसी ऊँचे स्थान पर वाशिङ्गटन की भाँति उनकी एक अटल स्मृति भी स्थापित कर दी जाय, ताकि भावी भारत-सन्तान उसे देखे और समझे कि यही उन महापुरुषों की पाक यादगार है, जिनके वाक्जाल में फँस कर एक दिन सारा इङ्गलैण्ड फड़फड़ा उठा था और अन्त में झख मार कर भारत को आज़ाद कर देना पड़ा था।

❀

ख़ैर, दादा मुग्धानल देव ने अपनी 'ढाईगज़ी' वक्तृता के गाढ़े आवरण में लपेट कर जो देव-दुर्लभ 'अधिकार' हमारे प्रतिनिधियों को प्रदान किया है, उसमें से स्वराज, स्वतन्त्रता या औपनिवेशिक स्वराज के दाने चुन कर निकाल लेने का काम तो 'भविष्य' के सम्पादक महाशय का है। क्योंकि सम्पादक लोग भूसी फटकने में बड़े पटु होते हैं और ऐसे कामों के लिए उनके पास समय भी काफ़ी रहता है। परन्तु अपने राम ने तो भँगघोटने से टटोल कर जो तथ्य उसमें से संग्रह किया है, वह यह है कि वह 'फ़ेडरल' नाम-धेय भावी शासन-तन्त्र द्वैत-शासन का एक नवीन संस्करण मात्र होगा। शासन-प्रणाली के सारे लुत्फ़ ज्यों के त्यों रहेंगे, बक़ौल उस उर्दू शायर के, जिसने आहे-सर्द खींच कर कहा था :—

दुनिया के जो मज़े हैं, हर्गिज़ वह कम न होंगे !
जलसे यही रहेंगे, अफ़सोस ! हम न होंगे !!

उसी तरह धूमधाम से बड़े लाट और छोटे लाटों की सवारियाँ निकलेंगी, उसी तरह भारत के फल-पुष्प-भाराक्रान्त वनों, उपवनों, उजाड़ जङ्गलों और जनाकीर्ण नगरों में 'सिविल सर्विस' की तूती बोलेगी, उसी तरह गौराङ्ग देवों के सबूट श्रीचरणों से कालों की तिल्लियाँ फटेंगी, उसी तरह गोरे प्रभु और काले ग़ुलाम रहेंगे, उसी तरह अमेरिका और यूरोप के होटलों में कालों के लिए स्थानाभाव (!!!) बना रहेगा। महज़ नौकरशाही का उचाासन मियाँ 'फ़ेडरल' को मिल जाएगा और इस बुढ़ौती में अकिञ्चन जादूगुरु के दिलबहलाव का सामान लुट जायगा! बेचारा भङ्ग की तरङ्ग में जब इन गुलगुफ़ दिनों की याद करेगा तो वक़्फ़े-अफ़सोस मल कर चीख़ उठेगा—

माजराए नौजवानी अहदे-पीरी में न पूछ,
शर्म आती है अब उस क़िस्से को दुहराते हुए!

❀

मज़ाक़ भाड़ में गया। अब ज़रा सीधे-सादे शब्दों में मियाँ 'फ़ेडरल' की तस्वीर मुलाहज़ा हो,—वर्तमान समय का चारों ओर फैला हुआ द्वैत शासन-जाल केन्द्रीय सरकार के शरीर की शोभा बढ़ाएगा। एक भारतीय व्यवस्था परिषद बनेगी और उसमें देशी राज्यों के प्रतिनिधियों के साथ ब्रिटिश-भारत के विभिन्न प्रदेशों के प्रतिनिधि रहेंगे। अन्त में इसी 'ग़ुलाम-घण्ट' को मथ कर थोड़ा सा 'नवनीत' निकलेगा, जिसका नाम होगा—'मन्त्रि-मण्डल!'

❀

इस मन्त्रि-मण्डल की नकेल बड़े लाट-साहब के हाथ में रहेगी। रुपया-पैसा, सेना-पुलिस, सिविलियनी नौकरियाँ, अन्तर्राष्ट्रीय विषय समूह 'सुरक्षित विषय' होंगे, और बाक़ी विषय कालों के विभिन्न दलों के मुँहचुथौव्वल के लिए छोड़ दिए जायँगे। परन्तु अगर इस मुँहचुथौअल का परिणाम बड़े लाट को पसन्द न आएगा तो उस पर पानी फेर देने का उन्हें मौरूसी हक़ हासिल होगा, जैसे श्रीमती जगद्गुरुआनी जी को हासिल है कि गुरुजी के भँगघोटने को दिवाल के सहारे खड़ा करके रक्खें या ज़मीन पर लुढ़का कर!

❀

इसके बाद जो 'पुए पर चीनी' की तरह सुस्वाद और श्रुति-मधुर वस्तु दादा मुग्धानल देव ने प्रदान किया है वह है, मॉडरेट-वाञ्छित 'प्रॉविन्शियल ऑटोनोमी' उर्फ़ प्रादेशिक स्वराज। प्रति तीसरे साल महीने-दो महीने के लिए सारे देश में होली-सी चहल-पहल मचेगी। 'वोट-भिक्षा' की झोली लिए बीडराने-क़ौम गलियों में फेरी लगाएँगे। 'अररर कबीर' की तो नहीं, परन्तु 'वोट मुझे दीजिए' के गगनभेदी चीत्कार के मारे भले आदमियों की नींद हराम हो जाएगी। 'एम० एल० सी०' के लिए कहीं कल्लू मेहतर झाड़ू लेकर 'खड़े' होंगे और कहीं बैसाखनन्दन रूदभाई नत्थू धोबी! आश्चर्य नहीं कि धुलाई महँगी हो जाय!

❀

ख़ैर जनाब, इस 'ऑटोनोमी' का सञ्चालन होगा, एक दो किश्ती की सवारी वाले मन्त्रि-मण्डल द्वारा और स्वयंभू शिव-लिङ्ग की तरह सबके ऊपर सिविलियन-दल विराजमान रहेगा। श्रीमान छोटे लाट बहादुर एक हाथ में 'विशेष अधिकार' और दूसरे में 'अनुग्रह' लेकर भारत की ग़ुलामी का मज़ाक़ उड़ाएँगे। इसी नित्य, शाश्वत और सनातन छोटे लाट और बड़े लाट के अप्रतिहत अधिकार और प्रताप को बरक़रार रख कर श्रीमान वज़ीर-आज़म बहादुर ने स्नेह-स्निग्ध स्वर में फ़र्माया है—"भारत को पराधीन रखने की इच्छा अङ्गरेज़ों की नहीं है!" दुरीं चे शक! कौन कहता है, कि आपकी इच्छा भारत को पराधीन रखने की है। बेवक़ूफ़ रहा होगा वह कवि, जिसने कहा है कि—"करतूती कहि देत आप कहिए नहिं साईं!"

❀

परन्तु इन कालों की एहसान-फ़रामोशी तो देखिए! दादा जी ने अपनी सारी उदारता ख़र्च दी, परन्तु यहाँ किसी कमबख़्त के फूटे मुँह से धन्यवाद का एक शब्द भी न निकला! स्वराज्य-प्राप्ति की ख़ुशी में बी छुम्मीजान का मुजरा कराना तो दरकिनार, किसी ने एक दिन दीवाली भी न मनाई! इनसे पूछो कि बच्चू, आख़िर तुम चाहते क्या हो? तुम्हारे सैकड़ों प्रतिनिधि कौन्सिलों में धुँआधार तक़रीरें करेंगे तुममें से दर्जनों मन्त्री बन जाएँगे, और हज़ारों को 'वोट' देने का अधिकार मिल जायगा। बस, और चाहिए क्या? यही तो स्वराज्य है, या उसके कोई दुम होती है?

❀

बस, अब श्री० लॉयड जॉर्ज के उपदेशानुसार, चीखना-चिल्लाना, बावेला मचाना, आन्दोलन करना और श्रीमती बी ब्रितानिया को बुरा-भला कहना छोड़ कर कानों में कड़वा तेल डाल लो और दोनों आँखें मूँद कर सुशील बालक की तरह सो रहो। नहीं तो जो कुछ देने को कहा गया है, उससे भी हाथ धो लेना पड़ेगा, और फिर जन्म भर चिल्लाते रह जाओगे तो भी कुछ प्राप्त नहीं होगा। क्योंकि इस उदारता का नशा उतरते कुछ देर नहीं लगती।

❀

ग़ुलाम भारत के कृती सन्तान और 'एडिनबरा का स्वतन्त्र रईस' (नागरिक?) राइट ऑनरेबुल मिस्टर श्रीनिवास शास्त्री साहब केवल वचनवागीश ही और 'प्रार्थना-पण्डित' नहीं, हिसाब-शास्त्र के भी उद्भट ज्ञाता मालूम होते हैं! आपके गुरु स्वर्गवासी गोपालकृष्ण गोखले महाशय विख्यात गणितज्ञ थे और यह गुण मालूम होता है, शास्त्री जी को उन्हीं से मीरास में प्राप्त हुआ है। ख़ास कर के जब कहीं दावत होती है तो भूरि-भोजन के पश्चात यह 'गणितज्ञता' आप पर ख़ुदाई रहमत की तरह फट पड़ती है और साफ़ मालूम होने लगता है कि लड़कपन में पढ़ा हुआ 'मेण्टल-अर्थमेटिक' आपको अभी तक कण्ठस्थ है!

❀

अभी हाल ही में, एक बार नहीं, लगातार दो बार आपने अपने इस अलौकिक गुण का परिचय दिया है। एक दिन 'गोलमेज़ कॉन्फ्रेन्स' का स्तोत्र पाठ करते-करते आपने फ़रमा डाला कि "भारत और ब्रिटेन का लम्बा झगड़ा 'चन्द' गिरफ़्तारियों और 'चन्द' लाठी की चोटों के बाद ख़ुशी-ख़ुशी ख़तम हो गया!" दूसरी बार एक भोज-सभा में भारत के राजनीतिक क़ैदियों को छोड़ने के लिए गौराङ्ग देवों से प्रार्थना करते हुए बोले—"तीस (!!!) हज़ार भारतवासी जेलों में बन्द हैं!" हमें तो विश्वास है कि इस समय अगर पौराणिक युग के महान गणितज्ञ राजा नल होते, तो अवश्य ही शास्त्री जी का मुँह चूम लेते!

❀

भई, बड़ों की बातें बड़ी होती हैं। पुराणों में लिखा है कि देवताओं के दिन मनुष्यों के वर्षों से भी बड़े होते हैं। फलतः शास्त्री जी महाराज का 'चन्द' अगर तीस हज़ार के बराबर होता हो तो इसमें आश्चर्य ही क्या है? एक तो भूरि भोजन के पश्चात का अलसाया हुआ मिज़ाज, दूसरे राजनीतिक क़ैदियों को जल्द से जल्द मुक्त कराने की धुन और ऊपर से चढ़ा हुआ, ख़ुदा झूठ न बुलवाए, सोडा-वाटर मिला हुआ 'शर्बाना' का पैग! "ग्रह-ग्रसित पुनि बात रस" की दशा! ऐसी हालत में राजनीतिक क़ैदियों का और लाठियों के चोटों से फूटे हुए मूँड़ों का ठीक-ठीक हिसाब कैसे मालूम हो? बेचारे को ख़बर ही क्या कि इस समय देश में क्या हो रहा है?

❀

अस्तु, श्री० शास्त्री और श्री० सप्रू की प्रार्थना से दादा मुग्धानल देव ऐसे पसीजे, जैसे भगवान् श्रीकृष्ण के गोलोक धाम की एक सखी एक बार पसीज कर नदी हो गई थी! आपने फ़ौरन आज्ञा दी कि अगर कॉङ्ग्रेस वाले आन्दोलन बन्द कर दें तो केवल छोड़ ही नहीं दिए जाएँगे, वरन् भविष्य की बैठकों में निमन्त्रण भी पाएँगे। ओहो, इतनी उदारता! अरे यार, अब क्या चाहते हो? 'फ़ेडरल' मिला, क़ैद से छुट्टी मिली, निमन्त्रण मिलेगा और अगर कहोगे तो 'डिनर पार्टी' में भरपेट 'लेह्य-पेय' की भी व्यवस्था हो जायगी? भई, वाह! मालूम होता है, भारत की तक़दीर के सारे पर्दे एक साथ ही हट गए हैं!

❀

हमारे श्रद्धेय दादा श्रीसनातन-धर्म की बुढ़ौती के लाठी 'श्रीप्रभुजी' अर्थात् अलवरेन्द्र बहादुर आजकल लन्दन महातीर्थ में निवास कर रहे हैं। 'इङ्गलिश मैन' में ख़बर छपी है, कि गत १८ जनवरी को आपके यहाँ एक प्रीतिभोज था और श्रीमती महारानी साहबा भी उसमें शरीक थीं। प्रभुजी और महारानी जी चूँकि कट्टर सनातन-धर्मावलम्बी और पर्दे के परम पक्षपाती हैं, इसलिए भोज-सभा में श्रीमती जी के विराजने के लिए एक सात सीढ़ियों का सिंहासन रक्खा गया था और उसके सामने लटक रहा था, 'मसलिन' (आबेरवाँ?) का नफ़ीस परदा!!! भोजन की रकाबियाँ श्रीमती की ख़ास दासियाँ ही आप तक पहुँचाती थीं। भारतीय आमन्त्रितों को 'प्राच्यवेश' में पधारने का अनुरोध पहले से ही कर दिया गया था। निमन्त्रितों की कुल संख्या ३३० थी। यद्यपि सम्वाददाता ने यह नहीं लिखा है कि 'काँटे छुरी' की भी व्यवस्था थी या नहीं, परन्तु भोजन सनातन-धर्मानुकूल निरामिष रहा होगा, इसमें तो सन्देह की ज़रा भी गुञ्जाइश नहीं हो सकती।

❀

इस तरह जनाब, परदे की भी रक्षा हुई और मेहमानों को 'झाँकी' भी नसीब हो गई! पाश्चात्य एटीकेट भी जीता रहा और प्राच्य सभ्यता की भी जान बच गई! 'साँप भी मरा और लाठी भी न टूटी!' बल्कि सीधे-सादे शब्दों में यों समझिए कि 'नाच भी हुआ और घूँघट भी रह गया!' फलतः इस बुद्धिमत्तापूर्ण 'गङ्गा-जमुनी' व्यवस्था के लिए श्रीप्रभु जी और महारानी साहबा को श्रीसनातन-धर्म की ओर से, हिज़ होलीनेस का आन्तरिक धन्यवाद है। महाराज का परदा-प्रेम और भारतीयता पर अटूट अनुग्रह देख कर अवश्य ही गोरे और गोरियों ने दाँतों अँगुली दबाया होगा—दङ्ग रह गए होंगे, यह अद्भुत दृश्य देख कर!

❀

इस कॉङ्ग्रेसी आन्दोलन की बदौलत न्याय के नग्न-नृत्य तो एक से एक अनोखे दृष्टि-गोचर हुए, परन्तु हाल में श्री० सुभाषचन्द्र बोस महाशय के साथ जो 'न्याय तुचौअल' हुई है, उससे तो क़सम भगवती विजया की, हिज़ होलीनेस की बुढ़ौती सार्थक हो गई है! 'चट मँगनी और पट ब्याह' की तरह रेल के डब्बे में गिरफ़्तारी और प्लेटफ़ॉर्म पर विचार! ख़ैरियत इतनी हुई कि उस समय बोस महाशय पाख़ाने में न थे, नहीं तो विचारक महोदय को वहीं टेबिल-कुर्सी लेकर इजलास आरम्भ कर देना पड़ता और उस वक़्त यह विचार-प्रहसन शायद इससे भी बढ़ कर मनोरञ्जक होता!

❀

लाहौल बिलाक़ूवत

[श्री० जी० पी० श्रीवास्तव, बी० ए०, एल्-एल्० बी०]

(गताङ्क से आगे)

६

लॉजीशियन की ज़बानी मेरे सभी यार-दोस्तों को पहिले ही मालूम हो चुका था, कि मैं बारात से लौटते समय श्रीमती जी को लाने के लिए ससुराल भी जाऊँगा। इसलिए मकान पर मेरे पहुँचने की ख़बर पाते ही यह लोग गिद्ध की तरह मुझ पर टूट पड़े और आते ही लगे पूछने कि क्यों भई, ससुराल गए थे। बहाना करते-करते नाक में दम आ गया। आख़िर सच्चाई को निबाहते हुए मैंने यह शेर पढ़ कर बला टालने की कोशिश की—

नहीं जाते तो यह दिल चैन से रहने नहीं देता।
मगर जब हम वहाँ जाते हैं दर्द एक और लाते हैं।

इसको सुनते ही यार लोग लगे मेरा बदन टटोलने। बलिहारी है उनकी अक़्ल की कि "दर्द एक और लाने" का मतलब यह समझे कि ससुराल में इस दफ़े मैं फिर मारा गया। वाह-वाह! "भैंस के आगे बीन बजाए और वह बैठी पगुराए" इसी को कहते हैं। ख़ैर! मैंने इन लोगों की बेवक़ूफ़ी पर कुछ भी ध्यान नहीं दिया। मगर जब देखा कि दो ही तीन दिनों में यह ख़बर सारे शहर में आँधी की तरह फैल गई, तब तो मेरे कान खड़े हुए। इसलिए इतवार के दिन जल्दी से खाना खाकर मैं नौ ही बजे दिन को अपने दफ़्तर में इतमीनान से इस बदनामी को दूर करने का उपाय सोचने के लिए चला आया। मेरा दफ़्तर मेरे घर से अलग, एक किराए के मकान में था, जहाँ सुबह को बैठ कर मुवक्किलों का मैं इन्तज़ार करता था और शाम को क्लब से लौट कर यार-दोस्त अड्डा जमाते थे। पिता जी भी वकील थे। और दो आदमियों का एक ही घर में वकालत करना ठीक नहीं होता। इसीलिए मुझे अपना दफ़्तर अलग रखना पड़ा।

मगर जिस इतमीनान के लिए इस वक़्त यहाँ आया, वह मुझे नसीब नहीं हुआ। क्योंकि छुट्टी के दिन होने के कारण दिमाग़ चाटने वाले मुवक्किल एक-एक करके टपकने लगे। उस दिन दोपहर ही को मेरे कुछ दोस्त लॉजीशियन के साथ आगए, जिनको देख कर इन बेकार के झायँ-झायँ करने वालों ने अपना बस्ता समेटा और मेरी जान छोड़ी। ख़ैर, इस परेशानी में भी मैंने अपनी बदनामी मिटाने के लिए यह राय तय कर ली थी कि दोस्तों से अपना सच्चा-सच्चा हाल कह डालूँ, तभी इन लोगों का ससुराल में मेरे मारे जाने का भ्रम दूर हो सकता है। आख़िर मेरा ख़्याल सही निकला; क्योंकि मेरी मुसीबतें सुनने के बाद सभों ने एकमत होकर सारा दोष मेरी श्रीमती जी ही को दिया, जिसकी मैंने भी दिल खोल कर ताईद की। अन्त में लॉजीशियन ने बहुत-कुछ सोच-साच कर पूछा—"भला अब तुम्हारी श्रीमती जी की उम्र क्या होगी?"

मैं—"शादी तो हुए मुद्दतें हो गईं, मगर देखने में अभी वह बिलकुल वैसी ही हैं। अपने सर की क़सम। क्या लाजवाब भोलापन है कि याद आते ही......"

लॉजीशियन—"मैं पूछता हूँ उम्र और आप लगे भोलापन बयान करने। तुम्हारा यही तो बेतुकापन अच्छा नहीं मालूम होता। जब देखो तब बेवक़्त की शहनाई बजाने लगते हो।"

मुझे हिसाब लगा कर बताना पड़ा—"यही कोई बाइस-तेइस बरस की होंगी।"

लॉजीशियन—"ओहोहो! बीस बरस के ऊपर हो चुकीं, तब भला वह तुम्हारा मुँह देखना कैसे गवारा कर सकती हैं? उहूँह, ग़ैर-मुमकिन है। इसीलिए तो वह तुम्हारे साथ रवाना होकर भी तुमसे पीछा छोड़ाने की तरकीब कर बैठीं।"

मेरे साथ और लोग भी चक पड़े—"क्यों? क्यों?"

लॉजीशियन ने बड़े इतमीनान से जवाब दिया—"अब तो वह पतिवर्ता हो गई होंगी।"

वीर बहिन

[श्री० चतुर्भुज जी माहेश्वरी "चतुर"]

पाली गईं सुख से सदैव सुकुमारियाँ जो,
आईं कँकरीले-पथ में हैं दुख सहने।
ठाट-बाट राजसी समग्र जिनके थे सदा,
देश-हेतु जेलख़ानों में गईं हैं रहने।
हीरे-मोतियों के गहने थे कभी भार जिन्हें,
देखो वे ही पहने हैं बेड़ियों के गहने!
प्राण से पवित्र निज प्रण पालती हैं आज,
बलिदान हो रही हैं वीर-माएँ-बहने!

* * *

सब लोग हँस पड़े। मगर मेरे बदन में आग लग गई; क्योंकि इससे हमारी श्रीमती जी के पूर्व-चरित्र पर कलङ्क लगता था। मगर जब तक मैं लॉजीशियन को कुछ कहता, तब तक उल्टे वही बिगड़ बैठा—"वाह जनाब! आप लोग हँसते क्या हैं? बीस बरस के बाद स्त्रियों को पतिवर्ता हो ही जाना चाहिए। इसमें झूठ क्या है? शास्त्र की बात है।"

अब तो मुझसे नहीं रहा गया, झुँझला कर कह बैठा—"तो क्या मेरी श्रीमती जी पहले पतिवर्ता नहीं थीं?"

श्यामाचरण बीच ही में बोल उठे—"मगर यह तो इनके लिए और भी अच्छी बात है। क्योंकि यही तो उनके पति हैं भाई।"

लॉजीशियन—"हुआ करें। जहाँ कोई स्त्री पतिवर्ता हुई तहाँ उसे पुरुष-जाति से घृणा हो गई। फिर एक नहीं, इनके ऐसे उनके अगर बावन पति हों तो क्या? आख़िर पति तो पुरुष-जाति ही का होता है। मगर क्या आप लोग पतिवर्ता के मानी कहीं पति को पूजने वाली तो नहीं समझते हैं?"

जदुनाथ—"तब क्या इसके मानी कुछ और हैं?"

लॉजीशियन ने बड़े ज़ोर से हँस कर कहा—"आहा-हाहा! यह कहिए, तभी आप लोग भड़क रहे हैं। अजी इसके यह मानी नहीं हैं। यह तो कुछ स्वार्थी पतियों ने अपनी भोली-भाली स्त्रियों से अपने आपको ज़बरदस्ती पुजवाने के लिए इस शब्द का यह रूप देकर इसके मानी में यह ढोंग रच रक्खा है। सच पूछिए तो असल में यह शब्द है पतिभर्ता, जो बिगड़ते-बिगड़ते इन्हीं लोगों की बदौलत अब पतिवर्ता हो गया है।"

श्यामाचरण—"पतिभर्ता? अच्छा तो इसके क्या मानी हुए?"

लॉजीशियन—"मानी शब्द ही से ज़ाहिर है। पतिभर्ता यानी पति का भर्ता बनाने वाली या कचूमड़ निकालने वाली।"

जदुनाथ—"ओहो! तभी पतियों की अपनी जोरुओं के आगे दुम दबी रहती है। यार ठीक कहते हो। मान गया। इसके ज़रूर यही मानी होंगे।"

श्यामाचरण—"अब तो मिस्टर सैक्सन को बुरा मानने की कोई वजह नहीं मालूम होती।"

मैंने ठण्ढी साँस लेकर शान्त भाव से कहा—"नहीं भाई, अब तो मैं भी यही कहूँगा कि हमारी श्रीमती जी सचमुच पतिवर्ता हो गई हैं। आज से नहीं, बल्कि उसी दिन से, जिस दिन शादी हुई। उफ़! ओ! मुझे तड़पा-तड़पा कर मेरे दिल का जैसा उन्होंने कचूमड़ निकाला है, उसे मैं ही जानता हूँ।"

श्यामाचरण—"और जो कहीं साथ रहने पातीं तो तुम्हारा अचार ही निकल गया होता।"

जदुनाथ—"इसमें क्या शक है। पतिवर्ताओं से ईश्वर तक दबते हैं। मगर भाई लॉजीशियन, तुम यह बड़ी दूर की कौड़ी लाए। क्योंकि यह बारीकी आजकल कोई समझता नहीं।"

लॉजीशियन—"यह 'स्त्री-शास्त्र' की बातें हैं। इन्हें लोग क्या जानें?"

कामशास्त्र, रतिशास्त्र, कोकशास्त्र के नाम तो सुने थे। बल्कि शादी के दो बरस पहिले से दो बरस बाद तक गीता की तरह रोज़ ही उनका पाठ करता रहा, जैसा अब कॉलेज के लगभग सभी नौजवान करते हैं, मगर स्त्री-शास्त्र आज तक देखने को भी नसीब नहीं हुआ था। मिलता तो इसे भी मैं ज़रूर बरज़बान रट डालता। मुमकिन है, श्रीमती जी के लक्षण पहचानने में यही मुझे कोई ठीक ज्ञान बताता, जिससे मेरी मुश्किल आसान होती। इसलिए उसका नाम सुनते ही मैंने बड़ी उत्सुकता से पूछा—"यह मिलता कहाँ है?"

लॉजीशियन—"मिलेगा कहाँ? यह क्या कामसूत्र, रसविज्ञान, या बदमाशी-शास्त्र की तरह पुरुषों का थोड़े ही बनाया हुआ है। इसकी रचना स्वयं महाराज शैतान देव ने की है। और वह भी सामुद्रिक भाषा में, जिसका आज तक टाइप ही नहीं बन सका। जैसे ईश्वर ने भाग्य-शास्त्र को मनुष्यों की हथेलियों पर लिख रक्खा है, उसी तरह शैतान देव ने अपने स्त्री-शास्त्र को स्त्रियों की खोपड़ी पर, बालों की जड़ों के नीचे रच रक्खा है। उस पर मुश्किल यह है कि मर्दों की तरह औरतें कभी मुण्डी नहीं होतीं। इसीसे इस शास्त्र का पता नहीं चलता। क्योंकि जब तक स्त्रियों की खोपड़ी के बाल आप से आप गिर नहीं जाते, तब तक उनकी असलियत नहीं खुलती। वह तो न जाने किस देश की एक मुण्डी स्त्री हमारे नाना जान को मिल गई थी, जिससे उन्हें इस गुप्त शास्त्र की थोड़ी-बहुत झलक मिली थी।"

श्यामाचरण—"ओहो! तब तो यह कोई बेढब शास्त्र मालूम होता है। इसमें ज़रूर बड़े सच्चे ज्ञान की बातें होंगी।"

लॉजीशियन—"क्यों नहीं? मगर अफ़सोस तो यह है कि हमारे नाना जान इसका सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त नहीं

कर सके। बीच ही में वह स्त्री उन्हें मारने दौड़ी और क़सम खा कर बोली कि ख़बरदार, इस ज्ञान को किसी को बताना नहीं। और अगर बताना भी तो उसी को, जो साल भर तक अपनी स्त्री से न बोलने की क़सम खा ले। वरना सुनने वाले के लिए इसका असर एकदम उल्टा होगा।"

श्यामाचरण रँडुआ थे, जदुनाथ का अभी गवना नहीं हुआ था, और मुझे श्रीमती जी से मिलने की कोई उम्मीद ही नहीं थी। इसलिए हम तीनों ने बेधड़क क़सम खाकर कह दिया कि इस शास्त्र का कुछ ज्ञान सुनाओ। मगर लॉजीशियन को शायद मेरी क़सम पर कुछ शक था। और वह आनाकानी करने लगा। इसलिए उसको अच्छी तरह विश्वास दिलाने के लिए मैंने दुबारा कड़ी से कड़ी क़सम खाई कि साल भर क्या, मैं दो साल तक श्रीमती जी से न बोलूँगा। क्योंकि मुझी को इस शास्त्र की सब से ज़्यादा ज़रूरत थी।

बड़ी मुश्किलों से हज़ार नख़रों के बाद क़समों पर क़सम खाता हुआ लॉजीशियन इस अनोखे शास्त्र को सुनाने के लिए राज़ी हुआ। और उसने यों कहना शुरू किया—"अच्छा भाई, नहीं मानते तो कहता हूँ। मगर मुझे नाना जान की कुल बातें तो याद नहीं हैं। एकाध जो भूली-भटकी दिमाग़ में पड़ी हैं, उन्हीं को कहूँगा। ख़ैर, सुनो—जैसे दिन के साथ रात, रोशनी के साथ परछाँई होती है, वैसे ही परम-पिता परमेश्वर के साथ श्री० महाराज शैतानदेव भी लगे रहते हैं।"

जदुनाथ—"हाँ-हाँ, यह तो मानी हुई बात है। बाइबिल में लिखा है।"

लॉजीशियन—"ईश्वर जब पृथ्वी बना कर उस पर सृष्टि की रचना करने लगे, तो अपनी परम योग्यता का नमूना दिखाने के लिए पुरुष-जाति को बनाया। उनका विचार था कि इसकी उत्पत्ति का ढङ्ग पेड़-पालो के नियम पर किया जाय। ताकि जाति बिना अन्य किसी की सहायता के आप से आप उपजा करे। वैसे ही शैतान देव हाथ जोड़ कर बोले—महाराज, यह आप क्या अनर्थ कर रहे हैं। पुरुष-जाति की बुद्धि भ्रष्ट करते रहने का आप कोई उपाय न करेंगे, तो यह अपनी योग्यता से जीवित ही अवस्था में देव-लोक पहुँच कर स्वर्ग पर अधिकार जमा लेगी। इसका ज्ञान इतना बढ़ जाएगा कि अपने आगे आपके ईश्वरत्व को भी कुछ नहीं समझेगी। नर्क में उल्लू बोलेंगे। वहाँ चालान करने के लिए हमें एक भी पापी न मिलेगा। हम बैठे ख़ाली मक्खियाँ मारेंगे। क्योंकि जब तक इसका ज्ञान भ्रष्ट नहीं होगा, तब तक यह जाति पाप की तरफ़ कैसे झुकेगी?

"ईश्वर चकराए और घबड़ा कर बोले—हाँ, यह तो है। मगर अब क्या करें?

"शैतानोवाच—बस आप इसकी दुम में कोई ऐसा उपद्रवी, अनर्थकारी और पाखण्डी जानवर बाँध दीजिए कि जिसे देखते ही इसका ज्ञान भ्रष्ट हो जाया करे। जिसके पीछे यह सारी ज़िन्दगी तबाह रहे। जिसकी ख़ातिर यह कोई भी पाप करने के लिए न हिचके; जो बाप-बेटों में, भाई-भाई में ख़ून करा सके, हर वक़्त इसे सत्यानाशी की तरफ़ ढकेल सके, इसकी बुद्धि को कभी अधिक बढ़ने न दे, और जिसके बिना इसका काम भी चल न सके......।

"इतने ही गुणों की तारीफ़ में ईश्वर के होश उड़ गए, कानों पर हाथ धर कर बोले—ना बाबा, यह हमारे मान का नहीं है। ऐसे भयङ्कर जानवर की कल्पना करना शैतान ही का काम हो सकता है।

"फिर क्या था? इतना इशारा पाते ही शैतान बाबा ने पुरुष-जाति के गले मढ़ने के लिए झट ख़ुद ही स्त्री-जाति का नमूना बना कर ईश्वर को दिखा दिया और उसके सहयोग से मनुष्य जाति की सृष्टि करने का उपाय भी सुझा दिया। इति स्त्री-शास्त्रे भूमिका खण्डे।"

श्यामाचरण—"यार यह तो सही मालूम होता है। देखो संसार में जितने झगड़े-बखेड़े होते हैं, वह ज़्यादेतर स्त्रियों की ही बदौलत।"

जदुनाथ—"हाँ-हाँ, जिस जाति की रचना स्वयं शैतान के बनाए हुए नमूने के अनुसार हो, वह जो न उपद्रव कर दे वही थोड़ा है।"

मेरे दिल में भी बात पैठ गई और मैंने सभों से ज़्यादा चिल्ला कर कहा—"अजी नमूने से क्या होता है, मैं तो यहाँ तक कहने को तैयार हूँ कि इस जाति की

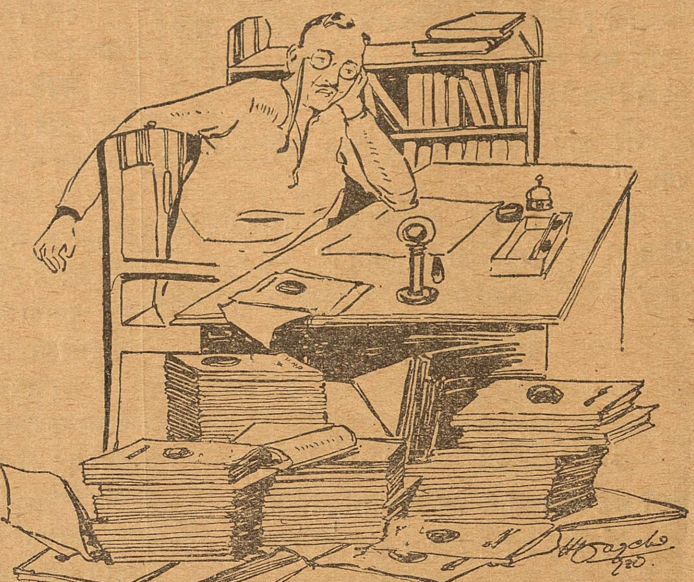

पत्र-सम्पादक—हाय मेरे मौज़ः! क्या लिखूँ, क्या न लिखूँ?

आजकल बदला हुआ मज़मून है!
नुक़्ते-नुक़्ते के लिए क़ानून है!

रचना भी शैतान ही ने की होगी, वरना मेरी श्रीमती जी भला सारी ज़िन्दगी मुझे इस तरह उल्लू बना सकती थीं? हरगिज़ नहीं।"

लॉजीशियन—"हाँ-हाँ, इतना मत चिल्लाओ। नहीं कोई स्त्री सुन लेगी तो अपने साथ हम लोगों को भी पिटवाओगे क्या?"

अब चाहे कोई बुरा माने या भला। मगर सच्ची बात दिल में घुस कर अपनी सचाई उगलवा ही लेती है, और जले हुए दिल से तो हमेशा सच्ची ही बात निकलती है। अच्छा पाठिका महारानी, आप ही न्याय कीजिए। मेरी जीवनी शुरू से आख़ीर तक एक साँस में सिलसिलेवार पढ़ कर बताइए कि शैतान ने हमको बनाया है या हमारी श्रीमती जी को। हाँ, ईमान-धर्म से पक्षपात छोड़ कर बस मेरी झुठाई-सचाई आप ही खुल जायगी। मगर ईश्वर के लिए आप न बुरा मानिएगा। क्योंकि आप तो देवी जाति की हैं। यह मैं पहिले ही कहे देता हूँ, ताकि आपके इन्साफ़ में गड़बड़ी न हो।

लॉजीशियन ने सभों के आग्रह पर फिर कहना शुरू किया—"ईश्वर स्त्री जाति का नमूना देख कर फड़क उठे। मुग्ध होकर बोले—आहाहाहा! कैसी मनमोहनी चीज़ आपने बनाई है। देखने में कितनी सुन्दर, कैसी मुलायम और सीधी है कि वाह! वाह!

"शैतानोवाच—जी हाँ, तभी तो पुरुषों की बुद्धि भ्रष्ट होगी। मगर यह मुलायमियत बस देखने ही भर के लिए है। क्योंकि इसमें जैसी कठोरता और टेढ़ापन है, वह न आपके वज्र में है और न रेखागणित के किसी कोण में।"

मैं—"अरे! उस ज़माने में रेखागणित कहाँ?"

लॉजीशियन—"क्यों? इसकी विद्या मनुष्यों को चाहे बाद को मालूम हुई हो, मगर थी तो ईश्वर के दिमाग़ में, वरना वह चाँद-सूर्य की गोलाई, किरणों की सिधाई, पदार्थों के भिन्न-भिन्न आकार कैसे बनाते?"

श्यामाचरण—"हाँ जी, वह ईश्वर ही ठहरे। सब चीज़ों के जानने वाले। यह ऐसे ही खुरपेंच लगाया करते हैं। आप कहिए।"

लॉजीशियन—"अच्छा सुनिए, परम-पिता ईश्वर कहते भए—"

जदुनाथ—"आहाहा! कहने का ढङ्ग तो देखो।" 'कहते भए।' बिलकुल शास्त्र है। अब भी जो इसे शास्त्र न समझे तो वह महा धाँमड़ है।"

लॉजीशियन—"ईश्वर बोलते भए, हे शैतान देवता इस मनमोहनी जन्तु के अब गुणों का बखान कीजिए! शैतानोवाच—अच्छा महाराज, सुनिए! इसके गुणों का हाल कहने के पहिले इसके जातीय भेदों का बताना उचित होगा। पुरुष जाति तो अपनी अज्ञानता से इसका विभाग पद्मिनी, चित्रनी, सङ्खिनी और हस्तिनी में करेगी। मगर सच पूछिए तो इसकी जाति अपनी जातीयता में समान होगी, अर्थात् स्त्रीपन में स्त्री-स्त्री एक ही होगी। हाँ, भेद केवल ऊपरी बातों में—जैसे रूप, विद्या, बुद्धि, सुकुमारता इत्यादि में हुआ करेगा। मगर यह व्यक्तिगत भेद हैं, जातीय नहीं कहे जा सकते। इसलिए इसका जातीय विभाग इसकी अवस्था के अनुसार होना चाहिए, जो तीन हैं। अर्थात्—(१) गर्विता (२) पतिभर्ता—यह शब्द बाद को पुरुषों की चालाकी से पतिव्रता के नाम से प्रचलित होगा और (३) अनुग्रहाता। स्त्री की जातीयता पन्द्रह बरस से शुरू होगी, और पन्द्रह बरस से बीस बरस तक यह गर्विता रहेगी। यानी इस पर सुन्दरता का नशा ऐसा चढ़ा रहेगा कि यद्यपि पुरुषों से इसका हँसने-बोलने का बड़ा जी चाहेगा, तथापि मारे घमण्ड के किसी से भी सीधे मुँह बात न करेगी। और बीस बरस के बाद चालीस बरस तक के लिए इसका दूसरा भेद चलेगा। इस अवस्था में इसे बच्चे खिलाने और हुकूमत जताने की रुचि हो जाएगी, जिसके आगे इसकी पुरुष जाति की चाहत दब जाएगी। इसलिए यह पतिभर्ता या पतिव्रता कहलाएगी। परन्तु चालीस बरस के उपरान्त यानी तृतीय अवस्था में यह अपनी असलियत पर आएगी। इस समय अलबत्ता यह पुरुष जाति के बोलने का अनुग्रह मान सकती है। इसलिए इसका नाम अनुग्रहीता होगा। इसीलिए बुद्धिमान को चाहिए कि गर्विताओं और पतिभर्ताओं को दूर ही से प्रणाम करे और अपनी कुशलता चाहे तो भूल कर भी इनसे प्रेम करने का साहस न करे। इति स्त्री-शास्त्रे भेद-विधान खण्डे। बोलो भाई श्रीशैतान जी की जै।"

(क्रमशः)

(Copyright)

* * *

दवाइयों में

खर्च मत करो

स्वयं वैद्य बन रोग से मुक्त होने के लिए "अनुभूत योगमाला" पाक्षिक पत्रिका का नमूना मुफ़्त मँगा कर देखिए। पता—मैनेजर अनुभूत योगमाला ऑफ़िस, बरालोकपुर, इटावा (यू० पी०)

भारतीय कॉङ्ग्रेस के साथ मि० चर्चिल की वफ़ादारी !!

"भारत के दस वर्षों के सुधारों का इतिहास उसकी अवनति का इतिहास है"

"भारत के सम्बन्ध-विच्छेद से ब्रिटिश साम्राज्य धूल में मिल जायगा"

"गोलमेज़ का निर्णय पार्लामेण्ट पर बाध्य नहीं है"

"हम उस अमूल्य हीरे को, जिसके सहारे ब्रिटिश साम्राज्य का बल है, शान है, मान है, उखाड़ कर फेंकना नहीं चाहते। भारतवर्ष का अलग होना ब्रिटिश साम्राज्य का अन्त है, उसके सम्बन्ध-विच्छेद से यह विशाल साम्राज्य धूल में मिल कर केवल इतिहास के पृष्ठों में रह जायगा।........हमारी साम्यवादी सरकार ने यदि समझौता करने के लिए भारतवासियों को अधिकार देने का वचन दे दिया, तो भविष्य में भारत की क्रान्तिकारी शक्तियाँ और भी प्रबल हो उठेंगी। और क्रान्तिकारी शक्तियों के प्रबल होने पर हमारे वफ़ादार लोग भी विमुख हो जायँगे।"

"मैं अपने भारतवासी भाइयों को चेतावनी देता हूँ कि वे इस ढोंगबाज़ी से धोखा न खाएँ। पाश्चात्य राजनीति तथा गोलमेज़ परिषद की शेख़ियों के भीतर ही भीतर, भारतवर्ष पर कठोरता से शासन करने की आयोजना की जा रही है।"

कैननस्ट्रीट होटल लन्दन में व्यापारियों की एक सभा में भाषण देते हुए मि० चर्चिल ने कहा—"भारतवर्ष के सम्बन्ध में, पिछले बारह मास में जिस प्रकार से गप हाँकने से काम लिया जा रहा है, उसकी देश के सामने पोल खोलना अपना कर्त्तव्य समझ कर हम लोग आज इस स्थान पर एकत्रित हुए हैं।

"बहुत से लोगों का कहना है, कि भारतवर्ष के राजनैतिक विचार बड़ी शीघ्रता से उन्नति कर रहे हैं, गोलमेज़ कॉन्फ़्रेन्स में नर्म दल के प्रतिनिधि तक औपनिवेशिक स्वराज्य, ब्रिटेन से सम्बन्ध तोड़ने का अधिकार, तथा शासन-प्रणाली पर पूरा क़ब्ज़ा कर लेने के लिए आफ़त मचा रहे हैं। गर्म दल वालों का तो कहना ही क्या? उनका ध्येय तो अब पूर्ण स्वराज्य हो चुका है। वह लोग उस सुखमय भविष्य के स्वप्न देख रहे हैं, जब समस्त भारतवर्ष में पूर्णतया उनका राज्य होगा, जब इङ्गलैण्ड उनके लिए यूरोप के अन्य देशों की नाईं एक दूरस्थित विदेश हो जायगा, जब हम लोग भारतवर्ष में सिर झुका कर रहेंगे, जब भारतवर्ष का सारा क़र्ज़ा देने से इन्कार कर दिया जावेगा, तथा सफ़ेद चमड़ी के चौकीदारों की एक फ़ौज, जिसके अफ़सर शायद जर्मनी से भाड़े पर लाए जाएंगे, हिन्दू राज्य की रक्षा के लिए सदा तत्पर रहेगी।

झूठी आशाएँ

"यह सब झूठी और भयानक आशाएँ हैं, जिनका उचित उत्तर न देकर ब्रिटिश सरकार ने, भारत में और यहाँ पर, केवल प्यार व दिलासे से काम लिया है। "पूर्ण औपनिवेशिक स्वराज्य" "भारतवर्ष संसार की एक महान शक्ति" इत्यादि कई निरर्थक तथा निकम्मे शब्द वायु-मण्डल में नित्य प्रति गूँजते हैं। भारतवर्ष के ब्रिटिश पत्र भी इसी निर्णय की ओर खिंचे चले आ रहे हैं, कि यदि भारतवासी इङ्गलैण्ड से सम्बन्ध तोड़ने का विचार त्याग दें, तो जो कुछ भी वह मिल कर माँगेंगे, पार्लामेण्ट चुपचाप उनके हाथ पर धर देगी। गोलमेज़ परिषद के खुले अधिवेशन में पाँच दिन तक जो बकवाद होता रहा है, उससे ऐसा प्रतीत होता है, कि मानो भारतवर्ष को बहुत से अधिकार दिए जाने वाले हैं, केवल छोटी-छोटी बातों का निर्णय करना शेष रह गया है, ताकि भारतवर्ष की अल्प-संख्यक जातियों की रक्षा का प्रबन्ध हो जाय

"इन्हीं कारणों से यह आवश्यक प्रतीत होता है, कि अन्त में निराशा से बचने के लिए सारी स्थिति का इस समय निरीक्षण कर लिया जाए। हमारा ऐसा विश्वास है, कि इङ्गलैण्ड की भारतवर्ष पर अपना क़ब्ज़ा ढीला करने की कोई इच्छा नहीं। गोलमेज़ परिषद को भारतवर्ष के लिए शासन-पद्धति बनाने का कोई अधिकार नहीं। कॉन्फ़्रेन्स का निर्णय, पार्लामेण्ट किसी प्रकार भी मानने के लिए बाध्य नहीं है। गवर्नमेण्ट ऑफ़ इण्डिया एक्ट बनाने के लिए कॉन्फ़्रेन्स के किसी निश्चय की आवश्यकता नहीं। भारतवर्ष की शासन-पद्धति के सुधार का भार पार्लामेण्ट पर है। वर्तमान में भी, जब कि इङ्गलैण्ड में अल्प संख्यक मज़दूर सरकार का शासन है, ऐसे व्यक्तियों की संख्या पार्लामेण्ट में कम नहीं है, जो कि भारतवर्ष को निकट भविष्य में औपनिवेशिक स्वराज्य देने का कोई विचार नहीं रखते और यह भी निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है, कि जब तक भारतवर्ष के लिए शासन-सुधार-बिल पेश करने का समय आवेगा, पार्लामेण्ट का दूसरा चुनाव हो चुका होगा, जिसके फल-स्वरूप वहाँ पर राष्ट्रीय विचारों के लोग अधिक संख्या में उपस्थित होंगे। वास्तविक स्थिति तथा सत्य की ओर से आँखें मूँद कर, जो झूठी आशाएँ दिखाई जा रही हैं, इसके परिणाम-स्वरूप भविष्य में रक्त की नदियाँ बहने वाली हैं।

भारतवर्ष की स्थिति

यह तो हुआ इङ्गलैण्ड का हाल, अब भारतवर्ष को लीजिए। हमको बताया जाता है कि भारतवर्ष के राजनैतिक विचारों में अन्तर आ गया है, परन्तु वास्तव में भारतवर्ष की अवस्था में कोई भी अन्तर नहीं है। भारतवर्ष के जनसमुद्र में राजनीति के शौक़ीन केवल मुट्ठी भर हैं। जिन पाश्चात्य विचारों को वह अपनाना चाहते हैं, उनका भारतवर्ष के आचार-व्यवहार से कोई सम्बन्ध नहीं। भारतवर्ष में कम से कम ७० भिन्न-भिन्न जातियाँ तथा इससे भी अधिक मत हैं, जो कि एक-दूसरे के विरोधी हैं। सर राण्डल्फ़ चर्चिल का कहना है कि "भारतवर्ष में हमारा राज्य एक मोमी कपड़े की नाईं वहाँ के जन-समुद्र पर बिछा हुआ है, जो भयङ्कर आँधियों से उनकी रक्षा करता है। यदि अङ्गरेज़ भारतवर्ष से चले आए तो वहाँ हिन्दुओं की मनमानी चलेगी अथवा घरेलू झगड़ों के मारे भारतवर्ष में फिर वही गड़बड़ मचेगी, जो वहाँ पर अङ्गरेज़ी राज्य से पहले १००० साल तक रही थी। कौन जानता है, हमारे चले आने के पश्चात भारतवासी चीनियों की नाईं दुःख-जञ्जाल में नहीं डूब जायँगे।"

पराजयवाद

"इस पर भी हमको बताया जाता है, कि भारतवर्ष के राजनैतिक विचारों में अन्तर आ गया है। भारतवर्ष को अपनी मुक्ति का पथ दिखाई दे गया है। भिन्न-भिन्न जातियाँ तथा मत अपने झगड़े समेट कर अङ्गरेज़ों से अपने सम्बन्ध का अन्त करना चाहते हैं। परन्तु इसका कारण क्या है? इसमें बेचारे भारतवासियों का रत्ती भर दोष नहीं है। यह हमारी राजनीति के बोदेपन का चिह्न है। भिन्न-भिन्न प्रकार से भारतवर्ष में इस विचार का प्रचार किया गया है, कि भारत में अङ्गरेज़ी राज्य का अन्त होने वाला है, तथा एक नए राज्य का उदय अब समीप है। एक ओर तो है बढ़ती हुई माँग, और दूसरी ओर हैं मीठे-मीठे दिलासे।

"हमारे पराजयवादी राजनीतिज्ञ कहते हैं, कि देखो अब तो देशी राजाओं ने भी, जो अब तक हमारे साथ थे, पैंतरा बदल दिया है। वह भारत की शासन-प्रणाली में अन्तर चाहते हैं। इसका कारण सहज है। जिस समय भारतवासियों को यह विश्वास दिलाया जाता है, कि शीघ्र ही ब्रिटिश सरकार अपना बोरिया-बिस्तर गोल करने वाली है, तो वह लोग, जो आज तक हमारे वफ़ादार थे, नए प्रभुओं का मुँह देखते हैं, भविष्य में आने वाली सरकार के साथ अपना नाता जोड़ने का प्रयत्न करते हैं। उन लोगों का नए प्रभुओं के साथ कम से कम पुराने प्रभुओं के बराबर घनिष्ट सम्बन्ध स्थापन करने की योजना करना साधारण बात है।

विचारों में क्रान्ति

"भारतवर्ष में राजनैतिक विचारों की क्रान्ति का कारण क्या है? क्या भारतवर्ष की स्थिति में अन्तर आ गया है? नहीं, इसका कारण है हमारे प्रतिनिधियों का बोदापन। मैं अपने भारतवासी भाइयों को चेतावनी देता हूँ, कि वे इस ढोंगबाज़ी से धोखा न खाएँ। पाश्चात्य राजनीति तथा गोलमेज़ परिषद की शेख़ियों से भीतर ही भीतर, भारतवर्ष पर कठोरता से शासन करने की आयोजना की जा रही है। भारतवर्ष के चौबीस हज़ार राजनीतिज्ञ तथा उनके मूर्ख भक्त आज जेल की हवा खा रहे हैं। सभी स्थानों पर उत्पात को दबाया जा रहा है। गाँधी की लहर, जिसने भारत-सरकार को

चुनौती देने का साहस किया है, ईश्वर का धन्यवाद है, कि सीमा-प्रान्त के सिवाय सारे भारतवर्ष में बिना रक्त बहाए शान्त हो गई है।

"यदि इङ्गलैण्ड तथा भारत-सरकार स्थिति को ठीक-ठीक समझ सकी होती, तो आज भारतवर्ष में जितनी गड़बड़ है, उसकी एक चौथाई भी न होती। यदि भारतवासियों को झूठी आशाएँ दिलाने के स्थान पर उनकी आर्थिक दशा पर ध्यान दिया जाता, यदि लाहौर कॉङ्ग्रेस, जिसमें कि हमारे यूनियन जैक को जलाया गया था, क़ानून विरुद्ध ठहरा कर उसके नेताओं को देश से बाहर निकाल दिया होता, यदि गाँधी को उसी समय गिरफ़्तार कर लिया होता, जिस समय उसने नमक-क़ानून तोड़ा था, यदि साहस के साथ शासन किया जाता, तो आज इन ऑर्डिनेन्सों तथा नित नए क़ानून की आवश्यकता न पड़ती।

"आज भी यदि ब्रिटिश पार्लामेण्ट भारतवर्ष के शासन का पक्का निश्चय कर ले, तो कुछ ही समय में यह सारी गड़बड़ शान्त हो जाएगी। अब हमारी स्थिति क्या है? सम्राट के वचन अटल हैं। हमने भारतवासियों को धीरे-धीरे भारतवर्ष का शासन उनके हाथों में सौंपने का वचन दिया है। सन् १९२० का एक्ट एक ऐसी चट्टान है, जिसको उखाड़ कर फेंका नहीं जा सकता। उस एक्ट के अनुसार हमने कई अधिकार भारतवासियों को दिए हैं। ब्रिटिश साम्राज्य में रह कर उन्नति करने में भारतवर्ष के लिए कोई बाधा नहीं। परन्तु उसी एक्ट के अनुसार हमारा अधिकार है, जब चाहें अधिकार दे दें, जब चाहें छीन लें। भारत को इङ्गलैण्ड ने अपने बाहुबल से जीता है, और उसका भारतवर्ष के साथ केवल एक ही सम्बन्ध है, जो कि मैंने आपको बताया है। मि० मॉण्टेगू ने भारतवर्ष को जो अधिकार दिए थे वही काफ़ी से अधिक थे। उन अधिकारों का दुरुपयोग किया गया । पिछले दस वर्ष का इतिहास भारतवर्ष की अवनति का इतिहास है।

"हम भारतवर्ष के भाग्य के विधाता हैं, और हमारे इस अधिकार को कोई छीन नहीं सकता। हम भारतवासियों को भारत-शासन-पद्धति में दीक्षा देने का वचन दे चुके हैं। परन्तु जब तक पार्लामेण्ट सच्चे मन से उद्देश्य-पूर्ति का प्रयत्न करती है, उसको सर्वाधिकार प्राप्त हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं कि हमने जो भारतवर्ष के लिए शासन-पद्धति गढ़ने के प्रयत्न किए हैं, वे सब भ्रान्तिपूर्ण हैं। यह हमारा कर्तव्य भले ही हो, कि हम भारतवर्ष को थोड़े से अधिकार दे दें, परन्तु पाश्चात्य विचारानुसार जो हवाई क़िले बनाए जा रहे हैं, वह सर्वथा झूठ हैं।

"यहाँ पर मैं आपको एक चेतावनी देना चाहता हूँ। भारतवर्ष के स्त्री-पुरुष जो आज गोलमेज़ परिषद के लिए इकट्ठे हुए हैं, भारतवर्ष के किसी भी प्रकार प्रतिनिधि नहीं माने जा सकते। यह सच है कि लहर की लपेट में आकर उनमें से कुछ लोग गर्म दल वालों की माँगें पेश कर रहे हैं, परन्तु इनमें से किसी को भी कॉङ्ग्रेस की ओर से वचन देने का अधिकार नहीं है। हमारी साम्यवादी सरकार ने यदि समझौता करने के लिए भारतवासियों को अधिकार देने का वचन दे दिया तो भविष्य में भारत की क्रान्तिकारी शक्तियाँ और भी प्रबल हो उठेंगी। क्रान्तिकारी शक्तियों के प्रबल होने पर हमारे वफ़ादार लोग भी विमुख हो जायँगे। सच तो यह है, गाँधीवाद और इसकी माँगों को एक बार ही जड़ से उखाड़ फेंकना चाहिए। शेर को बिल्ली का गोश्त देकर बेवक़ूफ़ नहीं बनाया जा सकता। जितना शीघ्र इस बात का अनुभव कर लिया जाएगा, उतना कम उत्पात का भय रहेगा।

"सब से बड़ी बात यह है, कि यह खोल कर बता दिया जाए कि ब्रिटिश सरकार भारत के सर्व-साधारण के हितार्थ अपने अधिकारों का दिवाला नहीं बोलना चाहती। हम उस अमूल्य हीरे को, जिसके सहारे ब्रिटिश साम्राज्य का बल है, शान है, मान है, उखाड़ कर फेंकना नहीं चाहते। भारतवर्ष का अलग होना ब्रिटिश साम्राज्य का अन्त है। उसके सम्बन्ध विच्छेद से यह विशाल साम्राज्य धूल में मिलकर केवल इतिहास के पृष्ठों में रह जाएगा। इस भयङ्कर स्थिति से फिर कोई बचाव न रहेगा।"

* * *

रजिस्टर्ड

स्वदेशी कैमरा

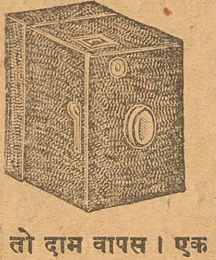

असली लेन्स लगे होने के कारण हमारा कैमरा बड़ी आसानी से प्लेट पर स्त्री, पुरुष, बालक, चाहे जिस चीज़ की ३॥×२॥ इञ्च साइज़ की साफ़ और सुन्दर तस्वीर खींचता है। बढ़िया फ़ोटो न खिंचे तो दाम वापस। एक प्लेट, काग़ज़, मसाला और हिन्दी में तरकीब साथ है। मूल्य २॥) रु०; डाक-ख़र्च ॥)

पता—दीन ब्रादर्स, नं० ४, अलीगढ़

अग्रवाल भाई पढ़ें

एक अच्छे घराने की गुणवती कन्या के लिए, जिसकी आयु १४ से ऊपर है, गोत्र गर्ग है, वर की शीघ्र दरकार है, जो तन्दुरुस्त, सदाचारी, हैसियतदार व सुशिक्षित हो, उम्र १८ से २४ साल के भीतर। विशेष बातें पत्र-व्यवहार से तै करें।

पता :—अग्रवाल-समिति,
D. बलदेव बिल्डिङ्ग झाँसी JHANSI.

जाड़े की बहार नारसिंह मोदक

जो लोग जाड़े के दिनों में ताक़त के लड्डू खाने के शौकीन तथा इच्छुक हैं, उन्हीं के आग्रह से यह मोदक बहुत ही स्वच्छतापूर्वक, शास्त्रीय विधि से तैयार कराए हैं। यह मोदक ताक़त के सभी मोदकों से श्रेष्ठ है। इसमें विशेषता यह है कि और ताक़त की दवाओं की तरह यह क़ब्ज़ियत नहीं करता; परन्तु इससे दस्त साफ़ होता है और पाचन शक्ति बढ़ती तथा भूख खुल कर लगती है। बल-वीर्य, रक्त और सुन्दरता को बढ़ाता है। शरीर हृष्ट-पुष्ट हो जाता है।

१५ लड्डुओं के १ बक्स की क़ीमत १); डा० म० अलग

पता—चन्द्रसेन जैन, वैद्य—इटावा

शीतकाल में सेवन करने योग्य दुर्लभ अमीरी वस्तु

कस्तूरी-अवलेह और बादाम-पाक

राजाओं, रईसों और नाज़ुक-मिज़ाज महिलाओं के लिए ख़ास

(सर्वथा पवित्र और हानि-रहित) (अतिशय स्वादिष्ट और सुगन्धयुक्त)

नुस्ख़ा तजवीज़ करने वाले —

उत्तर भारत के प्रख्यात चिकित्सक आचार्य श्रीचतुरसेन शास्त्री महोदय

प्रधान अवयव

मोती, ज़हरमोहरा ख़ताई, माणिक्य, अक़ीक, पुखराज, (गुलाब-जल में पीसे हुए) अम्बर, कस्तूरी, चन्द्रोदय, मकरध्वज (सिद्ध), अभ्रक भस्म (सहस्रपुटी), स्वर्ण भस्म, केसर, बादाम, मिश्री (देशी) (अर्क़ बेदमुश्क में चाशनी), अन्य फुटकर दवाइयाँ।

गुण

यदि आरोग्य शरीर हो तो ४१ दिन नियम से सेवन कीजिए। खाने के १५ मिनिट बाद दवा का चमत्कार शरीर पर दीखने लगेगा। हृदय, मस्तिष्क और नेत्रों में हल्कापन और आनन्द (नशा नहीं) प्रतीत होगा। नसों में उत्तेजना होगी। रक्त की गति तेज़ हो जायगी। प्रतिक्षण कुछ खाने और कुछ करते रहने की इच्छा बनी रहेगी। घी, दूध, मेवा, मलाई बेतकल्लीफ़ पचेगी। साधारण भोजन के सिवा दिन भर में ४-५ सेर तक दूध पचेगा। यदि धैर्यपूर्वक ब्रह्मचर्य रक्खा जायगा तो मास में ४ से ६ पौण्ड तक वज़न बढ़ेगा। हिस्टीरिया, पुराना सिर-दर्द, नज़ला, बहुमूत्र और वृद्धावस्था की कफ, खाँसी की उत्कृष्ट महौषध है।

सेवन-विधि

प्रातःकाल २ रत्ती कस्तूरी-अवलेह डेढ़ पाव दूध में घोल कर, प्रथम १ तोला बादाम-पाक खाकर ऊपर से उस दूध को पी जाइए। और एक उम्दा पान खाकर ज़रा लेट जाइए। लगभग आधा घण्टा चुपचाप निश्चेष्ट पड़े रहिए। औषध-सेवन के बाद २-३ घण्टे तक जल न पीजिए। आवश्यकता हो तो गर्म दूध और पीजिए। जहाँ तक बने शरीर और दिमाग़ को ख़ूब आराम दीजिए। धीरे-धीरे मालिश कराइए। शरीर मानो केंचुली छोड़ देगा, ठोस कुन्दन की भाँति शरीर बन जायगा।

औषध-सेवन के ३ घण्टे बाद भोजन करना चाहिए। रात्रि को सोने के समय सिर्फ़ कस्तूरी-अवलेह २ रत्ती दूध में घोल कर पीना चाहिए।

जब तक औषध-सेवन जारी रहे, सब प्रकार की खटाई का त्याग करना चाहिए। फलों की खटाई हानिकर नहीं। घी, दूध, मेवा, मलाई, फल ख़ूब खाए—अन्न कम लेना उत्तम है।

मूल्य—बादाम-पाक ६०) सेर (१ सेर ८० तोला) १ पाव से कम नहीं भेजा जाता। कस्तूरी-अवलेह ६) तोला। ३ तोला १५); डाक-व्यय पृथक।

बनाने और बेचने का सर्वाधिकार प्राप्त

सञ्जीवन फ़ार्मेस्युटिकल वर्क्स, दिल्ली

अजी सम्पादक जी महाराज,

जय राम जी की !

क्षमा कीजिएगा, इस बार चिट्ठी भेजने में कुछ विलम्ब हो गया। इसका कारण मेरी सुस्ती या आलस्य नहीं है। बात यह थी कि मैं म्युनिसिपल-चुनाव की चपेट में आ गया था। यद्यपि इस बार मैंने यह निश्चय कर लिया था कि इस बला से बचा रहूँगा—न किसी का समर्थन करूँगा, न किसी का विरोध; परन्तु यार लोगों को यह कब सहन हो सकता था, वे ऐसे पन्जे झाड़ के पीछे पड़े कि पिण्ड छुड़ाना असम्भव हो गया। भाई, कहने को चुनाव जनता के वोट पर होता है; पर जनता सच्चे और शुद्ध हृदय से किसे वोट देती है, इसका पता लगाना घास के गट्ठे में से सूई ढूँढ़ निकालने के समान है। ओफ़ ओह ! कितनी धाँधली होती है, कितना अनुचित ढङ्ग अख़्तियार किया जाता है कि मैं बयान नहीं कर सकता। आपने राजनैतिक नेता, धार्मिक नेता इत्यादि का नाम तो सुना होगा, पर अब कुछ दिनों से १००८ वोटयुक्त (वोट-श्री) श्रीमान् चुनाव-नेता का प्रादुर्भाव हुआ है। यह चुनाव-नेता वे लोग हैं, जिनकी दाल राजनीति में नहीं गलती, जो अन्य किसी बात के नेता बनने की योग्यता नहीं रखते—या फिर जिन्हें केवल उन लोगों को चुनवाना होता है, जो उनके मित्र हैं और उनसे वादा करा लेते हैं कि वह अमुक पार्टी की नीति के अनुसार काम करेंगे। ऐसे नेताओं का नेतापन केवल चुनाव के समय में चमकता है। कुछ लोग ऐसे हैं, जो केवल इसलिए चुनाव-नेता बनने का प्रयत्न करते हैं, जिसमें उम्मीदवार उनकी ख़ुशामद करें—उनके यहाँ ज़रा चहल-पहल रहे—चार आदमी आते-जाते रहें। लोग समझें कि हाँ, यह भी कोई आदमी हैं। और क्या, यह ठाठ है। ये लोग ठेके पर चुनाव लड़ते हैं। कैसा ही उम्मीदवार हो, किसी भी योग्यता का हो—किसी चुनाव-नेता को ठेका मिल जाय, बस समझ लीजिए कि वह रुपए में बारह आने भर हो गया। कुछ लोग चुनाव के कार्य के विशेषज्ञ समझे जाते हैं और इस कार्य के लिए दूर-दूर तक बुलाए जाते हैं। इन लोगों ने चुनाव लड़ना भी एक कला बना रक्खा है। जी ! मामूली बात नहीं है। कुछ दिनों में कदाचित इस कला पर पुस्तकें भी लिख जायँ ! यद्यपि यह बात विशेषज्ञों के लिए कुछ हानिकारक होगी; क्योंकि उनके रहस्यों का उद्घाटन होगा।

अब ये विशेषज्ञ लोग किस प्रकार चुनाव लड़ते हैं, इसका भी कुछ वर्णन सुन लीजिए। यद्यपि मैं इन लोगों के पूरे हथकण्डे नहीं समझ पाया हूँ, परन्तु जहाँ तक मुझे ज्ञान प्राप्त हुआ है, उतना बताता हूँ। सब से पहले चुनाव-नेता की दृष्टि चेयरमैन के चुनाव पर जाती है। इस बार कौन चेयरमैन होना चाहिए। जिस व्यक्ति को वह अपने अथवा अपनी प्रिय पार्टी के अनुकूल समझते हैं, उसी को चेयरमैन बनाना स्थिर करते हैं। इसके पश्चात् इस बात का सिंहावलोकन होता है कि जितने उम्मीदवार खड़े होने वाले हैं, उनमें से कौन-कौन अमुक व्यक्ति की चेयरमैनी के पक्ष में वोट देगा। जो व्यक्ति पक्ष में होते हैं, उनको छोड़ कर और अन्य सब उम्मीदवार रद्दी कर दिए जाते हैं। इन रद्दी किए हुए उम्मीदवारों के विपक्ष में चुनाव-नेता ऐसा उम्मीदवार खड़ा करता है, जो उनके सोचे हुए चेयरमैन के पक्ष में वोट दे। यह उम्मीदवार किस योग्यता का है, इस बात की परवा कम की जाती है। योग्यता का कोई प्रश्न नहीं। क्योंकि योग्यताहीन व्यक्ति में भी चुनाव-नेता दो-चार योग्यताएँ ऐसी उत्पन्न कर देते हैं, जिनका जवाब चिराग़ लेकर ढूँढ़ने पर भी मिलना असम्भव हो जाता है। और अपने विपक्षी योग्य से योग्य व्यक्ति में भी दो-चार बातें ऐसी ढूँढ़ निकालते हैं कि उनसे अधिक बुरी बात की मिसाल ढूँढ़ निकालना टेढ़ी खीर हो जाती है। उम्मीदवार स्थिर हो जाने पर उनके पक्ष में जनता की सहानुभूति प्राप्त करने और विपक्षी उम्मीदवार के प्रति जनता के हृदय में विरोध-भाव उत्पन्न करने की चेष्टा की जाती है। इस कार्य में ही सारी कला अन्तर्हित है। पक्ष के उम्मीदवारों के समस्त पुण्य-कार्य ढूँढ़-ढूँढ़ कर निकाले जाते हैं और उन्हें जनता के सम्मुख रक्खा जाता है, और विपक्षी उम्मीदवार के सारी आयु के पापों की सूची तैयार की जाती है और उन्हें जनता के कानों तक पहुँचाया जाता है। ये बातें जैसी की तैसी नहीं, वरन् यथेष्ट वृहदाकार (Enlarged) बना कर रक्खी जाती हैं। इस प्रकार चुनाव, जनता का चुनाव नहीं, वरन् चुनाव-नेताओं का चुनाव बन जाता है। जनता बेचारी चुनाव-नेताओं के अनुसार कार्य करने पर मजबूर की जाती है। "All is fair in love and war" की अङ्गरेज़ी कहावत के अनुसार चुनाव-नेता कार्य करते हैं। झूठे वादे करना, सुबह जो कहा है, शाम को उसके प्रतिकूल हो जाना, किसी से कुछ कहना और किसी से कुछ, अन्त तक लोगों को भ्रम में डाले रहना, झूठा प्रचार करना, उम्मीदवारों को बदनाम करना, उम्मीदवारों के पक्ष अथवा विपक्ष में नाजायज़ दबाव डलवाना इत्यादि कोई ऐसा काम नहीं है, जो ये नेता लोग न करते हों। कोई वोटर श्याम को अच्छा आदमी समझता है और उसको वोट देना चाहता है, परन्तु चुनाव-नेता राम के पक्ष में हैं, तो उक्त वोटर को श्याम के पापों की गाथा सुनाई जाती है और राम के पुण्यों का हिसाब-किताब। यदि वोटर महाशय इससे राह पर आ गए तब तो ठीक, अन्यथा इस बात का पता लगाया जाता है कि उक्त वोटर पर किसका दबाव है। इस बात का पता लग जाने पर उस व्यक्ति को क़ाबू में लाकर उक्त वोटर पर दबाव डलवाया जाता है। इस प्रकार ऐसी स्थिति उत्पन्न कर दी जाती है कि चुनाव का दिन आने तक बेचारा वोटर अपनी सारी अक़ल और समझ खो बैठता है, उसे अपनी बुद्धि और समझ पर विश्वास नहीं रहता और वह चुनाव-नेता की नीति के अनुसार काम करने पर विवश हो जाता है। यदि कोई वोटर कहता है कि हम तो अमुक व्यक्ति को वोट देने का वादा कर चुके हैं, तो चुनाव-नेता या उनका कोई अनुचर उस वोटर को यह सुझाता है कि ऐसे वादे का पूरा करना आवश्यक नहीं है। चुनाव में वादों और वचनों का कोई मूल्य नहीं। यदि किसी के वचन या वादे का मूल्य है तो वह केवल चुनाव-नेता या उनके पक्ष वालों का। उनके वादे—यदि उनका पूरा करना ठीक समझा जाता है—पत्थर की लीक हैं। वे कैसे टाले जा सकते हैं। इसके अतिरिक्त यदि कोई वचन देता है तो वह उसी प्रकार मूल्यहीन है, जिस प्रकार कि एक बच्चे की बातें होती हैं।

किसी बात को उलट-पलट कर देना चुनाव-नेता के बाएँ हाथ का खेल है। कल शाम तक जो उम्मीदवार बड़ा अच्छा था, वह यदि चुनाव-नेता चाहता है, तो दूसरे दिन सुबह से ही बड़ा ख़राब आदमी बन जाता है !

कल तक जिसकी प्रशंसा के पुल बाँधे जाते थे, आज उसकी बुराइयों के खाते खोले जा रहे हैं। कल शाम तक जिसने समस्त आयु अच्छे ही अच्छे काम किए, आज उसने अपनी उम्र में एक भी शुभ कार्य नहीं किया। अथवा कल तक जो बड़ा ख़राब आदमी था, आज वह भलाई की मूर्ति हो जाता है। ये सब कार्य ज़बानी प्रचार-कार्य अथवा नोटिसों और पर्चों के द्वारा होते हैं। और आनन्द यह है कि गन्दी बातों से श्रीमान् नेता जी महाराज अलग रहते हैं। कल तक एक आदमी जिसकी प्रशंसा कर रहा था, वह चुप कर दिया जाता है और एक दूसरा आदमी खड़ा कर दिया जाता है, जो उस आदमी की बुराइयों का बखान करना आरम्भ कर देता है। जनता बेचारी कल तक जिसकी तारीफ़ें सुन रही थी, आज उसकी बुराइयाँ सुन कर अपनी बुद्धि खो बैठती है। चुनाव की भाषा में इसका नाम हवा बाँधना और हवा बिगाड़ना है ! तारीफ़ें करके हवा बाँधना, बुराइयाँ करके हवा बिगाड़ना, यही इसका अर्थ है। जनता अधिकतर भेड़ियाधसान की प्रकृति की होती है। दस आदमी जिसे अच्छा कहने लगे उसे वह भी अच्छा समझने पर मजबूर होती है, और बुरा कहते हैं तो बुरा। इस कार्य के लिए ऐसे-ऐसे गन्दे और अश्लील नोटिस निकाले जाते हैं कि देख कर घृणा होती है। और तारीफ़ यह है कि चुनाव-नेता महोदय इस गन्दगी के मध्य में उसी प्रकार रहते हैं,

---

Prof. B. L. Atreya, M.A., D. Litt. of the Hindu University Benares writes :

Kindly excuse me for a little delay in expressing my thanks to you for the trouble you took in showing me the *Chand* Press and the *Matri Mandir*. My visit to Allahabad has really become sanctified by my pilgrimage, to these two places, from where I have brought a good deal of inspiration. In the person of Mr. Saigal I have discovered a really great man of both thought and action, whose name will go to the posterity as one of the builders of free India. Political freedom is only an external expression of intellectual, moral and religious freedom, to bring about which the CHAND has been striving so long. I wish I could partake in this *Mahayajna* which is being performed by you for awakening the soul of India which is even now dreaming the dreams of superstition, ignorance social injustice, slavery and persecution of the fair sex-dreams from which other nations have already freed themselves, I pray to the Almighty to give you more and more power to continue the work you have undertaken.

***

जिस प्रकार जल में कमल ! क्या मजाल जो उनकी ओर कोई उँगली उठा दे । यदि कोई कहता भी है कि अमुक नोटिस बड़ा गन्दा निकला तो नेता महाशय मुँह बना कर कहते हैं—"वाक़ई बड़ा गन्दा निकला । क्या करें, अमुक व्यक्ति यह सब कर रहा है, हमारे समझाने से मानता नहीं ।" चलिए, नेता महोदय तो दूध के धोए बन कर अलग हो गए । हालाँकि होता सब उन्हीं के इशारे पर है ।

वोट पड़ने के दिन भी इन नेताओं की कला देखने योग्य होती है । जिस व्यक्ति को मरे वर्ष भर हो चुका है, उसका वोट डलवा देना इनके बाएँ हाथ का खेल है । एक ही व्यक्ति से तीन-तीन, चार-चार बार वोट डलवा देना इनके लिए साधारण बात है । अपने ही किसी गुर्गे द्वारा विपक्षी के पक्ष में जाली वोट डलवा कर उसे पकड़वा देना और इस प्रकार विपक्षी को बदनाम कर देना अथवा चुनाव-भाषा में 'हवा बिगाड़ देना' इनकी कला का एक बहुत छोटा नमूना है । कहाँ तक कहूँ—इन लोगों की महिमा अपरम्पार है । यदि इनका खड़ा किया हुआ उम्मीदवार जीत गया तब तो उसका सारा श्रेय नेता साहब को मिलता है और जो हार गया तो कार्यकर्त्ताओं के मत्थे जाती है । अमुक ने अमुक कार्य नहीं किया, अमुक ने सुस्ती की, अमुक ने यह ग़लती की—इस प्रकार कह कर उस मामले को रफ़ा-दफ़ा कर दिया जाता है और नेता महाशय सर्वथा निर्दोष तथा निर्विकार सिद्ध हो जाते हैं । जीते हुए विपक्षी उम्मीदवार से नेता महाशय एकान्त में मिल कर कहते हैं—"भई, कुछ कारणों से मैं प्रकट में तुम्हारा विरोध करता रहा, पर भीतर से मैंने तुम्हारे लिए ही चेष्टा की ।" इस प्रकार से उसे भी उल्लू बना कर अपने पक्ष में करने का प्रयत्न किया जाता है । कोई हारे या कोई जीते, नेता महोदय की हर तरह चाँदी है । चित भी उन्हीं की और पट भी उन्हीं की । इन सब कार्यों में नेताओं की एक कौड़ी भी ख़र्च नहीं होती, उल्टे यदि वह चाहते हैं तो उनको और उनके अनुचरों को कुछ लाभ हो जाता है ।

लोग समझते हैं कि जनता ने चुना; परन्तु दरअसल वे चुने हुए होते हैं नेता महोदय के । जनता बेचारी मुफ़्त में बेवक़ूफ़ बना कर छोड़ दी जाती है ।

सम्पादक जी ! कहाँ तक लिखूँ । इन नेताओं के हथकण्डे लिखने में एक पुस्तक तैयार हो सकती है ।

भवदीय,
—विजयानन्द (दुबे जी)

* * *

मुफ़्त

जो सज्जन १० हिन्दी पढ़े-लिखे मनुष्यों के पूरे-पूरे पते मय उनके ग्राम, पोस्ट, ज़िले के लिख कर भेजेंगे, उनको अङ्गरेज़ों की गिल्ली-डण्डा नामक पुस्तक मय केलेण्डर के मुफ़्त भेजेंगे । ध्यान रहे, पते अलग-अलग स्थानों के हों ।

पता—श्री गङ्गा औषधालय, अलीगढ़

एक अचम्भित दृश्य

जादू की डिब्बी

इस डिब्बी के अन्दर सबके सामने रुपया डाल दो और इसको बन्द करके फिर खोलो तो रुपया ग़ायब हो जावेगा और फिर दुबारा बन्द करके डिब्बी खोलोगे तो रुपया मौजूद होगा । बड़ा आश्चर्यजनक दृश्य है । मूल्य १।), डाक-ख़र्च ।-)

पता—फ़ैन्सी जादूघर नं० ५,
मदार दरवाज़ा, अलीगढ़

रज-कण

[संग्रहकर्ता—श्री० काशीनाथ जी त्रिवेदी]

कीचड़ में पैदा होना एक आकस्मिक बात है, उसमें महत्ता भी नहीं, और लघुता भी नहीं । पर उसमें से कमल बनने में सच्ची ख़ूबी है ।

मनुष्य चाहे जो काम करे, राज़ का, कारीगर का या कलाकार का, पर जिस काम से उसके हृदय को आनन्द नहीं होता, वैसा प्रत्येक काम उसे मनुष्यत्व से नीचे गिराता है ।

❀

जो मनुष्य अपने बारे में कभी भी विचार नहीं करता, वह वर्षों ज़िन्दा रह कर भी कुछ नहीं करता ।

बहुतेरे मनुष्य सारा दिन काम करते हैं, बहुत उद्योगी होते हैं, पर उनका उद्योग आलस्य को दिखावटी सुन्दरता का रूप देने जैसा होता है । ऐसे उद्योग की अपेक्षा निरुद्योगी का एकान्त चिन्तन अधिक अच्छा । जिसे कुछ जानने की इच्छा हो, वह सब से पहले अपना जीवन देखे । सब प्रकार के ज्ञान का वहाँ से आरम्भ होता है ।

❀

An Appreciation

Sjt. Bhola Lal Das, B.A., LL.B., Laharia-Sarai, writes to say :

I have been watching all-along the whirlwind of political dangers which you and your press has been thrown into. It is also a great relief to me to learn that you have been facing all these troubles with an undaunted courage and perseverance . . . About BHAVISHYA, I should only say that it has really surpassed all the Indian weeklies and has rightly found its way into all the nooks and corners of the country. To tell you the truth, I find my own thoughts much below its high standard and hence I do not attempt to write further . . .

***

जिसने कभी परिस्थिति-विशेष में पड़ कर अपने नैतिक बल की आवश्यक जाँच नहीं की है, वह मनुष्य न नीतिमान है, न अनीतिमान; उसमें अनीति का न होना कोई सद्गुण नहीं; बल्कि अज्ञान का दुर्गुण है । जो नैतिक बल कसौटी पर कसा नहीं गया है, वह नैतिक बल नहीं, यन्त्र की-सी जड़ अवस्था है । यह कभी बचा लेता है, पर अकसर तो डुबाता ही है ।

❀

जो विशुद्ध आनन्द अपने को मिला है, उसे दूसरों के लिए भी सुलभ बना देना कलाकार का धर्म है ।

❀

यही सत्य है, दूसरा सत्य नहीं ; इस कथन में ही असत्य का अंश है ।

❀

स्वभाव से यह मानने वाला मनुष्य, कि मुझमें दोष नहीं हैं, चाहे जितना विद्वान क्यों न हो, अपढ़ ही है । जब कि अपना सिर्फ़ एक ही दोष देख कर उसे दूर करने का प्रयत्न करने वाला मनुष्य अपढ़ होते हुए भी विद्वान है ।

❀

जिस वाचन से विचार को प्रेरणा नहीं मिलती, और जो वाचन विचार या चिन्तन के लिए नहीं होता वह वाचन शराब, बीड़ी या तम्बाकू के व्यसन की भाँति निरुद्योगी का व्यसन है । बहुतेरे मनुष्यों को पढ़ने का व्यसन ही होता ।

❀

हृदय-दौर्बल्य से उत्पन्न सन्तोष मनुष्य को तृप्ति का आनन्द नहीं पहुँचाता, हाँ अज्ञानपूर्ण दारिद्र्य की ओर जड़तापूर्ण श्रद्धा अवश्य पैदा करता है । सन्तोष मनुष्य का परम मित्र है, पर इसके समान भयङ्कर शत्रु भी दूसरा कोई नहीं है ।

❀

जो मनुष्य संस्कारवान बनने का प्रयत्न कर रहा है, वही सच्ची विद्या का उपासक है ।

❀

कसौटी पर कसे जाने पर जो सौ टञ्च साबित हो वह संस्कार है । बहुतेरे मनुष्य पढ़े-लिखे प्रतीत होते हैं । कई विद्वत्ता को देश का साधन मानते हैं, कुछ के लिए यह यश-प्राप्ति का साधन है । आजीविका के लिए भी इसका उपयोग हो सकता है । पर अक्सर एक दस वर्ष का हाज़िर-जवाब बालक जितना संस्कारवान होता है उतना सौ वर्षों का अनुभवार्थी या विद्वान नहीं बन सकता । संस्कार के बीज के लिए कल्पना के क्षेत्र की, प्रेरणा के जल की और कठिनाइयों से पूर्ण मैदान की आवश्यकता होती है ।

❀

शक्य हो या अशक्य, पर जो सत्य है, वही ध्येय रहना चाहिए; अशक्यता की इन महान चट्टानों के साथ टकरा कर जो सत्य चकनाचूर हो जाता है, उसी से मनोरम सृष्टि की रचना होती है ।

❀

अशक्यता की चट्टान पर सत्य के लिए चकनाचूर हो जाना ही पुरुषार्थ है, जीवन है, मनुष्यत्व है ।

* * *

नवीन ! स्प्रिङ्ग वाला ! अद्भुत !

जेब का चरख़ा

यह हमने अभी तैयार किया है । समूचा लोहे का बना है । इससे स्त्री-पुरुष लड़के-लड़कियाँ बड़े शौक़ से सूत कात-कात कर ढेर लगा देते हैं । यह चलने में निहायत हलका और देखने में ख़ूबसूरत है । मू० १) डा० म० ।-)

पता—जी० एल० जैसवाल, अलीगढ़

एक नई ख़बर !

एक नई पुस्तक "हारमोनियम, तबला एण्ड बाँसुरी मास्टर" प्रकाशित हुई है । इसमें ७० नई-नई तर्ज़ों के गायनों के अलावा ११५ राग-रागिनी का वर्णन ख़ूब किया गया है । इससे बिना उस्ताद के हारमोनियम, तबला और बाँसुरी बजाना न आवे, तो मूल्य वापिस देने की गारण्टी है । पहिला संस्करण हाथों-हाथ बिक गया । दूसरी बार छप कर तैयार है । मूल्य १) डा० ख़र्च ।-)

पता—गर्ग ऐण्ड कम्पनी नं० ६, हाथरस

सर्वश्रेष्ठ राजनैतिक एवं सामाजिक (Socio-Political) पत्रिका

हिन्दी-संस्करण :
वार्षिक चन्दा ... ६॥) रु०
छः माही चन्दा ... ३॥) रु०
एक प्रति का मूल्य ॥=)

चाँद

उर्दू-संस्करण :
वार्षिक चन्दा ... ६॥) रु०
छः माही चन्दा ... ३॥) रु०
एक प्रति का मूल्य ॥=)

के ग्राहक बनिए

हिन्दी-संस्करण के सम्पादक :—श्री० रामरखसिंह सहगल, सम्पादक 'भविष्य'

उर्दू-संस्करण के सम्पादक :—मुन्शी कन्हैयालाल, एम० ए०, एल्-एल्० बी०

नवीन विशेषताएँ

(१) नवम्बर से 'चाँद' में सामाजिक सुधार सम्बन्धी लेखों के अतिरिक्त गम्भीर राजनीति का भी समावेश हो जाने से 'चाँद' में चार चाँद लग गए हैं।

(२) ख़ास मैकेनिकल कागज़ का प्रबन्ध हो जाने से लगभग प्रत्येक पृष्ठ पर एक चित्र दिया जाता है। इस प्रकार सैकड़ों चित्र आपको 'चाँद' में मिलेंगे।

(३) तिरङ्गा अथवा रङ्गीन चित्र एक के बजाय दो कर दिए गए हैं।

(४) चुटीले सामयिक कार्टूनों का भी विशेष प्रबन्ध किया गया है।

(५) इतना सब होते हुए भी—केवल प्रचार की दृष्टि से फ़ी कॉपी का मूल्य बारह आने से घटा कर दस आने, इसलिए कर दिया गया है, ताकि जो लोग एक मुश्त चन्दा देने में असमर्थ हों, वे हमारे एजेण्टों अथवा मेसर्स ए० एच० व्हीलर कम्पनी के विभिन्न बुक-स्टॉलों से प्रत्येक मास एक कॉपी ख़रीद कर लाभ उठा सकें।

कुछ चुनी हुई सम्मतियाँ

आज—इस पत्र ने निर्भयता और योग्यता के साथ समाज-सेवा किया है। 'चाँद' ने बहुत घाटा उठाया है। हमें आशा है, स्वतन्त्र विचार के पक्षपाती हिन्दू सज्जन यथाशक्ति उसकी सहायता करेंगे।

मारवाड़ी-अग्रवाल—पत्रिका में यह पढ़ कर हमें अत्यन्त वेदना हुई कि इस विद्वान युगल जोड़ी को अब तक लगभग ८,०००) का घाटा सहना पड़ा है। भारत में अब भी ऐसे-ऐसे देश-भक्त और समाज-सेवी धनी-मानी व्यक्ति हैं, जो चाहें तो इस देशोपकारी पत्रिका के सञ्चालकों का बोझ सहज ही में उतार सकते हैं। हम उनका ध्यान इस ओर आकर्षित करते हुए मारवाड़ी अग्रवाल के प्रत्येक पाठक से अनुरोध करते हैं कि वे 'चाँद' के ग्राहक स्वयं बनें तथा अपने इष्ट-मित्रों को बनाकर इसे आर्थिक कष्ट से मुक्त करें......।

आर्यमित्र—'चाँद' स्त्री-शिक्षा सम्बन्धी, हिन्दी का सुप्रसिद्ध मासिक पत्र है। चित्र और लेख सब भावपूर्ण रहते हैं। वे समाज के भीषण अत्याचार का दुर्दृश्य हृदय-पट पर अङ्कित कर देते हैं।

माधुरी—ऐसे सुसम्पादित और सुसञ्चालित पत्र को भी घाटा उठाना पड़ रहा है, यह बात हिन्दी भाषा-भाषियों के लिए लज्जाजनक है। स्त्री-शिक्षा के पक्षपाती हिन्दी-प्रेमियों से हमारा अनुरोध है कि वे अपनी माँ, बेटी-बहू और बहिनों के लिए 'चाँद' अवश्य ख़रीदें।

मतवाला—सरस्वती, मनोरमा और 'चाँद' के विशेषाङ्क इस समय हमारे सामने हैं। प्रयाग के इन तीनों मासिक पत्रों के विशेषाङ्क बड़े सुन्दर हुए हैं, सच पूछिए तो तीनों में पहिला नम्बर 'चाँद' का है। नाम भी प्यार के क़ाबिल, रूप भी वैसा ही; गुण भी उतना ही।

वर्तमान—प्रयाग के प्रियदर्शक सहयोगी 'चाँद' का गौरव और विमल छटा उत्तरोत्तर बढ़ रही है।

अर्जुन—सहयोगी 'चाँद' दिनोंदिन उन्नति कर रहा है। सहयोगी के रङ्ग-रूप ने "सरस्वती" और "माधुरी" के दिल में हलचल पैदा कर दी है; हमें हर्ष इस बात का है कि सहयोगी सुधार का पक्षपाती है और उन्नतिशील विचार को रखता है!

☞ 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

Registered No. A—2085

हास्यकला का चमत्कार ! हास्योपन्यासों का लकड़दादा !!

श्री० जी० पी० श्रीवास्तव
की
हास्यमयी लेखनी का अलौकिक चमत्कार !

लतखोरी लाल

छः खण्डों में

यह वही उपन्यास है, जिसके लिए हिन्दी-संसार मुद्दतों से छटपटा रहा था, जिसके कुछ अंश हिन्दी-पत्रों में निकलते ही अङ्गरेज़ी, गुजराती, उर्दू आदि भाषाओं में अनुवाद हो गए। क्योंकि इसके एक-एक शब्द में वह जादू भरा है कि एक तरफ़ हँसाते-हँसाते पेट में बल डालता है, तो दूसरी तरफ़ नौजवानी की मूर्खताओं और गुमराहियों की खिल्ली उड़ा कर उनसे बचने के लिए पाठकों को सचेत करता है। तारीफ़ है प्लाट-बन्धन की, कि कोई भी बात, जो नवयुवकों पर अपना बुरा प्रभाव डालती है, "श्रीवास्तव जी" के कटाक्ष से बचने नहीं पाई है। हँसी-हँसी में बुराइयों की सुन्दरता और सफ़ाई से धज्जियाँ उड़ा कर ज्ञान और सुधार की धारा बहा देना, कला की गोद में शिक्षा का छिपाए हुए ले चलना बस "श्रीवास्तव जी" ही की महत्वपूर्ण लेखनी का काम है। कहीं फ़ैशन और शान की छीछालेदर है, कहीं स्कूली बदकारियों पर फटकार है, कहीं वेश्यागमन का उपहास है। प्रकृति की अनोखी छटा निरखनी हो तो इसे पढ़िए, हास्य का आनन्द लूटना हो तो इसे पढ़िए, कला की बहार देखनी हो तो इसे पढ़िए, स्वाभाविकता और सरसता का मज़ा लेना हो तो इसे पढ़िए, बुराइयों से बचना हो तो इसे पढ़िए, गुप्त लीलाओं का रहस्य जानना हो तो इसे पढ़िए, उत्कण्ठा और कुतूहल के समुद्र में डूबना हो तो इसे पढ़िए, भावों पर मुग्ध होना हो तो इसे पढ़िए और ज्ञान पर चकित होना हो तो इसे पढ़िए। इससे बढ़ कर हास्यमय, कौतूहलपूर्ण, आश्चर्य-जनक, रोचक, स्वाभाविक और शिक्षाप्रद उपन्यास कहीं ढूँढ़ने से न मिलेगा। फ़ौरन ऑर्डर भेजिए, हज़ारों ही ऑर्डर रजिस्टर हो चुके हैं। जल्दी कीजिए, वरना बाद को पछताना होगा।

छहो खण्ड एक ही पुस्तक में; मूल्य ४) मात्र ! स्थायी ग्राहकों से ३)

मूल-लेखक—
महात्मा काउण्ट टॉल्सटॉय

पुनर्जीवन

अनुवादक—
प्रोफ़ेसर रुद्रनारायण जी
अग्रवाल, बी० ए०

यह रूस के महान् पुरुष काउण्ट लियो टॉल्सटॉय की अन्तिम कृति है। यह उन्हें सब से अधिक प्रिय थी। इसमें दिखाया गया है कि किस प्रकार कामान्ध पुरुष अपनी अल्प-काल की लिप्सा-शान्ति के लिए एक निर्दोष बालिका का जीवन नष्ट कर देता है; किस प्रकार पाप का उदय होने पर वह अपनी आश्रयदाता के घर से निकाली जाकर अन्य अनेक लुब्ध पुरुषों की वासना-तृप्ति का साधन बनती है; और किस प्रकार अन्त में वह वेश्यावृत्ति ग्रहण कर लेती है। फिर उसके ऊपर हत्या का झूठा अभियोग चलाया जाना, संयोगवश उसके प्रथम भ्रष्टकर्ता का भी जूररों में सम्मिलित होना, उसकी ऐसी अवस्था देख कर उसे अपने किए पर अनुताप होना, और उसका निश्चय करना कि चूँकि उसकी इस पतित दशा का एकमात्र वही उत्तरदायी है, इसलिए उसे उसका घोर प्रायश्चित भी करना चाहिए—सब एक-एक करके मनोहारी रूप से सामने आते हैं, और वह प्रायश्चित का कठोर निर्दय-स्वरूप, वह धार्मिक भावनाओं का प्रबल उद्रेक, वह निर्धनों के जीवन के साथ अपना जीवन मिला देने की उत्कट इच्छा, जो उसे साइबेरिया तक खींच कर ले गई थी। पढ़िए और अनुकम्पा के दो-चार आँसू बहाइए। इसमें दिखाया गया है कि उस समय रूस में त्याग के नाम पर किस प्रकार मनुष्य-जाति पर अत्याचार किया जाता था। छपाई-सफ़ाई दर्शनीय, सजिल्द पुस्तक का मूल्य लागत मात्र केवल ५) स्थायी ग्राहकों से ३॥)

व्यवस्थापक 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

Printed and Published by R. SAIGAL—(Editor), at the Fine Art Printing Cottage,
28, Edmonstone Road, Chandralok—Allahabad

This PDF you are browsing now is in a series of several scanned documents by the Centre for the Study of Developing Societies (CSDS), Delhi

CSDS gratefully acknowledges the enterprise of the following savants/institutions in making the digitzation possible:

Historian, Writer and Editor Priyamvad of Kanpur for the Hindi periodicals (Bhavishya, Chand, Madhuri)

Mr. Fuwad Khwaja for the Urdu weekly newspaper Sadaqat, edited by his grandfather and father.

Historian Shahid Amin for faciliating the donation.

British Library's Endangered Archives Programme (EAP-1435) for funding the project that involved rescue, scan, sharing and metadata creation.

ICAS-MP and India Habitat Centre for facilitating exhibitions.

Digital Upload by eGangotri Digital Preservation Trust.

CSDS
centre for the study of developing societies

BRITISH LIBRARY